भावना संदेश

अक्टूबर– 2016

भावना के 17 वें स्थापना दिवस 20 अगस्त 2016 को शिक्षा सहायता प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं की एक झलक

भावना प्रबंधकारिणी समिति

संरक्षक, निर्वाचित, मनोनीत एवं स्थाई पदाधिकारी

(पत्रांक : भावना/प–010/अ/404, दिनांक 31.03.2015 द्वारा पुनर्गठित)

संरक्षक एवं विशिष्ट सदस्य

1–राकेश कुमार मित्तल, **I.A.S.**
प्रमुख सचिव (से.नि.) उ.प्र. शासन
मुख्य संयोजक कबीर शांति मिशन
फोन : 0522–2309147/2307164/9415015859
e-mail : rakesh_mittal_2000@yahoo.com

2–श्री अजय प्रकाश वर्मा, **I.A.S.**
मुख्य सचिव, (से.नि.), उ.प्र. सरकार
फोन : 0522–2395195/09415402554

3–श्रीमती सुनन्दा प्रसाद, I.A.S. (से.नि.)
पूर्व अध्यक्ष, राजस्व परिषद, उ.प्र.। फोन : 09839211040
e-mail : prasad_sunanda@hotmail.com

4–चंद्र प्रकाश श्रीवास्तव
मुख्य आयुक्त (से.नि.), कस्टम, से.एक्स.स. टैक्स
फोन : 0522–4073682/07754058564
e-mail : cps2806@gmail.com

5–परामर्शी, विधि तथा RTI प्रकोष्ठ
न्यायमूर्ति कमलेश्वर नाथ
न्यायाधीश (से.नि.), उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
फोन : 0522–2789033/09415010746
e-mail : justicekn@gmail.com

6–न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी
न्यायाधीश (से.नि.), उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
अध्यक्ष, उच्च जाति आयोग, बिहार
फोन : 0522–2302591/09415152086

7–न्यायमूर्ति सुधीर चन्द्र वर्मा
न्यायाधीश (से.नि.), उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
पूर्व लोकायुक्त, उ.प्र. फोन : 09415419439

8– न्यायमूर्ति करण लाल शर्मा
न्यायाधीश (से.नि.), उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
फोन : 0522–2997299/2398857/09415560824
e-mail : sunil.sharma.lko@gmail.com

9–न्यायमूर्ति ईश्वर सहाय माथुर
न्यायाधीश (से.नि.), उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
फोन : 0522–2330037/09335299719
e-mail : ishwarmathur@hotmail.com

10– न्यायमूर्ति घनश्याम दास अग्रवाल
पूर्व अध्यक्ष, नेश.इन्ड.ट्रिब्युनल, मुम्बई
न्यायाधीश (से.नि.), उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
फोन : 0522–2309327

11– पद्मश्री प्रो. महेन्द्र सिंह सोढा
पूर्व कुलपति, इन्दौर, लखनऊ तथा भोपाल विश्वविद्यालय,
फोन : 0522–2788033,
e-mail : msodha@rediffmail.com

12– डॉ. जगदीश गाँधी
संस्थापक/प्रबंधक, सिटी मोन्टे. स्कूल्स, लखनऊ
फोन : 09415015030
e-mail : info@cmseducation.org

13– ज्ञानेन्द्र कुमार खरे
अध्यक्ष (से.नि.), रेलवे बोर्ड, भारत
फोन : 0532–2624020/09335157680
e-mail : kharegk.ald@gmail.com

14– ओम् नारायण
निदेशक (से.नि.), कोषागार, उ.प्र.
फोन : 0522–3059195/09415515647
e-mail : omnarayan@hotmail.com

संरक्षक एवं संस्थापक सदस्य

कोमल प्रसाद वार्ष्णेय
प्रमुख अभि. (से.नि.), लो.नि.वि., उ.प्र.
फोन : 0522–2321680/09415736256

संस्थापक सदस्य

1– अशोक कुमार मिश्र
मुख्य अभियन्ता (से.नि.), भारतीय रेल सेवा
फोन : 0522–2782136/2782137

2– कृष्ण देव कालिया
अधि.अभि. (से.नि.), उ.प्र. रा.वि.परिषद
फोन : 0522–2309245/09956287868

3– डा. हरीश चन्द्रा, विभागाध्यक्ष (से.नि.)
यूरोलॉजी विभाग, के.जी.एम.यू.
फोन : 0522–4048658/09415010610

शेष कवर पृष्ठ 3 पर

4- हरिवंश कुमार तिवारी
मुख्य अभि. (से.नि.), लो.नि.वि., उ.प्र.
फोनः 09130018530
e-mail : harivanshsavitri@gmail.com

प्रबंधकारिणी समिति

1-अध्यक्ष एवं सस्थापक सदस्य
विनोद कुमार शुक्ल (वि.स.)
मुख्य महाप्रबन्धक (से.नि.), उ.प्र. पावर कॉर्पो. लि.,
फोन : 0522-4016048/09335902137,
e-mail : vk_shukla@hotmail.com

2-वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं संस्थापक सदस्य
सुशील शंकर सक्सेना (वि.स.)
अधी.अभि. (से.नि.), सिचांई विभाग, उ.प्र.
फोन : 0522-2350763/09415104198
e-mail : sushilshanker2003@yahoo.com

3-उपाध्यक्ष एवं सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
अरविंद कुमार गोयल (वि.स.)
उप-महाप्रबन्धक (से.नि.), उ.प्र. पावर कार्पो. लि.
फोन : 0522-2338900/09415470638
e-mail : arvindasha68@gmail.com

4-प्रमुख महासचिव
राम लाल गुप्ता (वि.स.) उप कृषि निदेशक (से.नि.), उ.प्र.
फोन : 0522-2392341/09335231118
e-mail : guptarlguptalko67@gmail.com

5-महासचिव (प्रशासन), सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
जगत बिहारी अग्रवाल (वि.स.)
वरिष्ठ अधि.अभि. (से.नि.), उ.प्र. जल निगम,
फोन : 0522-3245636/09450111425
e-mail : jagatagarwal2@gmail.com

6-महासचिव (कार्यान्वयन), सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-प्रभारी आई.आई.एम. रोड, सीतापुर रोड, त्रिवेणी नगर
योगेन्द्र प्रताप सिंह, जिला उद्यान अधिकारी (से.नि.), उ.प्र.
फोनः 09412417108
e-mail : yogendraprataplko1950@gmail.com

7-महासचिव (एडवोकेसी)
अशोक कुमार मल्होत्रा, चीफ मैनेजर (से.नि.), एच.ए.एल.
फोन : 0522-2357738/09451133617
e-mail : akmalhotra123@rediffmail.com

8-उप-महासचिव सम्बद्ध प्रमुख महासचिव
संयोजक, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ
रमा कान्त पाण्डेय (वि.स.)
अपर सचिव (से.नि.), उ.प्र. पावर कॉर्पो. लि.
फोनः 0522-2355973/09839395439/09415584568
e-mail : aark_p@rediffmail.com

शेष पृष्ठ– 53 पर

कारगिल विजय दिवस - सम्मानित शहीद एवं वीर सैनिक
भारत की शान हैं हम

लेफ्टिनेंट हरी सिंह बिष्ट

कर्नल अजीत सिंह

ले. कर्नल दीपक तिवारी

लांस नायक राम प्रसाद यादव

मेजर समीरुल इस्लाम

ले. कर्नल अजीत सिंह

कैप्टन अरविंद विक्रम सिंह

मेजर कमल कालिया

भावना के सभी सदस्यों को स्वतंत्रता दिवस की बधाईयाँ

आइये! हम सब भारतीय बनें। साम्प्रदायिकता, जातीयता, प्रान्तीयता को भूलकर केवल मानवीयता अपनायें।

News Update

1. 5th Annual Conference of "Commercial Tax Retd. Officers Association was commenced on 25 September, 2016 at Rai Uma Nath Auditorium, Qaiserbagh, Lucknow.
2. **National Seminar of "Life Long Learning-Advantage Old Age"** Focus-Rural India. International Older Persons Day Oct 1 & 2, 2016. Jointly organized by : Chinmaya Seva Trust, REWA APS University, Department of Life long, Learning , Distant Education and Dept. of Vedant. Contact Person : Dr. Sajjan Singh, Managing Trustee, Chinmaya Sewa Trust, Shiva Kutir, Ravindra Nagar, Rewa. E-mail : drsajjansingh@gmail.com Mob. : +91 9425185661
3. **International Elders Day** Function on 1st Oct 2016-Being Organised by Help Age India, Lucknow
4. An Entertainment Programme for Elders By Elders - on International Elders Day on 1st Oct 2016. Being Organised by Vikalp Resorts, Jhusi Allahabad. Contact Dr. P.K. Sinha-M. 9415214503
5. **AISCCON** National Conference of Senior Citizens Conference at TIRUPATI on 23 & 24 Nov. 2016. Delegate fee : Upto 30 Semptember : Rs. 1500/- Distinguished Delegate fees : Rs. 2000/- From 1st October : Rs. 1800/- Distinguished Delegate fee Rs. 2500/-
Room Tariff : Per person per night : Dormitory : Rs. 350/- 3 or more persons in one room/hall Non-AC Room : Rs. 500/- AC Room : Rs. 800/- On twin sharing basis.
Regn for conference & Accommodation & Payment etc can be done online also by logging on to www.aisccon.org **Contact : Mr. S.D. Tewari. M. 9005601992, Mr. S.C. Vidyarthi. M. 9415151323, A.K. Malhotra,** General Secretary (Bhavana)
6. Sri Virendra Bahadur Singh, Sachiv, Legal Cell (Bhavana) was elected as Vice President of All India State Pensioners Federation on 12th June 2016 (Congratulations)
7. ISU3A - AGM & Seminar is expected to commence on 13.11.2016 at Rai Uma Nath Bali Auditorium, Lucknow. This seminar will be hosted by BHAVANA.

फोटो वांछित

भावना की वर्तमान प्रबंधकारिणी समिति का गठन २५.०३.१६ को हुआ था। पदेन विशिष्ट सदस्यों को छोड़कर,निर्वाचित व मनोनीत पदाधिकारियों में से ८० व्यक्तियों के फोटो भावना संदेश के अप्रेल-१६ अंक में छापे जा चुके है। कुछ फोटो बाद में उपलब्ध हुए हैं जो नीचे प्रकाशित किए जा रहे हैं।

श्री उदयभान पाण्डेय
सदस्य- सांस्कृतिक एवं संसाधन

श्री आदित्य प्रकाश सिंह
सह-कोषाध्यक्ष

श्री रामानन्द मिश्रा
सदस्य-सहयोग एवं सेवा

श्री सुशील कुमार शर्मा
सदस्य-सांस्कृति, सहयोग एवं सेवा

डॉ. अंजली गुप्ता
सदस्य-प्रशिक्षण एवं गोष्ठियां

उक्त फोटो के अलावा निम्नलिखित पदाधिकारियों के फोटोग्राफ अभी तक उपलब्ध नहीं हैं।

श्री अजय प्रकाश वर्मा, IAS संरक्षक, पद्मश्री महेन्द्र सिंह सोढ़ा संरक्षक, श्री अशोक कुमार मिश्र, श्री हरिवंश कुमार तिवारी, एवं डा. हरीशचन्द्र (तीनों संस्थापक सदस्य), डा.श्रीराम सिंह एवं श्री प्रदीप कुमार गोयल (दोनों डे-सेन्टर प्रकोष्ठ), श्री रमेश प्रसाद जायसवाल, (ग्राम्यांचल एवं निर्धनजन सेवा प्रकोष्ठ), श्री रामबाबू गंगवार(पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ), श्री नरेन्द्र कुमार मित्तल (भावना रसोई प्रबंधन प्रकोष्ठ), श्री राजेन्द्र कुमार चुघ एवं श्री आनन्द कुमार (दोनों सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ), श्री सुभाषमणि तिवारी (प्रशिक्षण एवं गोष्ठियाँ प्रकोष्ठ),श्री उदयनारायण सिंह एवं श्री देवीदयाल गुप्ता (दोनों सोनभद्र शाखा), श्री कमलाशंकर अवस्थी एवं श्री शिवशंकर प्रसाद शुक्ल (दोनों उन्नाव शाखा), श्रीमती रेखा मित्तल (महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ)।

कृपया अपने फोटो हार्डकापी में श्री अमरनाथ, ४०१-ए, उदयन-१, बंगला बाजार, लखनऊ(२२६००२) अथवा
ई-मेल द्वारा creativesheebu@gmail.com पर विलम्बतम ३० नवम्बर -२०१६ तक भिजवाने का कष्ट करें।।

स्व. धर्मवीर सिंह

उदय : २.१०.१९४१
अवसान : ३१.८.२०१६

श्री धर्मवीर सिंह

बुझ गया वह नक्षत्र प्रकाश, चमकती जिसमें मेरी आश (सुश्री महादेवी वर्मा)

अमर नाथ सम्पादक- भावना संदेश

उ.प्र. के पश्चिमी क्षेत्र के मुजफ्फरनगर जिले की पूर्व तहसील किन्तु वर्तमान जिला, शामली के ग्राम जमालपुर नंगली के जाट परिवार के 'मलिक' वंश में श्री कदम सिंह जी एवं श्रीमती परसन्दी देवी की सन्तान के रूप में ०२ अक्तूबर १९४१ को श्री धर्मवीर सिंह जी ने जन्म लिया। संयोग ही कहा जाए कि इस पवित्र तिथि पर ही राष्ट्रपिता गांधी जी और हमारे पूर्व प्रधान मंत्री स्व.लाल बहादुर शास्त्री जी ने भी जन्म लिया था। श्री सिंह जी बचपन से ही मेधावी एवं कुशाग्र बुद्धि के थे। इन्टरमीडियेट शामली से उत्तीर्ण करने के बाद आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से१९६३ में बी-टेक की उपाधि ग्रहण की और कुछ समय पश्चात ही उ.प्र.राज्य विद्युत परिषद में सहायक अभियंता पद से अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ की। इस जीवनयात्रा में साथ चलने के लिए सुन्दर, कुशल, मेधावी जीवन संगिनी के रूप में श्यामबाला जी ने १९६३ की ३०वीं दिसम्बर को आपका हाथ थामा। बाद में आपको फूल सी खूबसूरत तीन सन्तानें भी उपहार में दीं। दीपक, शिखा एवं मीना। ये तीनों सन्तानें अपने जनक-जननी के गुणों से लबरेज़ थी। दीपक जी आगे चलकर डॉ. दीपक सिंह के रूप में विख्यात ENT सर्जन बने और शिखासिंह जी एक नेत्र-सर्जन की कुशल पत्नी के साथ ही ख्याति प्राप्त कवियत्री के रूप में उभरीं। शिखासिंह जी की २०१६ में ही कविताओं की एक पुस्तक सबसे पुराने बक्से से प्रकाशित हुई है। श्रीमती श्यामबाला जी एक विदुषी महिला है और **भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति की महिला सशक्ति करण प्रकोष्ठ** की सम्मानित सदस्य हैं। वे प्रायः नारी समस्याओं पर लेख भी लिखती रहती हैं।

श्री धर्मवीर सिंह ने लखनऊ विश्वविद्यालय से १९८२ में एल.एल.बी. की डिग्री भी प्राप्त की। अध्यात्म, सत्संग और नैतिक शिक्षा की त्रिवेणी उनके शरीर में सर्वदा बहती रहती थी। उ.प्र.रा.वि.परिषद से मुख्य अभियंता पद से वर्ष १९९९ में सेवानिवृत्त होकर वे पूरी तरह आध्यात्मिक लेखन की ओर मुड़ गए। उनकी कलम उक्त तीनों बिन्दुओं पर हमेशा दौड़ती रही, जिसके कारण उनकी तीन पुस्तकें उपहार, भावना के प्रसून तथा भावनांजलि क्रमशः वर्ष २००८, २०१० तथा २०१५ में भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति के बैनर तले प्रकाशित हुईं। भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति की कार्यप्रणाली और घोषित उद्देश्यों से प्रेरित होकर उन्होंने इस संस्था की २५ सितम्बर २००० को सपत्नीक सदस्यता ग्रहण करके स्वयं को इस संस्था के कार्यार्थ पूरी तरह से समर्पित कर दिया था। अक्तूबर २००६ के भावनासंदेश के सम्पादन से आप भावना के सदस्यों से सीधे सम्पर्क में आए, और जीवन काल के अन्तिम क्षणों तक आप भावनासंदेश के सम्पादन क्षेत्र से प्रधान सम्पादक के रूप में संलग्न रहे। आपके प्रधान सम्पादक के रूप में भावनासंदेश का अक्तूबर २०१६ अंक (वर्तमान अंक जो आपके हाथ में है) अपने प्रकाशन के अन्तिम चरण में ही था कि काल के क्रूर हाथों ने उन्हें हमसे छीन लिया। यह संयोग ही कहा जाए या कुछ और कि वे भावनासंदेश के सम्पादक के रूप में अक्तूबर २००६ अंक से प्रकट हुए और अक्तूबर २०१६ अंक से जुदा और मेरा भी सम्पादक के रूप में उनसे अक्तूबर २०१० अंक से ही सम्पर्क हुआ। अल्पकाल

में ही यह घनिष्ठता, प्रगाढ़ता और पारिवारिक सम्बंधों में बदल गई। उन्होंने सम्पादन का कार्य लगभग पूरी तरह मेरे ऊपर छोड़ दिया था। वे या तो सम्पादकीय लिखते थे, या किसी व्यक्ति का साक्षात्कार लेना हो तो उससे समय निर्धारण कर, मेरे साथ चलकर उसका साक्षात्कार लेते थे। मैं उनसे एक काम और लेता था। भावना संदेश के प्रकाशन हेतु वांछित सामग्री प्राप्त करने में अगर किसी स्तर से विलम्ब होता मुझे नजर आता था तो मैं उन्हें पकड़ता था। वे तत्काल सम्बन्धित पदाधिकारी को खटखटा कर मुझे वांछित सामग्री उपलब्ध कराते थे। पत्रिका का सामयिक वितरण भी वे देखते थे। बीचबीच में हम दोनों सम्बन्धित अंक पर एक साथ विचार विमर्श भी करते थे।

विनम्रता, शालीनता और मृदुलता उनमें कूटकूट भरी हुई थी। केवल एक बार को छोड़कर मैंने उन्हें कभी क्रोधित होते हुए नहीं देखा। भावना की प्रबंधकारिणी समिति की एक बैठक में भावना संदेश के एक अंक में शिक्षा सहायता योजना प्रकोष्ठ की एक अपील छपी थी जो विगत अंकों से छपती चली आ रही थी। चूँकि नया शिक्षासत्र प्रारम्भ हो चुका था तो उस अपील को अद्यतन आँकड़ों के साथ छापा जाना चाहिए था। लेकिन अद्यतन आँकड़ों के साथ सम्बन्धित प्रकोष्ठ द्वारा नई अपील जारी ही नहीं की गई थी अतः पुरानी अपील ही यथावत छप गई। भावना के एक जागरूक सदस्य द्वारा इस कमी की ओर समिति का ध्यान आकर्षित करते हुए, उनका और मेरा नाम व्यक्तिगत रूप से लेकर आलोचना कर डाली गई। यही वह क्षण था जब श्री सिंह पूरी तरह आक्रोश में आए थे। मेरा उनका छह वर्ष से भी अधिक सीधा सम्पर्क रहा लेकिन उक्त घटना को छोड़कर मैंने उन्हें हमेशा मुस्कराते हुए देखा। जब भी मैंने उनसे किसी बात को कहा यथाशक्ति, यथाशीघ्र उसे पूरा ही किया। वे मुझ पर इतना अधिक विश्वास करते थे कि भावनांजलि के प्रकाशन के पूर्व उन्हें बिखरे पन्नों के रूप में मुझे देते हुए बोले कि अमर नाथ जी (वे मेरे नाम के आगे हमेशा 'जी' जरूर लगाते थे) इसे आप अपने हिसाब से सही करते हुए, इसका संपादन करो और छपवा दो। और जब वह छपकर सामने आई तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। बोले- **आपने तो इस लोहे को सोना बना दिया।** ऐसी थी उनकी विशाल हृदयता। समाज सेवा की भावना उनमें लहरें मारती रहतीं थी। उनके सम्पादकीय प्रायः चैरिटी, नैतिकता तथा परमार्थ भावना पर ही आधारित होते थे। समाज की विभिन्न रूपों में सेवा करने के उद्देश्य से ही उन्होंने जनवरी २०१६ में अपने पैतृक ग्राम जमालपुर नंगली में अपने पितामह के नाम पर **श्री तारीफ सिंह धर्मार्थट्रस्ट** की स्थापना भी की थी और उसके लिए वे एक एम्बूलेंस जुटाने की तैयारी में थे। उस ट्रस्ट को भी उन्होंने भावना से सम्बद्ध कर दिया था। परहितसेवा, परदुखकातर, परमार्थ भावना से ओतप्रोत यह अजीम-ओ-शान हस्ती अचानक ३१ अगस्त २०१६ को हमें, हमारे हाल पर छोड़कर, भगवान से नया आदेश प्राप्त करने चली गई। ०१ सितम्बर २०१६ को उनकी पंचतात्विक देह को अलग अलग सम्बन्धित तत्व में विलीन कराने हेतु अग्नि को समर्पित कर दिया गया। ०३ सितम्बर को उनकी आत्मा की शान्ति हेतु लखनऊ के लालबाग स्थित हरिओम मन्दिर में शान्ति पाठ कराया गया तथा १२ सितम्बर को उनके पैतृक निवासस्थान जमालपुर नंगली में त्रयोदशी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। काफी समय से वे ४/४४० विकास नगर लखनऊ में अवस्थापित थे जहाँ पर उन्होंने अन्तिम साँस ली। अब इस मकान में उनकी यादें, उनका साहित्य, उनके विचार, उनकी जीवन-संगिनी के साथ उनके पुत्र डॉ.दीपकसिंह, पुत्रवधु श्रीमती रीनासिंह, पौत्र देवांश मलिक, पौत्री कोमल मलिक हैं जो उन्हें याद कर, अश्रु-अंजलि अर्पित करते रहते हैं। श्री सिंह तो चले गए लेकिन भावना परिवार को दुख की चादर में लपेट गए। भावना का प्रत्येक सदस्य आज रो रहा है। सुश्री महादेवी वर्मा जी के शब्दों में-

आँखों की नीरव भिक्षा में, आँसू के मिटते दागों में,
ओठों की हँसती पीड़ा में, आहों के बिखरे त्यागों में,
उसकी खोयी सी चाहों में, घुटकर मूक हुई आहों में
उसकी सिहरायी कम्पन में, कन कन में बिखरा है निर्मम
मेरे मानस का सूनापन।

स्व0 धर्मवीर सिंह जी का जीवन दर्शन

न कामयेऽहं गतिमीश्वरात्परामष्टर्द्धियुक्तामपुनर्भवं वा।
आर्तिप्रपद्येऽखिलदेहभाजामन्तःस्थितो येन भवन्त्यदुःखाः।
(श्रीमद्भागवत-9/21/12)

मैं परमात्मा से अणिमा आदि आठ सिद्धियों से युक्त उत्तमगति या मुक्ति नहीं चाहता। मैं केवल यही चाहता हूँ कि मैं ही सब प्राणियों के अन्तःकरण में स्थित होकर उनका दुःख भोग करूँ, जिससे वे लोग दुख रहित हो जायें।

आदमी तन से नहीं, मन से थकता है, और मेरा दिमाग कभी नहीं थकता, इसीलिए मैं कभी नहीं थकता।
- धर्म वीर सिंह

स्वर्गीय धर्मवीर सिंह – मेरी स्मृति में

धर्मवीर सिंह जी से मेरा परिचय सन् 1963 से था। हमारे बीच अंतरंग पारिवारिक सम्बंध रहे। हम लोग एक ही विभाग में समस्तरीय पदों पर तथा बहुधा एक ही स्थान पर कार्यरत रहे। इसलिए हमें एक दूसरे को निकट से देखने-परखने का मौका प्रायः मिलता रहा। सेवाकाल के दौरान धर्मवीर सिंह जी की प्रसिद्धि एक गम्भीर एकाकी प्रकृति के प्रखर स्पष्टवादी एवं सिद्धान्तप्रिय प्रशासनिक अधिकारी के रूप में रही थी। सन् 2002 तक मैं भी ऐसा ही मानता था। 39 वर्षों तक मैं उनके आस-पास रहने के बावजूद उन्हें पहचान न सका। बड़े जतन से उन्होंने अपनी वास्तविक प्रकृति को अपने सम्पूर्ण सेवा-काल में सबसे छिपाकर रखा था। कदाचित उन्होंने अपने सेवाकालीन दायित्वों के निष्ठापूर्ण निर्वहन के लिए ऐसा करना उचित समझा होगा।

धर्मवीर सिंह जी सितम्बर, 2000 में भावना के सदस्य बन गए थे। दो वर्ष बाद सन् 2002 में भावना- संदेश में प्रकाशन हेतु उनसे एक लेख प्राप्त हुआ था। पढ़कर सुखद आश्चर्य हुआ था। उसमें एक नए धर्मवीर सिंह के दर्शन हो रहे थे। वह लेख पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। पढ़ने वालों से उस लेख को भरपूर सराहना मिली थी। धर्मवीर सिंह जी का वह पहला प्रयास था। सराहना मिली तो हौसला बढ़ा। पत्रिका के हर अंक में उनका एक लेख प्रकाशित होने लगा। धर्मवीर सिंह जी का यह नया रूप विलक्षण था। उन्हें एक विचारक, एक सद्प्रेरक, एक समाज सुधारक के रूप में जाना जाने लगा।

भावना की प्रबंधकारिणी को भावना-संदेश के लिए एक अच्छे विचारशील सम्पादक की तलाश थी। धर्मवीर सिंह जी से इस हेतु अनुरोध किया गया तो उन्होंने विनम्रतापूर्वक यह कहकर इन्कार किया कि इस गुरुतर दायित्व को वहन करने की क्षमता उनमें नहीं है। बारम्बार आग्रह किए जाने पर उन्होंने इस दायित्व को स्वीकार कर लिया। सम्पादक के रूप में उनकी लेखनी ने चलना प्रारम्भ किया तो बस वह लगातार उनके जीवन के अंतिम क्षण तक चलती ही रही। उनके छोटे छोटे लेख ज्ञानवर्द्धक होने के साथ साथ प्रेरणादायी भी होते थे। पाठकों को उनके लेख बहुत पसंद आ रहे थे। फलस्वरूप भावना-संदेश की लोकप्रियता भी बढ़ती चली गई। लोगों ने धर्मवीर सिंह जी को परामर्श दिया कि वे अपने सभी प्रकाशित तथा अप्रकाशित लेखों का एक संग्रह प्रकाशित करें। उन्हें यह सलाह उचित लगी। फलतः उनका लेख-संग्रह, **उपहार**, अप्रैल 2008 में प्रकाशित हुआ। इसी क्रम में बाद में मार्च 2010 में उनका दूसरा संग्रह, **भावना के प्रसून**, तथा फरवरी 2015 में तीसरा संग्रह, **भावनांजलि**, भी प्रकाशित हुए। इन तीनों पुस्तकों को प्रकाशित करने तथा लोकार्पित करने का सौभाग्य भावना को ही प्राप्त हुआ था।

धर्मवीर सिंह जी जिला शामली (उ.प्र.) के अत्यंत पिछड़े ग्राम जमालपुर नंगली के निवासी थे। वे अपने ग्राम तथा ग्रामवासियों के विकास के लिए भी सतत् प्रयत्नशील रहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने पितामह की स्मृति में श्री तारीफ़ सिंह धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना की थी जिसके माध्यम से उन्होंने ग्राम में तमाम विकास कार्य करवाए।

धर्मवीर सिंह जी के निधन से भावना-परिवार में एक बड़ी रिक्तता महसूस की जा रही है। हम सभी मृत्युलोक के थलचर हैं। हम सभी की यही नियति है। किन्तु जब तक जीवन है तब तक हमें निरन्तर अपने दायित्वों का निर्वहन करना ही है, रीले-रेस की तरह। एक की दौड़ समाप्त होती है तो तुरंत दूसरे को बैटन लेकर दौड़ना ही होता है। धर्मवीर सिंह जी ने अपने अत्यंत योग्य एवं कुशल उत्तराधिकारी के रूप में श्री अमर नाथ का चयन पहले ही कर लिया था। मुझे पूरा विश्वास है कि श्री अमरनाथ द्वारा भावना-संदेश का सम्पादन एवं प्रकाशन उसी गुणवत्ता के साथ किया जाता रहेगा तथा मुझ सहित भावना की प्रबंधकारिणी के सभी सदस्यों द्वारा इस कार्य में श्री अमर नाथ को यथावांछित सहयोग भी दिया जाता रहेगा। यही दिवंगत धर्मवीर सिंह जी के प्रति हम सबकी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

विनोद कुमार शुक्ल, अध्यक्ष

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायम् भूत्वा भविता वा न भूयः
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे। श्री गीता 2/20

यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है। क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है। शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता।

मेरे पिता

– **शिखा सिंह** (पुत्री)

हर बेटी के लिये इसके पिता एक आदर्श पुरुष होते हैं, मेरे पिता भी मेरे आदर्श थे। 'थकान' शब्द उनके शब्दकोष में था ही नहीं। सुबह के गये जब रात को लौटते तब भी उनका चेहरा उतना ही तेजवान होता जितना की सुबह। जब भी मैं पूछती आप थक गये क्या, वह कहते आदमी तन से नहीं मन से थकता है और मेरा दिमाग कभी नहीं थकता इसीलिये मैं कभी नहीं थकता।

वह अत्यन्त दयालू, न्यायप्रिय और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। किसी ने भी जब उनसे कोई सहायता मांगी और उनकी सामर्थ्य हुई तो उन्होंने कभी न नहीं कही और तत्परता से इस व्यक्ति की सहायता की।

सरकारी अधिकारी के रूप में उन्होंने अपना कार्य पूरी ईमानदारी व सत्यनिष्ठा से करते हुए अत्यधिक मान और सम्मान अर्जित किया।

उनकी इतनी यादें मन में बसी है कितनी बाँटूं कितनी नहीं, समझ नहीं पा रही हूँ। एक बात मुझे कभी नहीं भूलती जिससे मुझे अहसास हुआ कि उनके पास कितना प्यार व परवाह करने वाला पिता का दिल था। मैं लगभग 12 या तेरह साल की रही होंगी मुझे बहुत तेज बुखार आ गया था, कई दिनों में उतरा और पापा सारी सारी रात जागते। कभी मेरे सिर पर गीली पट्टी रखते, कभी मेरा सिर दबाते, कभी दवाई पिलाते। कई रात वह सोये नहीं जिस दिन मेरा बुखार उतरा उसी दिन वह निश्चिंत होके सोये।

आज हमारे बीच वह नहीं है फिर भी न जाने क्यों ऐसा लगता है वो यहीं हैं, यहीं कहीं हैं। मेरे पिता मेरे लिये दिल में सदा जीवित रहेंगें।

पिता का हाथ

– **डॉ. दीपक सिंह** (पुत्र)

सिर पर पिता का हाथ होना बहुत बड़ी बात है आज उनके जाने पर मैं इतना अकेला इसलिये भी महसूस कर रहा हूँ क्योंकि जब तक वह स्वस्थ थे मैं फ्री माइन्ड से सिर्फ अपनी प्रैक्टिस करता था। घर के काम, बैंक के काम, मेरे अकाउंट्स आदि इत्यादि सब पापा ही देखते थे। वह मेरे पूरे परिवार के संरक्षक थे। उन पर सब छोड़कर मैं पूर्ण रूप से निश्चिंत रहता था। पर मैं मानता हूँ कि वह जहाँ भी हैं आज भी मेरे और मेरे परिवार के guardian angel हैं। वो सदा मेरे साथ रहेंगे।

In the loving memory of Grand-Pa

– **Devansh,** Grandson

It broke our hearts to lose you,
But you did not go alone.
A part of us went with you,
The day God took you home.
In life we loved you dearly,
In death we love your still,
You hold a place in our hearts
No one could ever fill.

If tears could make a stair case
And heart could make a lane,
We would walk upto heaven
To bring you back.
But you are not gone,
You will remain in our hearts,
Now and forever.

श्रीगीता जी के पाँचवें अध्याय के 10वें श्लोक में कहा गया है कि –

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा करोति यः
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रभिवाम्भसा।।

जो पुरुष सब कर्मों को परमात्मा में अर्पण करके और आसक्ति को त्याग कर कर्म करता है, यह पुरुष जल से कमल के पत्ते की भाँति पाप से लिप्त नहीं होता।

'एक सवाल'

रूठकर हमसे अचानक, क्यों हुये रूपोश तुम?
क्या हुई हमसे ख़ता, क्यों हो गये ख़ामोश तुम?
'भान' की उल्फ़त, वफ़ा में, क्या कमी थी, 'धर्म वीर'?
क्यों खुदाई की मोहब्बत में, हुये मदहोश तुम !?

भाव विह्वल-श्रद्धावनत,
उदय भान पाण्डेय 'भान'
सदस्य सांस्कृतिक प्रकोष्ठ-भावना

श्री धर्मवीर सिंह

दो अक्तूबर सन इकतालिस, जला शाश्वत-धर्म का दीप
ज्योतित कर परिवार समूचा, गोत्र-वंश को किया प्रदीप्त
कदम सिंह, परसन्दी देवी, पिता-मात थे हर्षित गात
झलक पौत्र-मुख, सिंह-तारीफ़, जागी मन में ममता प्रीत।।१।।
बनी श्यामबाला पत्नी जब, झरता जीवन से आह्लाद
दीपक, मीना, शिखासिंह सी, पाई गुणवन्ती औलाद
सद्गुण, सदाचार, नैतिकता, बने जीवन के मापदण्ड
खुशियाँ ही खुशियाँ थी घर में, निधियों की थी नित बरसात।।२।।
लाल बहादुर, गाँधी जी के, जन्म-दिवस प्राणों को धार
उनके आदर्शो को उसने, माना जीवन का आधार
परहित-सेवा, पर-दुखकातर, बना जिन्दगी का ही सार
धरम 'वीर' थे, धर्मवीर जी, धर्मराह जीवन व्यापार।।३।।
धर्म और नैतिक-शिक्षा का, स्वीकारा जीवन उपहार
धर्मवीर सिंह ने कभी ना, स्वीकारी जीवन में हार
रहे बाँटते जीवन भर वे, सबको भावना के प्रसून
भावनांजलि करी जब अर्पित, सब को दिया 'अमर' उपहार।।४।।
हो 'अमर' तुम, धर्म वीर सिंह, पाओ ईश का तुम प्रसाद
जन्मचक्र से मुक्ति मिले अब, जनम मरण का ना अवसाद
जब तक नभ में सूरज चन्दा, बने रहो तुम सबकी याद
गंगा माँ भी बिलख बिलख कर, करें हमेशा तुमको याद।।५।।

अमर नाथ

गद्दी क्या सुख भोग है, वन का क्या विश्राम।
भोग-योग, सुख-दुख सदा, रमता सम, वो राम।।

– अमर नाथ

स्व. इं. डी.वी.सिंह जी को
श्रद्धांजलि

डूबे जो आकाश में सूरज, फिर से सुबह निकल आता है,
पर जो जीवन-दीप बुझा तो, नहीं कभी वो जल पाता है।
फिर भी हैं कुछ दीप जगत में, जिनका तेज़ नहीं मरता है,
वर्तमान के हर जन का पथ, हर क्षण आलोकित करता है,
उनका जीवन-दर्शन कोई, देखो कहीं भुला पाता है?
डूबे जो आकाश में सूरज .....
'वीर' 'धरम' का चला गया है, पर उसकी आहट बाकी है,
सूक्ष्म-रूप में उसके जीवन की वो छाप अभी बाकी है,
ऐसा रूप अमर होता है, प्रतिक्षण सबको दुलराता है।
डूबे जो आकाश में सूरज .....
हैं आँखें आंसू से भीगी, तन-मन सारा कांप रहा है,
नियति-चक्र के आगे बेबस हैं,हर जन ये भाँप रहा है,
पर फिर भी कहते हैं, अपनों से क्या यूं रूठा जाता है?
डूबे जो आकाश में सूरज .....

– इं. अशोक कुमार मेहरोत्रा
सदस्य सांस्कृतिक प्रकोष्ठ-भावना

इं.धर्मवीर सिंह की सुस्मृति को समर्पित काव्यांजलि

मुझे करीब से छूकर गुजर गया कोई
मुझे लगा कि मुझी में उतर गया कोई
उसी के ध्यान में रहता हूँ, 'शान्त' खोया हुआ
न जाने कैसा असर मुझपे कर गया कोई।।

बिखरी है हवाओं में तेरे नाम की खुशबू
मीरा की हर इक श्वाँस में ज्यूँ श्याम की, खुशबू
मस्जिद की अज़ानों में, खुदा गूँज रहा है
मन्दिर में, शिवालों में, बसी राम की खुशबू।
ग़ालिब की ग़ज़ल हो कि नरोत्तम के सवैये
आती है मुसलसल किसी पैग़ाम की खुशबू।
दामन में तेरे क़ैद हुई, कैसे तू जाने
रातों की महक, दिन की सुरभि शाम की खुशबू।
लिपटे हैं कलेजे से कुछ इस तरह तेरे गम
रिन्दों से घिरी 'शान्त' हो, ज्यों जाम की खुशबू।

देवकी नन्दन शांत 'साहित्यभूषण' एवं सचिव, सांस्कृतिक प्रकोष्ठ 'भावना'

(यादों के झरोखों से)

प्रेरणा स्रोत व्यक्तित्व - माननीय इ. धर्मवीर सिंह जी

प्रो. अवनीश अग्रवाल, सह-सम्पादक-'भावना-सन्देश'

शान्तमूर्त्त, प्रेरणादायी, मधुर वाणी के धनी, कर्त्तव्यपरायण, स्वकार्यशैली प्रवर्तक, 'भावना सन्देश' त्रैमासिक पत्रिका के मुख्य सम्पादक तथा **उपहार, भावना के प्रसून** एवं **भावनांजलि** पुस्तकों के रचयिता माननीय श्रद्धेय धर्मवीर सिंह जी (अंकल) को मेरा शत शत नमन!

सूर्यावसान के साथ ही दिवसावसान प्रतिदिन होता है। सूर्योदय के साथ प्रतिदिन पुनः नया सबेरा नवीन ऊर्जा से हमें परिपूर्ण कर देगा, हम उसके दृष्टा होंगे, यह हमारा विश्वास होता है। जबकि देहावसान के पश्चात् मानव के साक्षात् दृष्टा होने की सामर्थ्य साधारण व्यक्ति में नहीं है। 31 अगस्त, 2016 को हमारे बीच से पितृव्य सिंह महोदय यद्यपि हमें छोड़कर पंचभूत में विलीन हो गये परन्तु हमारे बीच स्वकृतित्व व अनुपम व्यक्तित्व से विद्यमान रहेंगे। मेरी यादों के झरोखों से आपके सान्निध्य में व्यतीत किये पल व विशेषताएँ निम्नवत् हैं -

• U3A (University of Third Age) का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (08-10 फरवरी, 2010) चित्रकूट में आयोजित हुआ, वहीं सिंह महोदय जी से प्रथम परिचय हुआ। शान्तचित्त, अनायास ही अपनी ओर आकृष्ट करने वाले सज्जन से कब आत्मीयता हो गयी और 'अंकल' सम्बोधन सम्बद्ध हो गयी, शब्दों में बाँधना सम्भव नहीं है।

• भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) व AISCCON के द्वारा दिनांक-22-23 नवम्बर, 2013 में लखनऊ में सम्मेलन आयोजित होना था। स्मारिका **'जीवन-सन्ध्या'** जिसमें गणमान्य जनों के लेख प्रकाशित होने थे तथा सम्मेलनोपरान्त अभिलेख तैयार किया जाना था, जिसमें कान्फ्रेन्स की गतिविधियों का लेखा-जोखा देना था। उस दौरान सिंह अंकल का सान्निध्य, स्नेह, आपकी कार्यशैली, टीमवर्क में उत्साहपूर्वक कार्य करने की प्रेरणा, निर्धारित भिन्न-भिन्न सदस्यों के यहाँ स्मारिका व अभिलेख तैयार करने के लिए बैठकों का निर्धारण व सर्वसम्मति से स्वीकृति व तत्तत् स्थान पर निर्धारित तिथि व समय पर उपस्थित होना, समयबद्धता व कार्यप्रगति का द्योतक है।

• संयुक्त परिवार, रिश्तों की महक से महकता आपका परिवार, समाज व परिवार की प्रगति के विकास के लिए सदैव तत्पर सबको साथ लेकर चलने के दृष्टान्त रूप में आप दृष्टिगोचर हैं।

• विचारों की उत्कृष्टता व विचारों को सक्षमता से क्रियात्मक रूप प्रदान करने का जज्बा रखने वाले, विषम परिस्थितियों में सहजता से समायोजन व समन्वयात्मक दृष्टिकोण के पक्षधर कुशल नेतृत्व क्षमता वाले, अतिकुशल वाहन (कार) चालक तथा 'भावना-सन्देश' के प्रेरणादायी सम्पादकीय लेखन क्षमता से सबको तरोताजा करने वाले व्यक्तित्व के रूप में हमारे मन-मस्तिष्क में सदैव उपस्थित रहेंगे।

• **समय-पूर्व कार्यपूर्णता**-अक्तूबर, 2016 में प्रकाशित होने वाले 'भावना-सन्देश' (त्रैमासिक पत्रिका) का सम्पादकीय समय से पूर्व ही प्रकाशन हेतु उपलब्ध है। प्रेरणादायक सम्पादकीय लेखन के पृष्ठ में तैयारी कैसे की जाती है, इस सम्बन्ध में चर्चा के दौरान आपने महत्त्वपूर्ण पहलुओं से मुझे समय-समय पर सहज भाव से अवगत कराया, जो मेरे लिए चिरस्मरणीय है व पाथेय रूप में मार्ग प्रशस्त करता है। पठन-सामग्री को सहेजकर रखने की कला व आवश्यकता होने पर उपलब्धता का गुण हृदयग्राही व अनुकरणीय है। इस कठिन समय में, ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि ईश्वर आपके समस्त परिवारजनों, सम्बन्धियों व आत्मीयजनों को आपके अभाव का यह असह्य दुःख सहन करने की सामर्थ्य व शक्ति प्रदान करें।

प्यार से

तूने तो प्यार से काँटों का चलन बदला है
पानी पानी हैं सभी, आग लगाने वाले।

- राजेन्द्र कुमार द्विवेदी 'राजन'

संस्मरण विशेष-

दद्दा इंजी.धर्मवीर सिंह, सिर्फ अभियंता ही नहीं थे, अपितु एक सम्पूर्ण संस्था थे।

एक सितम्बर २०१६ को इंजी.धर्मवीर सिंह को पंचभूतों में समर्पित कर आना, पुनःश्च ०३ सितम्बर २०१६ को हरि ओम् मन्दिर में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देने उनके घरपरिवार, भावनापरिवार, उ.प्र.रा.वि.परिषद परिवार, उनके अपने मित्रगण भारी संख्या में अश्रु-पूरित नयनों सहित उपस्थित रहे जो उनकी सामाजिक छवि एवं लोकप्रियता का द्योतक रहा। किन्तु इससे इतर भी दद्दा. धर्मवीर सिंह जी हम सबके लिये बहुत कुछ थे।

मुझे याद आता है वह क्षण जब वे अपनी प्रथम कृति उपहार (२००८) की पाण्डुलिपि लेकर मेरे पास आये और बोले- शान्त जी इसे आप शुरु से अंत तक पढ़कर जो उचित लगे, दो-शब्द लिख दें तथा आलेखों को जहाँ ठीक समझें उन्हें संशोधित भी कर दें। मैं अवाक् उनकी ओर देखता इसलिए रह गया कि इसके पूर्व मेरा उनसे औपचारिक परिचय जरूर था किन्तु उनकी ईमानदार छवि एवं अनुशासनप्रिय व्यक्तित्व के विषय में मैंने जो सुन रखा था, उसका मैं कायल था और उनके प्रति वैसा ही आदर एवं पूज्य भाव रखता था किन्तु उक्त घटना के बाद मैंने जाना कि वे कितने सहज, कोमल एवं दूसरों को यथेष्ट महत्व देने वाले विनम्रता के मूर्तिमान स्वरूप थे।

कुछ वर्ष पहले उन्होंने अपनी संवेदना एवं त्याग का उदाहरण प्रस्तुत किया अपने गाँव में अपने पूज्यपिता की सुस्मृति में एक विशाल परोपकारी योजना को व्यवहारिक रूप देकर। यदि दैव ने उन्हें हमारे मध्य कुछ और कार्य करने की छूट दी होती तो वे एक आदर्श महापुरुष के रूप में उभरकर आये होते। उनकी धर्मपत्नी, पुत्र एवं पुत्री उन्हीं के अनुरूप संस्कारित, सुशिक्षित एवं संवेदनशील है जो उनकी प्रज्ज्वलित समाज सेवी परोपकारी ज्योति को निरन्तर सुरक्षा प्रदान करते रहेंगे और हम सब भी सदैव उनके साथ हैं। भावना के उन मित्रों से मेरा व्यक्तिगत अनुरोध है जिन्होंने इंजी. धर्मवीर सिंह जी के साहित्य, निबंध एवं विचारों को किन्हीं भी कारणों से अभी तक नहीं पढ़ा है, वे जीवन को जीने और जीवन के सही मूल्यों की परख हेतु उनका निम्नलिखित साहित्य अवश्य पढ़ें। लाभ ही होगा, हानि का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

क्रम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन वर्ष	मिलने का पता
०१	**उपहार** (संपादन-इंजी.धर्मवीर सिंह, कृतिकार)	२००८	भावना कार्यालय, ५०७ कसमंडा हाउस, हजरतगंज, पार्कारोड,लखनऊ एवं ४/४४० विकासनगर, लखनऊ
०२	**भावना के प्रसून** (संपादन-इंजी.धर्मवीर सिंह, कृतिकार)	२०१०	सम्पर्क फोन- ९३३५९०२१३७, ९९८४७०७९९३
०३	**भावनांजलि**	२०१५	(संपादन-इंजी.अमरनाथ कृतिकार इंजी.धर्मवीर सिंह)

उन्होंने भावना संदेश का संपादन ०८ मई २००६ से किया एवं २२ मार्च २०१३ से अगस्त २०१६ तक प्रधान संपादक रहे। उपरोक्त के अतिरिक्त इंजी.धर्मवीर सिंह जी की सुपुत्री शिखासिंह का भी एक कविता संग्रह 'सबसे पुराने बक्से से' भी २०१६ में प्रकाशित हुआ है जो इंजीधर्मवीर सिंह जी की विरासत को सिद्ध करता है।

इं. देवकी नन्दन शांत 'साहित्यभूषण' एवं सचिव, सांस्कृतिक प्रकोष्ठ 'भावना'

श्रद्धांजलि

जन्म और मृत्यु के इस चक्र से कोई भी छूटा नहीं है। मृत्यु के नाम से सभी के दिल में भय की एक लहर कौंध जाती है। शायद यह सभी को पता होगा कि आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा चोला धारण करती है। जब एक शरीर में आत्मा रहते-रहते शरीर पुराना व जर्जर हो जाता है तब आत्मा दूसरे शरीर को धारण करती है। तब वह अपने पुराने सगे सम्बन्धियों को विदाई देकर अपने कर्मानुसार आपकी पहचान आत्मा 'महान-आत्मा, पुण्य आत्मा व देव आत्मा के रूप में बना जाती है। स्व. श्री धर्मवीर सिंह (मुख्य अभियन्ता) पद से रिटायर्ड भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति की प्रकाशित होने वाली त्रिमाही पत्रिका 'भावना संदेश' के प्रधान संपादक के पद पर आसीन होकर महान योगदान हेतु मैं डॉ. अंजली गुप्ता उनकी आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। आपके सदाचार, सद्भावना, सच्चरित्रता, सहयोग, समर्पण संप्रेषणता, व प्रेरणात्मकता हमेशा हमारे मध्य जीवित है और सदा जीवित रहेगी।। हम आपको कभी न भूल पायेंगे। दो पंक्तियां याद आती है आपके लिये जरा सोचें। **सब कुछ रह जायेगा इस जहाँ,** सिर्फ **याद आयेंगे आपके मधुर बोल, महान कर्म,**

जो नूर बन भावना समिति में रौशन बन भावना संदेश दे गये कि मैं अभी भी आप सबके मध्य हूँ, इस जहां का नूर हूँ।

डॉ. अंजली गुप्ता
नूर मंजिल मनोचिकित्सक केन्द्र, लखनऊ
सदस्य-भावना प्रशिक्षण एवं गोष्ठियाँ प्रकोष्ठ

स्व० धर्मवीर सिंह जी का अंन्तरंग परिवार

स्व.धर्मवीर सिंह

श्रीमती श्यामबाला सिंह (पत्नी)

डॉ. दीपक सिंह (पुत्र)

श्रीमती रीना सिंह (पुत्रवधु)

श्रीमती शिखा सिंह (पुत्री)

श्रीमती मीना सिंह (पुत्री)

कु.कोमल मलिक (पौत्री)

देवांश मलिक (पौत्र)

(सदस्यों में केवल आन्तरिक वितरण हेतु)

भावना संदेश

वर्ष : 16 अंक : 04 अक्टूबर, 2016

सम्पादन समिति

इं0 धर्मवीर सिंह	– प्रधान सम्पादक
इं0 अमरनाथ	– सम्पादक
प्रो0 (डॉ0) अवनीश अग्रवाल	– सह–सम्पादक

प्रकाशक

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति

507, कसमण्डा रीजेन्ट अपार्टमेन्ट्स
पार्क रोड, लखनऊ–226001
दूरभाष : 0522–4016048 पं.सं.: 662/2000–01
वेबसाइट : www.bhavanaindia.org
ई–मेल : bhavanasindia.@gmail.com
facebook page - Bharatiya Varishtha Nagarik Samiti
Bhavana google group: bhavana-lucknow@googlegroups.com

मुद्रक

क्रियेटिव इंक, हिमांशु सदन, 5 पार्क रोड, लखनऊ।
मो0 : 7398629394 9935526017
E-mail : creativesheebu@gmail.com

भावना का संकल्प

भावना सहयोग, सेवा, स्वावलम्बन से चले,
भावना की राह में संकल्प का दीपक जले।

भावना में डूब के इतने सहिष्णु हम हुए,
आस्था, विश्वास के साँचे में हम फिर–फिर ढले।

भावना ये है बुजुर्गों को किसी भी हाल में,
इस बदलते दौर की तल्ख़ी न रत्ती भर खले।

भावना का एक ही सन्देश है सबके लिए,
शेष जीवन भर कोई अब जिन्दगी को न छले।

विश्व में इक मंच देने को वरिष्ठों के लिए,
भावना की 'शान्त' पलकों पे कई सपने पले।

– इं. देवकी नन्दन 'शान्त'

भावना सूत्र वाक्य

सन्देश नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया।
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।।

– श्री मैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय

वरिष्ठ नागरिक चैरिटी परिवार से आरम्भ करें

जीवन संध्या काल में बुजुर्गों की सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक तथा सकारात्मक/नकारात्मक सोच एवं परिस्थितियाँ जो भी उनके शेष जीवन में रंग भरती हैं वैसा ही उनका परिवार, समाज एवं स्वयं के प्रति उनकी क्रियाशीलता का दायरा बन जाया करता है। वास्तव में जीवन संध्याकाल में वे अपना उपयोगी एवं क्रियाशील जीवन जी कर ही शांति के साथ इस भवसागर से पार जाने की चाह रखा करते हैं ताकि घर परिवार, मित्र-सम्बन्धी एवं उनका जानने वाला समाज उनके स्वर्गवासी होने के बाद मान-सम्मान के साथ याद करें। वरिष्ठ नागरिकों को कई प्रकार की श्रेणियों में बांटा जा सकता है। इन श्रेणियों में श्रेष्ठ वे कहे जाते हैं जो आध यात्मिक तौर पर विकसित एवं सकारात्मक विचारों के साथ जीते हैं। जैसे आर्थिक रूप से सम्पन्न एवं क्रियाशील जो समाज सेवा शेष जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं और समाज-सेवी संस्थाओं से जुड़ जाते हैं। अन्य श्रेणी निम्न हो सकते हैं। बीमार, निराश, आर्थिक रूप से कमजोर तथा घर परिवार पर निर्भर एवं अन्त तक गृहस्थ आश्रम को जंजाल से नहीं निकल पाते।

मिश्रित वर्ग जो प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी में हैं जो समाज का लगभग 50 प्रतिशत ही होगा।

कलाकार, कवि साहित्यकार, संगीतज्ञ, खेल जगत की हस्तियां, सिनेमा क्षेत्र के प्रसिद्ध कलाकार तथा ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रसिद्ध व्यक्ति ये लोग भी अधिकतर आर्थिक रूप से सभी समाज के अंग होते हैं। आदि-आदि

इन सभी वरिष्ठ नागरिकों की जीवन-संध्या काल क्रियाशीलता अधि ाकतर निम्न एवं अपनी प्रकृति, सामाजिक वातावरण तथा रुचि के अनुसार बन जाती है ताकि वे जीवन-आनन्द का अनुभव कर सके। मान-सम्मान की चाह हर बुजुर्ग का अधिकार भी है तथा शान के साथ जीने का हक भी देश का संविधान देता है और बहुत से कानूनी हक उनके हित में पारित है ताकि उनके बच्चे भी उनके साथ ज्यादती न कर सकें। यद्यपि उनका स्वास्थ्य एवं सुरक्षा सदैव उनकी सबसे विकट समस्या बनी हुई है परन्तु इन क्षेत्रों में भी उनकी समस्याओं के हल मिल जाते हैं।

जीवन संध्या में हर बुजुर्ग अपने आध्यात्मिक उत्थान की अवश्य सोचता है और उसका प्राकृतिक रुझान योग, सत्संग, साधना, सेवा

भाव एवं चैरिटी की तरफ झुक जाया करता है। इस क्षेत्र में उनकी योजना, सक्षमता, जिज्ञासा, उपयोगिता एवं क्रियाशीलता का भरपूर योगदान समाज को प्राप्त हो सके। अतः मेरे विचार से उनकी क्रियाशीलता को निम्न दिशा निर्देश गाइडलाइन होनी चाहिए। मेरे विचार से हमारे 'भावना' के अधिकतर सदस्य उत्साह जिज्ञासु एवं क्रियाशील भी निम्न कारणों से बने हुए हैं।

आर्थिक चैरिटी अपने घर परिवार के बच्चों के भविष्य के निमित्त तथा समाज में मान सम्मान हेतु की जानी अच्छी होती है तथा बुजुर्गों को जो सुख संतोष चैरिटी करने में मिलना चाहिए वह इस सम्मान से लगभग पूर्ण हो जाया करता है।

चैरिटी केवल आर्थिक पक्ष का ही मुद्दा नहीं है ज्ञान-हुनर तथा सेवाओं को आवश्यकतानुसार बांटना आर्थिक चैरिटी से ऊपर माना जाता है। समाजसेवी संस्थाओं से जुड़े बुजुर्ग अपने अनुभवों का उत्पादकत्व उपयोग कर रहे हैं। उदाहरणार्थ हमारे सम्पादक श्री अमरनाथ जी भावना-संदेश के सम्पादन में सभी की वाह-वाह प्राप्त करते हैं, तथा 'भावना' की हर सम्भव गतिविधियों में आगे आकर सेवा करने हेतु स्वयं प्रस्तुत रहते हैं जो सराहनीय है।

भावना के सदस्य इतने उत्साहित हैं कि वह संसाधन जुटाकर समिति के हर उद्देश्य पूर्ण करते आ रहे हैं तथा समिति को राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विराजमान होना चाहते हैं। हमारी समिति 'भावना' के अध्यक्ष का जीवन-लक्ष्य तो समिति की गतिविधि ायों को उनके सफल क्रियान्वयन के लिये समर्पित है यह भी भावना रहती है। समिति के कार्यकारणी की जितनी प्रशंसा करूं वह थोड़ी होगी। सभी सदस्य बहुत उत्साह, सकारात्मक विचारधारा तथा समर्पण के साथ कार्य कर रहे हैं।

अन्त में यह कहना उचित होगा कि हम किस प्रकार चैरिटी कर परिवार से आरम्भ करके समाज सेवा के क्षेत्र में ले जायें यह चिन्तन का विषय है और सोचने पर राह मिल जाती है। आर्थिक रूप से सम्पन्न बुजुर्ग घर के सभी बच्चों के जन्मदिन, विशेष अवसर तथा भ्रमण कार्यक्रमों में अपना उचित योगदान अवश्य करें, उन्हें गिफ्ट दें तथा अपना आशीर्वाद सार्वजनिक रूप में देकर उन्हें सुखी बनाये। घर की हर समस्या का आर्थिक, सामाजिक एवं मानसिक हल निकालने में योगदान करें। सभी को उनकी त्रुटियों के लिये क्षमा करते रहे तथा बच्चों में उत्तम जीवन-मूल्यों एवं अच्छे संस्कारों को मिलाने हेतु प्रयत्न करते रहें व उन्हें पढ़ा भी सकते हैं। जब उनकी आर्थिक स्थिति समाज कार्यों एवं सम्बन्धित संगठन के लिये सक्षम हो तो समिति को दान करने में कोताही न करें। शेष धन धर्म-कर्म एवं समाज के कमजोर-जरूरतमंद वर्ग को दान करते ही रहते हैं। क्योंकि यह त्याग एवं दान उनका आत्मिक उत्थान करता है तथा यही जीवन आनन्द का स्रोत होता है। आशा है कि सभी सदस्य समिति के हित में यह संदेश प्रार्थना की तरह ग्रहण करेंगे। जो सदस्य कलाकार-हुनरमंद एवं अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं उनकी समस्या विकट होती है क्योंकि वे अपने अनुभव से समाज को लाभान्वित करने की अच्छी तमन्ना रखते हैं, परन्तु जितना चाहते हैं कर नहीं पाते। इसी कारण भावना के कई 'प्रकोष्ठों' की प्रगति धीमी रहती है।

मैं यहां स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मेरा लेखन व संदेश मेरी सोच व भावनाओं का अलंकरण मात्र है और मेरे संदेशों को उपदेश न मानें क्योंकि उपदेश तो आजकल बच्चे भी ग्रहण नहीं करते। भावना के सभी सदस्य बहुत पहले से उपरोक्त सब कर रहे होंगे क्योंकि उनका अनुभव मेरे मुकाबले कई गुना है अतः सभी सम्मानित सदस्यों से क्षमा मांगते हुए यह कहना चाहता हूं कि चैरिटी के क्षेत्र में क्रियाशील बने रहे क्योंकि हमारी जमा पूंजी का यह अच्छा उपयोग होता है। 'भावना' भी हम सब का परिवार है। यह न सोचें कि भावना से आपको क्या मिली, लेकिन यह जरूरत सोचें कि आप भावना को क्या दे सकते हैं। ये है मेरी भावना के सुमन। भेजता हूं प्यार से परिपूर्ण कर।

धर्मवीर सिंह

HELPLINES

Helpage India - 1800 180 1253	Awadh Hospital - 0522-4055222
Astha Hospital - 1800-180-1415	1) Balrampur Hospital- 0522-2624040
Dr. V.K.S. Chauhan-9415101895	2) Civil Hospital - 0522-2239007
Dr. Ashutosh Dubey - 9415117798	3) KGMU Trauma Centre- 0522-2258425
CMO Control Room - 0522-2622080	4) Director Health Deptt.- 18001805145
5) Lohia Hospital, Gomti Nagar- 08004003391	6) RLB, Rajajipuram - 0522-2661370
Director Med. Dr. Omkar Yadav - 8765676903	7) For Ambulance Service - 108 / 102

भावना–अध्यक्ष का संदेशः

प्रिय पाठकगण!

सितम्बर, 2016 में भावना द्वारा एक बहुत ही बड़ा एवं महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। यमुना एक्सप्रेसवे इंडस्ट्रियल डेवेलपमेन्ट अथॉरिटी, ग्रेटर नोयडा (YEIDA) द्वारा प्रचारित Institutional Plot Scheme - 2016 में एक उच्च कोटि का वृद्धाश्रम बनाने हेतु भावना की एन.सी.आर. शाखा ने 3000 वर्गमीटर क्षेत्रफल के प्लॉट के आवंटन हेतु आवेदन किया है। काफी व्ययसाध्य योजना है। केवल भूमि का मूल्य ही 1,76,04,740 रुपए होगा। पूरी परियोजना की अनुमानित लागत 10,18,65,214 रुपए होगी।

अगस्त, 2016 में विजय श्री फ़ाउन्डेशन नामक स्वैच्छिक संस्था भावना की संस्थागत सदस्य बनी है। यह संस्था किंग जॉर्ज मेडिकल विश्वविद्यालय के चिकित्सालय परिसर में प्रसादम् सेवा नामक एक अद्भुत प्रकल्प सफलतापूर्वक संचालित कर रही है। इस प्रकल्प को चिकित्सालय प्रशासन का आशीर्वाद एवं सहयोग प्राप्त है। इस सेवा के अंतर्गत चिकित्सालय में भर्ती दूर–दराज़ से आए अत्यंत गरीब मरीजों के साथ आए कम से कम 150 सेवादार सगे–सम्बंधियों को प्रति दिन दोपहर में साफ़–स्वच्छ वातावरण में ताजा शुद्ध सात्विक भोजन निःशुल्क कराया जाता है। पात्र व्यक्तियों का चुनाव सम्बंधित वार्डों के डाक्टर करते हैं। भावना की प्रबंधकारिणी द्वारा गठित प्रतिनिधि ा–मंडल ने परिसर का निरीक्षण किया तो सभी व्यवस्थायें अति उत्तम पाईं। अतः भावना ने विजय श्री फ़ाउन्डेशन के इस कार्यक्रम को सहयोग देने का निर्णय लिया है क्योंकि इसमें अधिकतर लाभार्थी वरिष्ठ नागरिक ही होते हैं। पत्रिका का यह अंक आप तक पहुँचने तक वर्षा ऋतु समाप्त हो चुकी होगी तथा जाड़े का आगमन हो रहा होगा। इसी के साथ भावना के निर्धन–जन सेवा शिविरों के आयोजन प्रारम्भ हो जायेंगे। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विभिन्न ग्रामों में लगभग 10 शिविर आयोजित करके अनुमानतः 1000 निर्धन परिवारों को लगभग 250 रुपए मूल्य का एक एक नया ऊनी कम्बल दिया जाएगा। शिविरों में उपस्थित होने वाले सभी लोगों को नए/पुराने पहनने/ओढ़ने/बिछाने के अच्छे स्वच्छ कपड़े भी वितरित किए जायेंगे। यह कार्यक्रम आपके सहयोग पर ही आध ाारित है। कम्बलों के लिए अपना आर्थिक सहयोग तथा नए/पुराने कपड़ों के रूप में भी अपना सहयोग यथाशीघ्र देने की कृपा करें। माह अगस्त, 2016 का अंतिम सप्ताह भावना–परिवार के लिए अत्यधिक दुःखद एवं पीड़ादायक रहा।

28 अगस्त को भावना के संरक्षक सदस्य, प्रख्यात सर्जन, लखनऊ के जन–जन प्रिय, पूर्व–महापौर, पद्मश्री डॉ. सतीश चन्द्र राय, का निधन हो गया। वे लम्बे समय से कैन्सर से पीड़ित थे। डॉ. राय वर्ष 2004 में समिति के संरक्षक सदस्य बने थे। तभी से निरंतर समिति को उनका आशीर्वाद मिलता रहा। जब तक स्वस्थ रहे तब तक समिति के सभी प्रमुख आयोजनों में वे सदा उपस्थित रहते थे। समिति के विस्तार एवं विकास में डॉ. राय का योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

मात्र दो दिन बाद ही 31 अगस्त को भावना के विशिष्ट सदस्य, माननीय धर्मवीर सिंह का निधन हो गया। इस दूसरी हृदय–विदारक घटना ने भावना–परिवार के हर सदस्य को स्तब्ध कर दिया। वे भी लम्बे समय से कैन्सर से पीड़ित थे। किन्तु साहसी इतने थे कि बीमारी के बावजूद अंतिम दिन तक सक्रिय रहे। वे समिति के त्रैमासिक मुख–पत्र, भावना–संदेश, के प्रधान सम्पादक थे। इस दायित्व का निर्वहन वे अत्यंत कुशलता से जीवन–पर्यन्त करते रहे। भावना–परिवार में धर्मवीर सिंह जी का प्रवेश 25 सितम्बर, 2000 को हुआ था। वे तभी से समिति के क्रिया–कलापों में अत्यंत सक्रिय रहे थे। उनकी कमी भावना–परिवार को हर क्षण महसूस होती रहेगी। समिति द्वारा संचालित किए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में आपकी राय जानने के लिए मैं उत्सुक हूँ।

सादर, अभिवादन सहित।

विनोद कुमार शुक्ल

मनुष्य कितना भी गोरा क्यों ना हो परंतु उसकी परछाई सदैव काली होती है...!!

'मैं श्रेष्ठ हूँ' यह आत्मविश्वास है लेकिन 'सिर्फ मैं ही श्रेष्ठ हूँ' यह अहंकार है...

इच्छा पूरी नहीं होती तो क्रोध बढ़ता है, और इच्छा पूरी होती है तो लोभ बढ़ता है। इसलिये जीवन की हर स्थिति में धैर्य बनाये रखना ही श्रेष्ठता है।- आचार्य विपिन

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति की प्रबन्धकारिणी की स्मृति भवन, विपुल खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ में 12 जून, 2016 को हुई बैठक का कार्यवृत्त

सौजन्य सेः माननीय श्री रवीन्द्र कुमार सक्सेना, श्री सिद्धेश्वर नाथ शर्मा, श्री नरेश चन्द्र रस्तोगी, श्री पाल प्रवीण तथा श्री सुरेश चन्द्र ब्रह्मचारी।

उपस्थिति -संरक्षक तथा स्थाई आमंत्री - 49 सदस्य, अन्य विशिष्ट तथा विशेष आमंत्री सदस्य - 26

कार्यवाही विवरण : माननीय अध्यक्ष महोदय के सभापतित्व में हुई इस बैठक में सर्वसम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिए गएः-

1. प्रबन्धकारिणी की 20 मार्च, 2016 को हुई बैठक का कार्यवाही विवरण अनुमोदित कर दिया गया।

2. भावना के नये बने सदस्यों का परिचय कराया गया। इन सदस्यों में श्री विनोद कुमार कपूर का नाम उल्लेखनीय हैं। सभा में उपस्थित सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से नये सदस्यों का स्वागत किया।

3. महासचिव(प्रशासन) ने शिक्षा सहायता योजना के सम्बन्ध में सभा को अवगत कराया कि गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 1 से 12 तक में पढ़ रहे कम से कम 120 गरीब किन्तु मेधावी छात्रों/छात्राओं को प्रति छात्र/छात्रा 1200/1800/2000 रूपये का सहयोग दिया जायेगा। सभा में उपस्थित सभी सदस्यों से अनुरोध किया गया कि इस योजना हेतु अधिक से अधिक राशि का सहयोग जल्द से जल्द करने की कृपा करें। अनेक सदस्यों नें अपनी सहयोग राशि भावना के कोष में जमा भी कर दी है। जिन सदस्यों ने जितनी राशि दिनांक 01 अप्रैल 2016 से 12 जून, 2016 तक दी है उनके नाम व दी गयी राशि की जानकारी उपाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार गोयल ने सभा को दी जिस पर सभा ने करतल ध्वनि से उन सदस्यों को धन्यवाद दिया। पात्र छात्र/छात्राओं का चयन माह जुलाई में शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ द्वारा किया जायेगा तथा सहयोग राशि का वितरण माह अगस्त में मनाये जाने वाले स्थापना दिवस समारोह में किया जायेगा।

4. अनौपचारिक शिक्षण आकोष्ठ के सचिव/संयोजक, श्री अमरनाथ, ने सभा को अवगत कराया कि वर्तमान में गरीब, बेसहारा, लावारिस बच्चों को साक्षर बनाने तथा उन्हें संस्कारित करने के उद्देश्य से जो अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र बिजनौर रोड रेलवे क्रासिंग के पास भावना द्वारा संचालित किया जा रहा है वह विगत आंधी में ध्वस्त हो गया था। उसे ठीक करा दिया गया है। उन्होंने सभा में उपस्थित/अनुपस्थित, आबंधकारिणी के सभी सदस्यों/स्थाई आमंत्रियों/विशेष आमंत्रियों से इस योजना हेतु अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देने का अनुरोध किया।

5. अध्यक्ष, महोदय ने सभा को स्मरण कराया कि गरीब, बेसहारा, लावारिस बच्चों को साक्षर बनाने तथा उन्हें संस्कारित करने के उद्देश्य से भावना द्वारा चलाई जा रही अनौपचारिक शिक्षण योजना के प्रति जनमानस में जागरूकता एवं संवेदना उत्पन्न करने तथा इस पवित्र यज्ञ में संकल्प-पत्रों के माध्यम से सामान्य जन की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विभिन्न विद्यालयों तथा उनमें शिक्षा-रत बच्चों के लिए एक पुरस्कार योजना का शुभारम्भ गत वर्ष किया गया था। पर्याप्त संख्या में संकल्प-पत्र छपवा भी लिए गए थे। किन्तु भावना के सम्बंधित पदाधिकारियों की उदासीनता के कारण इस कार्यक्रम को आशातीत सफलता नहीं मिल सकी थी। अध्यक्ष महोदय ने पुनः सभा को इस कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया तथा सभी से अपील की कि प्रबंधकारिणी के सभी सदस्य/स्थाई आमंत्री/विशेष आमंत्री इस कार्यक्रम में अपना योगदान अवश्य दें। चूँकि अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ अब महासचिव (कार्यान्वयन) से सम्बद्ध है इसलिए उक्त कार्यक्रम का सफल कार्यान्वयन सुनिश्चित करना उन्हीं का दायित्व है। प्रमुख महासचिव भी इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन में अपने दायित्व का निर्वहन करेंगे। अध्यक्ष की ओर से विशेष कार्याधिकारी इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन का पर्यवेक्षण करेंगे।

6. डॉ. श्री राम सिंह, सचिव, डे सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ, ने सभा को अवगत कराया कि पिछले कुछ समय से डे सेन्टर तथा फिजियोथेरेपी सेन्टर बंद चल रहा है जिसे पुनः संचालित करने के संबंध में कार्यवाही प्रगति पर है। आशा है कि डे सेन्टर शीघ्र ही चालू हो जायेगा।

7. समिति की फरवरी, 2016 तक संशोधित नियमावली के नियम 11.1 तथा नियम 11.6 में निहित प्राविधानों के अनुसार समिति के पूर्व निर्गत कार्यालय ज्ञापन संख्या भावना/प-010/अ/500 दिनांक 25 मार्च, 2016 को निम्नवत् संशोधित करने का निर्णय

लिया गयाः

• श्री रवीन्द्र कुमार सक्सेना (आर-3/22/विशिष्ट) का प्रबंधकारिणी में मनोनयन उनके स्वयं के अनुरोध पर निरस्त किया गया। फलतः वे अब सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ के सदस्य भी नहीं रहेंगे।

• श्री संतोष कुमार सक्सेना (एस-113/531) का स्थाई आमंत्री के रूप में प्रबंधकारिणी में मनोनयन निरस्त किया गया। फलतः वे अब सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ के सदस्य भी नहीं रहेंगे।

• श्री आनन्द कुमार (ए-53/572/विशिष्ट) को प्रबंधकारिणी में मनोनीत किया गया। वे सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ के सदस्य की हैसियत से गोमती नगर क्षेत्र के प्रभारी होंगे।

• श्री रामानन्द मिश्रा (आर-71/568) को स्थाई आमंत्री के रूप में प्रबंधकारिणी में मनोनीत किया गया। वे सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ के सदस्य की हैसियत से विकास नगर तथा आस पास के क्षेत्र के प्रभारी होंगे।

• महासचिव (कार्यान्वयन), श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ के सदस्य की हैसियत से अब त्रिवेणी नगर सहित सीतापुर रोड के दोनों ओर के क्षेत्र तथा आई.आई.एम. रोड के दोनों ओर के क्षेत्र के प्रभारी होंगे।

• डॉ. अनिल कुमार कक्कड़ (ए-60/641) का स्थाई आमंत्री के रूप में प्रबंधकारिणी में मनोनयन उनके स्वयं के अनुरोध पर निरस्त किया गया। फलतः वे अब प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ के सदस्य भी नहीं रहेंगे।

• डॉ. शुभकरन सिंह चौहान (एस-100/483/वॉलन्टियर) का स्थाई आमंत्री के रूप में प्रबंधकारिणी में मनोनयन निरस्त किया गया। फलतः वे अब प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ के सदस्य भी नहीं रहेंगे।

• डॉ. अंजली गुप्ता (ए-48/509/वॉलन्टियर) को स्थाई आमंत्री के रूप में प्रबंधकारिणी में मनोनीत किया गया एवं उन्हें प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ का सदस्य बनाया गया।

• श्री शिव शंकर प्रसाद शुक्ल (एस-2/30) को भावना की उन्नाव शाखा के सचिव पद पर मनोनीत किया गया। यह पद श्री आनन्द आकाश अग्निहोत्री (ए-11/127) के आकस्मिक निधन के कारण 10 जून, 2016 को रिक्त हो गया था।

8. अध्यक्ष महोदय ने सभा को अवगत कराया कि वरिष्ठ नागरिकों के हितों से सम्बंधित जो प्रस्ताव साधारण सभा में पारित हुए थे और जिन्हें माननीय प्रधानमंत्री जी एवं माननीय मुख्यमंत्री जी सहित केन्द्र सरकार व राज्य सरकार के सभी सम्बंधित माननीय मंत्रियों एवं अधिकारियों को भेजा गया था उनके उत्तर में केन्द्र सरकार के ज्यादातर विभागों से पत्र प्राप्त हो चुके हैं लेकिन राज्य सरकार के किसी भी विभाग से कोई उत्तर अभी तक नहीं मिला है।

9. महासचिव (एडवोकेसी), श्री अशोक कुमार मल्होत्रा, ने सभा को अवगत कराया कि 12/13 जुलाई, 2016 को सार्क देशों के चुने हुए वरिष्ठ नागरिकों का एक सम्मेलन नेपाल में होने जा रहा है जिसमें हर देश के दो प्रतिनिधि ही सम्मिलित होंगे। इस सम्मेलन का समस्त व्यय तथा प्रतिनिधियों के रहने, खाने आदि का व्यय नेपाल सरकार द्वारा वहन किया जायेगा। जाने व आने का व्यय प्रतिनिधियों को स्वयं वहन करना होगा। AISCCON के अध्यक्ष एवं महासचिव इस सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

10. ग्राम्यांचल एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ के संयोजक, श्री देवेन्द्र स्वरूप शुक्ल, उपमहासचिव, ने सभा को अवगत कराया कि प्रकोष्ठ के कार्यक्रम इस वर्ष अक्टूबर से ही प्रारम्भ कर दिए जायेंगे, ग्रामीण क्षेत्रों में कम से कम दस स्थानों पर कुल 1000 नए ऊनी कम्बलों का वितरण पूर्व-चिह्नित गरीब परिवारों में किया जाएगा तथा पहनने, बिछाने, ओढ़ने योग्य नए/पुराने कपड़े तथा बर्तन आदि भी पर्याप्त मात्रा में वितरित किए जायेंगे। उन्होंने सभी से अपील की कि 250 रुपए प्रति कम्बल की दर से अपनी क्षमता के अनुरूप अधिक से अधिक धनराशि का सहयोग शीघ्रातिशीघ्र देने का कष्ट करें तथा अपने सम्पर्क के अन्य सहृदय लोगों को भी इस हेतु प्रेरित करें।

11. सम्पादन प्रकोष्ठ के सम्पादक, श्री अमरनाथ ने सभी प्रमुख पदाधिकारियों से अनुरोध किया कि वे भावना-संदेश के जुलाई, 2016 अंक में प्रकाशन हेतु सभी सामग्री विलम्बतम 20 जून, 2016 तक उन्हें उपलब्ध करा दें ताकि पत्रिका समय से छप कर निकल सके। उन्होंने सभी को सचेत किया कि 20 जून, 2016 के बाद प्राप्त होने वाली सामग्री पत्रिका के इस अंक में नहीं छप सकेगी।

12. सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ के संयोजक, श्री रमाकान्त पाण्डेय, उपमहासचिव, ने सभा को अवगत कराया कि वे अप्रैल, 2016 से अब तक अपने प्रकोष्ठ के सदस्यों की दो बैठकें कर चुके हैं। प्रथम चरण में वे अपने प्रकोष्ठ के सदस्यों के माध्यम से तथा सीधे स्वयं भी समिति के सभी सदस्यों से सम्पर्क करके उनके सभी आवश्यक विवरण, यथा, जन्म तिथि, विवाह की तिथि, पता, मोबाइल नम्बर, ई-मेल आई.डी. आदि संकलित कर रहे हैं। भावना-संदेश के जुलाई, 2016 अंक का वितरण लखनऊ निवासी सदस्यों को अपने प्रकोष्ठ के सदस्यों के माध्यम से ही कराने का संकल्प भी उन्होंने व्यक्त किया।

13. वैकल्पिक चिकित्सा प्रकोष्ठ के सचिव/संयोजक, डॉ. नरेन्द्र देव, ने सभा के समक्ष उन कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत किया जो उन्होंने अप्रैल, 2016 से अब तक आयोजित किए हैं।

14. पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ के सचिव/संयोजक, श्री पाल प्रवीण, ने विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में 06 जून, 2016 को आयोजित की गई संगोष्ठी का विवरण सभा के समक्ष प्रस्तुत करते हुए सभा में उपस्थित/अनुपस्थित प्रबंधकारिणी के सभी सदस्यों/स्थाई आमंत्रियों/विशेष आमंत्रियों से अनुरोध किया कि-

• आप जब भी घर से निकलें तो कपड़े का एक थैला साथ लेकर निकलें और जो भी सामान खरीदें वह अपने थैले में ही डलवायें। पॉलीथीन को ''ना'' कहें।

• सार्वजनिक कार्यक्रमों में यथासम्भव लाउडस्पीकर का प्रयोग न करें अथवा कम वॉल्यूम के साथ करें।

• यथासम्भव कागज, मिट्टी तथा पत्तों से बने दोने, पत्तल, कटोरी, गिलास आदि का ही प्रयोग करें। प्लास्टिक के सामानों का उपयोग न करें।

• अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें तथा करायें। • जल की बरबादी न करें न करने दें।

अध्यक्ष महोदय ने प्रकोष्ठ के सचिव/संयोजक से अपेक्षा की कि वे अपने प्रकोष्ठ के सदस्यों की बैठकें जल्दी जल्दी करेंगे ताकि उपरोक्त बिन्दुओं पर प्रभावी कार्यवाही हो सके। उनसे यह भी अपेक्षा की गई कि वे प्रकोष्ठ के लिए निर्धारित किए गए अन्य उद्देश्यों के अनुरूप भी कार्यवाहियाँ सुनिश्चित करेंगे।

15. संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ के संयोजक, श्री मनोज कुमार गोयल, सम्प्रेक्षक, बैठक से आवश्यक कार्य होने के कारण जल्दी चले गए थे। इसलिए इस प्रकोष्ठ की प्रगति पर कोई चर्चा नहीं की जा सकी।

16. विधि तथा आर.टी.आई. प्रकोष्ठ के सचिव/संयोजक, डॉ. वीरेन्द्र बहादुर सिंह, इस बैठक में उपस्थित नहीं थे। वे नगर से बाहर, हैदराबाद, गए हुए थे। उनसे प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर अध्यक्ष महोदय ने सभा को अवगत कराया कि यह प्रकोष्ठ अच्छा कार्य कर रहा है। इस प्रकोष्ठ ने अप्रैल से अब तक चार आर.टी.आई. के आवेदन दिए हैं, एक सदस्य को उसके घर जाकर वसीयत सम्बंधी विस्तृत परामर्श दिया है तथा तीन सदस्यों को विधिक परामर्श दिया है। इसके अतिरिक्त अध्यक्ष महोदय ने विश्वास व्यक्त किया कि यह प्रकोष्ठ भावना के हित में जिला उपभोक्ता फोरम द्वारा पारित आदेश के विरुद्ध एल.डी.ए. द्वारा राज्य आयोग में दायर अपील की पैरवी पूरे मनोयोग से करेगा। अपील का उत्तर भावना की ओर से राज्य आयोग में 13 जुलाई, 2016 को प्रस्तुत किया जाना है।

17. प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ के सचिव/संयोजक, डॉ. छेदा लाल वर्मा, ने सभा को अवगत कराया कि राज्य वरिष्ठ नागरिक नीति में उन राजकीय कर्मचारियों एवं अधिकारियों को प्रशिक्षित करने का प्राविधान है जो इस नीति का अनुपालन करने/कराने के लिए उत्तरदायी हैं। तदनुरूप अध्यक्ष महोदय के परामर्श के अनुरूप इस प्रकोष्ठ द्वारा ऐसे ही प्रशिक्षण देने सम्बंधी एक प्रोजेक्ट एस्टीमेट तैयार किया जा रहा है। इस बारे में प्रकोष्ठ के सदस्यों की तीन बैठकें हो चुकी हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि मध्य जुलाई तक यह प्रोजेक्ट एस्टीमेट अध्यक्ष महोदय के विचारार्थ प्रस्तुत कर दिया जाएगा।

18. निर्णय लिया गया कि भावना का सत्रहवाँ स्थापना दिवस कार्यक्रम रविवार, **21 अगस्त, 2016** को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में आयोजित किया जाएगा। यदि उस दिन के लिए यह प्रेक्षागृह रिक्त नहीं मिलेगा तो यह कार्यक्रम शनिवार, 20 अगस्त, 2016 को आयोजित किया जाएगा।

19. अध्यक्ष महोदय ने सभा में उपस्थित/अनुपस्थित प्रबंधकारिणी के सभी सदस्यों/स्थाई आमंत्रियों/विशेष आमंत्रियों को स्मरण

कराया कि भावना की आर्थिक स्थिति मजबूत करने हेतु तथा जनहितकारी कार्यक्रमों को गति देने हेतु विशेष प्रयास करने हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से समिति के सोलहवें वार्षिक महाधिवेशन के अनुरूप अगले वार्षिक महाधिवेशन में भी निम्नलिखित उत्कृष्ट कार्यों के लिए भावना-सदस्यों को प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति-चिन्ह देकर सम्मानित किया जायेगा :-

- एक सत्र में 20 या अधिक आजीवन सदस्य बनवाने वाले प्रत्येक प्रेरक सदस्य को।
- एक सत्र में अधिकतम (किन्तु 20 से अधिक) आजीवन सदस्य बनवाने वाले प्रेरक सदस्य को।
- एक सत्र में 10 या अधिक विशिष्ट सदस्य बनवाने वाले प्रत्येक प्रेरक सदस्य को।
- एक सत्र में अधिकतम (किन्तु 10 से अधिक) विशिष्ट सदस्य बनवाने वाले प्रेरक सदस्य को।
- एक सत्र में 50,000 रुपए या अधिक धनराशि का दान एकत्रित करने वाले प्रत्येक प्रेरक सदस्य को।
- एक सत्र में अधिकतम धनराशि (किन्तु 50,000 रुपए से अधिक) का दान एकत्रित करने वाले प्रेरक सदस्य को।
- एक सत्र में अति-उत्तम कार्य करने वाले प्रबंधकारिणी के सदस्यों को।
- एक सत्र में सर्वोत्तम कार्य करने वाले प्रबंधकारिणी के किसी एक सदस्य को।

उपाध्यक्ष महोदय द्वारा प्रति माह संकलित की गईं प्रगति-आख्याओं तथा प्रबंधकारिणी की बैठकों के कार्यवाही विवरणों पर सम्यक विचारोपरान्त माननीय अध्यक्ष, माननीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा माननीय उपाध्यक्ष मिल कर निर्णय लेंगे कि किन किन सदस्यों को उपरोक्तानुसार सम्मानित किया जाएगा। नामों की घोषणा अगले वार्षिक महाधिवेशन के ठीक पहले होने वाली प्रबंधकारिणी की बैठक में की जायेगी। अध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष की उपलब्धियाँ श्रेष्ठ तथा/अथवा श्रेष्ठतम होने के बावजूद इन्हें इस पुरस्कार योजना में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

20. **विश्व वरिष्ठ नागरिक दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस** (15 जून, 2016) के पूर्व-दिवस, 14 जून, 2016 को, हेल्पेज इंडिया द्वारा जयशंकर प्रसाद सभागार में पूर्वाह 10:30 बजे से एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया है। इसी क्रम में हेल्पेज इंडिया द्वारा ही 15 जून, 2016 को अपराह 04:00 बजे से सहारागंज परिसर में हस्ताक्षर अभियान तथा नुक्कड़ नाटक का भी कार्यक्रम नियोजित है। सभा में उपस्थित सभी सदस्यों से अनुरोध किया गया कि इन कार्यक्रमों में अवश्य सम्मिलित हों।

21. सभा को सहर्ष अवगत कराया गया कि भावना के सांस्कृतिक कार्य प्रकोष्ठ के ऊर्जावान सदस्य, श्री उदय भान पाण्डेय, की काव्य-रचनाओं के संकलन, **''काव्य-कलश''** के लोकार्पण का कार्यक्रम रविवार, 03 जुलाई, 2016 को संध्या 05:00 बजे से उ.प्र. हिन्दी संस्थान के यशपाल सभागार में आयोजित होगा। सभी से अनुरोध किया गया कि वे इस कार्यक्रम में अपनी सपरिवार उपस्थिति अवश्य ही सुनिश्चित करें।

22. सभा को शोक सहित सूचित किया गया कि भावना की उन्नाव शाखा के संस्थापक सचिव, श्री आनन्द प्रकाश अग्निहोत्री, का निधन दिनांक 10 जून 2016 को हो गया है। सभा ने खड़े होकर 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

कार्यक्रम के अंत में, सभा में उपस्थित सभी सदस्यों की ओर से माननीय अध्यक्ष, श्री विनोद कुमार शुक्ल, ने बैठक के आयोजनकर्ता माननीय श्री रवीन्द्र कुमार सक्सेना, श्री सिद्धेश्वर नाथ शर्मा, श्री नरेश चन्द्र रस्तोगी, श्री पाल प्रवीण तथा श्री सुरेश चन्द्र ब्रह्मचारी को धन्यवाद दिया एवं सभी को स्नेहभोज के लिये आमंत्रित किया।

जगत बिहारी अग्रवाल, महासचिव (प्रशासन)

तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है
मगर ये आँकड़े झूठे हैं, ये दावा किताबी है
तुम्हारी मेज चाँदी की, तुम्हारे जाम सोने के
यहाँ जुम्मन के घर में आज भी फूटी रक़ाबी है।।

– अदम गोंडवी

है बहुत अँधियारा अब सूरज निकलना चाहिए
जिस तरह से भी हो ये मौसम बदलना चाहिए
छीनता हो हक़ तुम्हारा जब कोई, उस वक्त तो
आँख से आँसू नहीं, शोला निकलना चाहिए।।

– श्री गोपालदास नीरज

हम समझते आप सबकी भावना। हर कदम पर, आप सबके, **भावना**

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति द्वारा आम जन की सेवा के लिये संचालित विभिन्न प्रकोष्ठ

निर्धन जन सेवा हेतु विशेष अनुरोध

जो सर्वसमर्थ है उनके लिए शीत ऋतु बहुत ही सुहानी और सैर-सपाटे, पिकनिक वाली होती है। किन्तु यही ऋतु उनके लिए अत्यंत दुखदायी होती है जिनके पास न तन ढकने के लिए पर्याप्त वस्त्र है, न ओढ़ने-बिछाने के लिए बिछौने हैं और न सिर छिपाने के लिए कोई कुटिया ही है। आइये हम सब मिलकर उनकी मदद करें जिनके पास पहनने, बिछाने, ओढ़ने के लिए कुछ भी नहीं है।

भावना ने निर्णय लिया है कि गत् वर्षों की भांति इस वर्ष भी शीत ऋतु में लखनऊ नगर तथा आसपास के ग्रामीण इलाकों के गरीब एवं असहाय जनों को तत्काल नये कम्बल तथा ओढ़ने, बिछाने एवं पहनने के नए अथवा पुराने कपड़े, बर्तन आदि उपलब्ध कराए जायें। अतः भावना के सभी सम्मानित सदस्यों एवं अन्य संवेदनशील समर्थ नागरिकों से अनुरोध किया जाता है कि वे कृपया यथाशीघ्र इस हेतु अपनी ओर से यथासंभव सहयोग प्रदान करें एवं अपने सगे-सम्बन्धियों तथा मित्रजनों को भी प्रेरित करें कि वे भी इस हेतु अपना योगदान देने की कृपा करें।

भावना द्वारा जो नए ऊनी कम्बल इस हेतु थोक में खरीदे जा रहे है। उनका मूल्य प्रति कम्बल 250 रुपये है। जो भी सहृदय व्यक्ति नए कम्बलों की मद में सहयोग देना चाहे वे जितना कम्बल देना चाहे उतने कम्बलों का मूल्य नगद अथवा लखनऊ में "at par" भुगतान योग्य Bharatiya Varishtha Nagarik Samiti के हित में जारी चेक से देने का कष्ट करें। अन्य सामग्री (पुरानी अथवा नई) भी कृपया यथाशीघ्र देने का कष्ट करें।

अपने सदस्यों तथा अन्य संवेदनशील लोगों से प्राप्त सहयोग के लिए भावना की प्रबंधकारिणी उनकी आभारी होगी।

विनोद कुमार शुक्ल	योगेन्द्र प्रताप सिंह	देवेन्द्र स्वरूप शुक्ल
अध्यक्ष	महासचिव कार्यान्वयन	उप महासचिव (कार्यान्वयन)
मो.: 09335902137	मो. 09412417108	मो. 09198038889

गरीब, बेसहारा, लावारिस बच्चों के लिए साक्षरता अभियान

भारत एवं भारतवासियों की समग्र प्रगति के लिए देश के उन बच्चों को साक्षर एवं संस्कारित किया जाना नितांत आवश्यक है जो अत्यंत गरीब, बेसहारा और लावारिस हैं तथा जिन्हें हम Street Children कह कर सम्बोधित करते हैं। इसलिए भावना द्वारा ऐसे बच्चों को साक्षर बनाने एवं उन्हें संस्कारित करने के उद्देश्य से झुग्गी–झोपड़ियों की बस्तियों में अनौपचारिक शिक्षण केन्द्रों की शृंखला स्थापित करने तथा संचालित करने का निर्णय लिया गया है। इस अभियान के अंतर्गत पहला शिक्षण केन्द्र लखनऊ में माह **मई** 2015 से प्रारम्भ किया जा चुका है। जैसे–जैसे संसाधन उपलब्ध होंगे, वैसे–वैसे इस प्रकार के और शिक्षण केन्द्र लखनऊ में तथा अन्य स्थानों पर भी प्रारम्भ किये जायेंगे। एक शिक्षण केन्द्र को स्थापित करने तथा संचालित करने हेतु वार्षिक व्यय लगभग एक लाख रुपये होने का अनुमान है। साक्षरता अभियान के अंतर्गत जो बच्चे अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि वाले पाये जायेंगे तथा जिनमें नियमित औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने की अत्यधिक लगन दिखेगी उनके लिए भावना द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में विधिवत शिक्षण की व्यवस्था भी यथासम्भव की जाएगी।

सुधी, सहृदय एवं संवेदनशील महानुभावों/संस्थाओं से विशेष अनुरोध

देश हित के इस महायज्ञ को यथाशक्ति अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करें। एक शिक्षण केन्द्र में दो शिक्षक हैं। प्रत्येक का मासिक वेतन तीन हजार रुपये है। इस प्रकार शिक्षकों के वेतन की मद में ही वर्ष भर में 72,000 रुपये का व्यय होगा। वर्ष भर में अन्य विभिन्न व्यवस्थाओं पर 28,000 रुपये खर्च होने का अनुमान है। एक शिक्षण केन्द्र में अधिकतम 20 बच्चों को पंजीकृत किया जा रहा है। इस प्रकार एक बच्चे को साक्षर एवं संस्कारित करने हेतु एक वर्ष का व्यय 5000 रुपये आ रहा है।

अतः अनुरोध है कि कम से कम एक बच्चे को साक्षर एवं संस्कारित करने हेतु एक वर्ष में व्यय होने वाली धनराशि 5000 रुपये, समिति के साक्षरता अभियान कोष में दान करें ताकि आपके सहयोग से कम से कम एक गरीब, बेसहारा, लावारिस बच्चा साक्षर एवं संस्कारित हो सके। अपने अन्य सक्षम परिजनों तथा इष्ट मित्रों को भी इस पुण्य कार्य में यथा–सामर्थ्य सहयोग देने हेतु प्रेरित करें।

विनोद कुमार शुक्ल	जगत बिहारी अग्रवाल	योगेन्द्र प्रताप सिंह
अध्यक्ष	महासचिव प्रशासन	महासचिव (कार्यान्वयन)
मो.: 09335902137	मो. 09450111425	मो. 09412417108

अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र

लखनऊ बिजनौर मार्ग पर बिजली पासी किला चौराहा से औरंगाबाद रेलवे क्रासिंग से महज 100 मीटर दायीं ओर मान सरोवर योजना के सेक्टर–'पी' में एक अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र श्री चन्द्र भूषण तिवारी जी के दिशा–निर्देशन में **भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना)** द्वारा संचालित है। इसमें लगभग 30 से 50 तक बच्चे निःशुल्क प्रशिक्षण ले रहे हैं।

इस स्कूल में निकटस्थ झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस स्कूल के संचालन एवं इन बच्चों के सामाजिक, मानसिक, शैक्षिक उत्थान हेतु समाज का कोई भी वर्ग अथवा व्यक्ति सहयोग प्रदान करने हेतु निम्न फोन्स पर सम्पर्क स्थापित कर सकता है –

अमरनाथ	चन्द्रभूषण तिवारी	सतपाल सिंह	शैलेन्द्र मोहन दयाल	श्रीमती सरोजिनी सिंह
09451702105	09415910029	09839043458	09455550616	09415058975

बालक–बालिकाओं की शिक्षा सहायता योजना

भावना ने कक्षा 12 तथा नीचे की कक्षाओं में पढ़ रहे गरीब तथा अति गरीब किन्तु मेधावी छात्रों/छात्राओं के लिए यह अभिनव योजना प्रारम्भ की है। इस योजना के अंतर्गत समिति द्वारा चुने गए कक्षा 8 तक के प्रत्येक छात्र/छात्रा को एक शिक्षा सत्र में अधिकतम 1200 रुपये, कक्षा 9 एवं 10 के प्रत्येक छात्र/छात्रा को अधिकतम 1800 रुपये तथा कक्षा 11 एवं 12 के प्रत्येक छात्र/छात्रा को अधिकतम 2000 रुपये की सहायता स्कूल की फीस तथा पुस्तकों आदि के रूप में सम्बन्धित विद्यालयों के माध्यम से प्रदान की जाती है। विशेष परिस्थितिजन्य अपवादों को छोड़कर सामान्यतः किसी भी छात्र/छात्रा को अथवा उसके माता-पिता/अभिभावक को सहायता राशि नगद नहीं दी जाती है ताकि उसका अपव्यय न होने पाए। इस योजना के भली प्रकार क्रियान्वयन के लिए समिति के अंतर्गत एक विशेष **शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ** का गठन किया गया है। लाभार्थी छात्र/छात्राओं का चुनाव इसी प्रकोष्ठ द्वारा किया जाता है। चुनाव प्रत्येक वर्ष एक शिक्षा सत्र के लिए ही किया जाता है। इस विषय में प्रकोष्ठ का निर्णय ही अंतिम माना जाता है। प्रकोष्ठ द्वारा लाभार्थी छात्र/छात्राओं की शिक्षा सम्बन्धी प्रगति की समीक्षा समय-समय पर की जाती है। शिक्षा सत्र के मध्य यदि प्रकोष्ठ पाता है कि कोई लाभार्थी छात्र/छात्रा पढ़ाई में रुचि नहीं ले रहा है तो शिक्षा सत्र के बीच में ही उसे सहायता देना बंद करने का पूरा अधिकार प्रकोष्ठ को होता है।

भावना द्वारा इस योजना के अंतर्गत शिक्षा सत्र 2007-08 से प्रारम्भ करके विगत सत्र 2015-16 तक लखनऊ नगर तथा आसपास विद्यमान 37 मान्यता प्राप्त विद्यालयों के 762 छात्र/छात्राओं को 10,01,000 रुपए का आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा चुका है। वर्तमान सत्र 2016-17 में 32 विधायकों के कुल 130 छात्र/छात्राओं को 1,82,200 रुपए का आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा चुका है। गत् चार वर्षों में भावना ने 45 दृष्टि-बाधित बच्चों को आर्थिक सहायता प्रदान की थी तथा वर्तमान सत्र में ऐसे ही 13 बच्चों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है। आगामी सत्र 2017-18 में भी कम से कम 100 बच्चों को ऐसा ही आर्थिक सहयोग प्रदान करने का संकल्प है। वर्तमान सत्र में कक्षा 8, 9, 10 एवं 11 में आर्थिक सहयोग प्राप्त कर रहे जो बच्चे कम से कम 60 प्रतिशत अंकों के सथ उत्तीर्ण होकर अगली कक्षा में पहुंचेंगे उन्हें आगामी सत्र 2017-18 में भी अध्ययन हेतु उपरोक्तानुसार निर्धारित धनराशि का सहयोग प्रदान किया जाएगा। भावना से कक्षा 12 में सहयोग प्राप्त जो छात्र/छात्रायें बोर्ड परीक्षा 75 प्रतिशत या अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण होंगे उनमें से अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले दो छात्र/छात्राओं को उच्चतर पढ़ाई के लिए भी फिलहाल एक वर्ष के लिए यथासम्भव आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाएगा। वर्तमान सत्र में दो छात्राओं को यह सहयोग दिया जा रहा है।

संवेदनशील महानुभावों से विशेष अनुरोध – ऐसे मान्यता-प्राप्त विद्यालयों में इस योजना का अधिक से अधिक प्रचार करें जहाँ गरीब तथा अतिगरीब बच्चे अधिक संख्या में पढ़ते हों। उनमें से मेधावी बच्चों को इस योजना का लाभ दिलाने हेतु चुनाव कराने में शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ की सहायता करें। कम से कम एक बच्चे की शिक्षा पर एक सत्र में व्यय होने वाली धनराशि (1200 रु. अथवा 1800 रु. अथवा 2000 रु.) समिति के शिक्षा सहायता कोष में दान करें ताकि आपके सहयोग से कम से कम एक बच्चा शिक्षित हो सके। भावना से कक्षा 12 में सहयोग प्राप्त जो छात्र/छात्रायें बोर्ड परीक्षा 75 प्रतिशत या अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण हो उन्हें उच्चतर पढ़ाई के लिए कम से कम एक वर्ष के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करने का संकल्प भी लें। अपने अन्य सक्षम परिजनों तथा इष्ट मित्रों को भी इस पुण्य कार्य में यथा-सामर्थ्य सहयोग देने हेतु प्रेरित करें।

विनोद कुमार शुक्ल	राम लाल गुप्ता	जगत बिहारी अग्रवाल
अध्यक्ष	महासचिव प्रशासन	महासचिव (कार्यान्वयन)
मो.: 09335902137	मो. 09335231118	मो. 9450111425

आर.टी.आई. प्रकोष्ठ

अपने सातवें वार्षिक महाधिवेशन में लिए गए निर्णय के अनुरूप भावना ने आर.टी.आई. प्रकोष्ठ का गठन किया है। यह प्रकोष्ठ सूचना का अधिकार कानून का सार्थक एवं सकारात्मक उपयोग करके सरकारी तंत्र की उपेक्षा के कारण जनसाधारण को हो रही कठिनाइयों को दूर कराने का गम्भीर प्रयास करता है। यह प्रकोष्ठ सरकारी तंत्र से पीड़ित लोगों की निजी समस्याओं का समाधान कराने का भी प्रयास करता है। सदस्यों से अनुरोध है कि वे आर.टी. आई. प्रकोष्ठ की जानकारी में ऐसे सार्वजनिक हित के मसले लायें जिनका समाधान सूचना का अधिकार कानून का उपयोग करके सम्भव प्रतीत होता हो। इस प्रकोष्ठ के गठन की जानकारी अधिक से अधिक लोगों को दें तथा उन्हें प्रेरित करें कि वे अपने व्यक्तिगत प्रकरण भी प्रकोष्ठ के समक्ष प्रस्तुत करें ताकि उनका समाधान कराने हेतु प्रकोष्ठ प्रयास कर सके। केन्द्र सरकार के अधीनस्थ विभागों से सम्बन्धित प्रकरणों की द्वितीय अपील केन्द्रीय सूचना आयोग, दिल्ली में दायर की जाती है। उसके लिए भावना की एन.सी.आर. शाखा के सचिव, श्री अमरेश चन्द्र माथुर, सहर्ष अपनी ओर से यथासम्भव सहयोग प्रदान करेंगे। उनका सम्पर्क विवरण है : पता–6/104, चिरंजीव विहार, गाजियाबाद –201002 (फोन 0120–2761874, 09868342451) ई–मेल– amresh.mathur1@gmail.com

भावना संदेश – विज्ञापन दरें

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति द्वारा अनवरत किये जा रहे महायज्ञ में हम आपसे सहयोग की अपेक्षा करते हैं। समिति एक त्रैमासिक पत्रिका 'भावना-संदेश' का नियमिति प्रकाशन करती है। इस पत्रिका में कृपया अपना विज्ञापन देकर समिति को आर्थिक सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें। इस सहयोग से आप भी लाभान्वित होंगे क्योंकि इस पत्रिका के माध्यम से आपका संदेश अनेकों लोगों तक पहुंच सकेगा। विज्ञापन की दरें निम्नवत् हैं :-

1.	पूरा पृष्ठ रंगीन (चार रंगों में)	–	रु. 5000.00
2.	पूरा पृष्ठ रंगीन (दो रंगों में)	–	रु. 3000.00
3.	पूरा पृष्ठ श्वेत-श्याम	–	रु. 2000.00
4.	आधा पृष्ठ श्वेत-श्याम	–	रु. 1000.00
5.	चौथाई पृष्ठ श्वेत-श्याम	–	रु. 500.00

अनुरोध है कि विज्ञापन सामग्री सहित अपना चेक अथवा बैंक-ड्राफ्ट शीघ्रातिशीघ्र मेरे पास भेज दें। चेक अथवा बैंक-ड्राफ्ट भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (BHARTIYA VARISHTHA NAGARIK SAMITI) के नाम तथा लखनऊ स्थित किसी बैंक पर देय होना चाहिये। **जगत बिहारी अग्रवाल,** महासचिव (प्रशासन)

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्माद परिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।। (श्री गीता-२/२७)

जो जन्मा, हो नष्ट वह, नष्ट होय उत्पन्न।
नहीं उपाय इस क्रम का, व्यर्थ होय अवसन्न।।

लखनऊ के प्रसिद्ध शल्यचिकित्सक, पूर्व मेयर, हँसमुख, मृदुभाषी, मिलनसार, पर-दुःखकातर, प्रसिद्ध समाज सेवी एवं भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) को सदैव अपना आशीर्वाद प्रदान करने वाले, उसके मार्गदर्शक एवं संरक्षक डॉ. सतीश चन्द्र राय जी का निधन २८ अगस्त २०१६ को हो गया है। उनके निधन से सम्पूर्ण भावना परिवार न केवल दुखी है बल्कि स्वयं को दिशाहीन सा महसूस करने लगा है। प्रभु के विधान पर किसी भी शक्ति का जोर न होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति, परिवार अथवा समाज को केवल शोकसंतप्त होकर भी धैर्य बनाये रखने के अलावा कोई दूसरा विकल्प ही नहीं है। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत राय साहब की आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को इस असीम कष्ट को सहन करने के लिए अद्भुत धैर्य दे।

शोक संतप्त सम्पूर्ण भावना परिवार उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

शिक्षा सत्र 2016-17 में शिक्षा सहायता पाने वाले छात्र/छात्रायें

बाल शिक्षा सदन, दयालपुर, लखनऊ

1	काजल गौतम	श्री खुशी राम	VI

भगवान बख्श सिंह इण्टर कालेज, फैजुल्लागंज, लखनऊ

2	प्रदीप राठौर	श्री राम चरित राठौर	XII
3	सलोनी कश्यप	श्री राम लखन कश्यप	V

भारतीय आदर्श विद्यालय, इन्दिरा नगर, लखनऊ

4	एश्वर्या वर्मा	श्री विजय कुमार वर्मा	II
5	नित्या कटियार	श्री रविन्द्र कुमार कटियार	IV
6	अभिषेक कश्यप	श्री राजेन्द्र प्रसाद कश्यप	V
7	आरती कन्नौजिया	श्री बेचे लाल कन्नौजिया	VII

ब्राईट लैण्ड इण्टर कालेज, त्रिवेणी नगर, लखनऊ

8	प्रिया सिंह	श्री राधे श्याम सिंह	XII
9	आश्वल दीक्षित	श्री सत्येन्द्र कुमार दीक्षित	XI
10	रामेन्द्र सिंह	श्री हरद्वारी सिंह	XI
11	इन्द्र मोहन यादव	श्री मंगरू प्रसाद यादव	IX
12	गरिमा रावत	स्व. विष्णु कुमार	V
13	विभव शुक्ला	श्री राजेश शुक्ला	V
14	तरन्नुम खातून	श्री मो. इमरान अंसारी	VII
15	उन्नेजा सिद्दिकी	श्री असद अहमद सिद्दिकी	II
16	हर्षित वर्मा	श्री राम रूप वर्मा	VIII

कैरियर कान्वेन्ट कालेज, विकास नगर, लखनऊ

17.	मोहम्मद फैजल	श्री मोहम्मद शरीफ	XII
18.	आदर्श आर.कृष्णन	श्री रमेश कृष्णनन	X
19.	सागर नाथ राउल	प्रशान्त कुमार राउल	X
20.	सुधान्शु बाजपेई	श्री कृष्ण अवतार बाजपेई	X
21.	लोकेश मिश्रा	श्री बृज किशोर मिश्रा	IV

दयानन्द कन्या इन्टर कालेज, महानगर, लखनऊ

22.	शिवानी कश्यप	श्री राम बली प्रसाद	XI
23.	सिम्मी मौर्या	श्री रमेश मौर्या	X
24.	प्रीति पाल	श्री राम चन्दर पाल	X
25.	कविता रावत	श्री गोकुल रावत	IX
26.	शीलू निषाद	श्री सुन्दर लाल निषाद	IX

द्रोणाचार्य एकेडमी, जानकीपुरम विस्तार, लखनऊ

27.	शिवि दीक्षित	श्री अरुण दीक्षित	IV

फ्लोरेन्स नाइटिन्गेल इण्टर कालेज, त्रिवेणी नगर,

28.	माही शुक्ला	श्री विनोद कुमार शुक्ला	XII
29.	कोमल प्रजापति	श्री सहदेव प्रजापति	XII
30.	कौशिकी पाण्डेय	श्री अनिल कुमार पाण्डेय	XI
31.	श्वेता कश्यप	श्री रमेश कश्यप	XI
32.	प्रियंका गुप्ता	स्व. राजेश कुमार गुप्ता	IX
33.	अब्दुर रहमान	श्री शमी अहमद अंसारी	V
34.	कामिनी प्रजापति	श्री सहदेव प्रजापति	V
35.	शिवम तिवारी	श्री दिलीप कुमार तिवारी	VII
36.	अनवर इलाही	श्री मोहम्मद इसराजा	VII
37.	आरती श्रीवास्तव	श्री रामू श्रीवास्तव	VIII

गार्गी राज रायल एकेडमी, श्री कृष्ण विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ

38.	आशुतोष चौधरी	श्री रामा नन्द	I

के.डी.एस. मेमोरियल पब्लिक स्कूल, दयालपुर, लखनऊ

39.	अर्पित सिंह	श्री भोला सिंह	V

लाल बहादुर सिंह मेमोरियल स्कूल, इन्दिरा नगर

40.	लक्ष्मी गौतम	श्री रंजीत गौतम	XII
41.	अलंकार निगम	श्री प्रमोद कुमार निगम	IX
42.	ज्योति कुमारी	श्री धर्मेन्द्र गौतम	III

लखनऊ एकेडमी हाईस्कूल, त्रिवेणी नगर, लखनऊ

43.	उजैरा	श्री सैयद ग्यास अहमद	III
44.	कृष्णा कश्यप	श्री दिलीप कुमार कश्यप	VIII
45.	राहुल कनौजिया	श्री राकेश कनौजिया	I
46.	आरती शर्मा	श्री बलराम शर्मा	II
47.	निधि विश्वकर्मा	श्री राजेश विश्वकर्मा	IV
48.	आशी सोनकर	श्री बाबी सोनकर	V

महामना मालवीय विद्या मंदिर, गोमती नगर, लखनऊ

49.	अर्पित विश्वकर्मा	श्री हरी प्रकाश विश्वकर्मा	IX
50.	मुक्तेश्वर उपाध्याय	श्री रमा शंकर उपाध्याय	X
51.	अनुराग मौर्या	श्री जय सिंह	IX
52.	आयुषि सिंह	श्री सुशील कुमार सिंह	III
53.	आलोक यादव	श्री विभुति यादव	IV
54.	रजत वर्मा	श्री मुकेश वर्मा	V
55.	खुशी उपाध्याय	श्री कृष्ण चन्द्र उपाध्याय	VI
56.	विधि श्रीवास्तवा	श्री विवेक श्रीवास्तवा	VII

57. विश्वराज सिंह	श्री राम सिंह	VIII
58. मोहित यादव	श्री छोटे बाबू	V
59. नेहा कश्यप	श्री राम कुमार कश्यप	VIII

मालती देवी मेमोरियल पब्लिक स्कूल, जानकीपुरम

60. आयुषि पाण्डे	श्री प्रदीप कुमार पाण्डे	XI

नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइन्ड, गोमती नगर

61. अपूर्वा	श्री राजेश बाल्मिकी	UKG
62. रुबी रावत	श्री लाल बहादुर रावत	IX
63. आशुतोष यादव	श्री राम गोपाल यादव	VII
64. शाहिद मियाँ	श्री इरशाद मियाँ	V
65. तनिष्का गौतम	श्री बिजेन्द्र गौतम	II
66. तौफिक	श्री अब्दुल कलाम	VI
67. अनुराग शुक्ला	श्री नारायण शुक्ला	VI
68. शेखर गुप्ता	स्व. श्री राम शंकर गुप्ता	IX
69. रीतेश यादव	श्री शिव राम यादव	IV
70. मोहम्मद अरमान	श्री मोहम्मद सलीम	I
71. अंकिता गुप्ता	श्री कैलाश गुप्ता	I
72. तनु राजपूत	श्री चन्द्रिका प्रसाद	III
73. विवेक सैनी	श्री शिव प्रसाद सैनी	II

नवचेतना पब्लिक स्कूल, इन्दिरा नगर, लखनऊ

74. प्रान्शी माथुर	श्री नवीन चन्द्र माथुर	II
75. अंकित तिवारी	श्री रमेश तिवारी	IV
76. विशाल	श्री तुला राम	VIII

न्यू बाल विद्या मंदिर, अलीगंज, लखनऊ

77. पीयुष सोनी	श्री मुकेश सोनी	IX
78. शिवानी कश्यप	श्री संजय कश्यप	IV
79. वर्षा	श्री राम शंकर	IV
80. संस्कार कश्यप	श्री दिलीप कश्यप	IV
81. रोनित कश्यप	श्री दिलीप कश्यप	III

प्रज्ञा पब्लिक स्कूल, सर्वोदय नगर, लखनऊ

82. अन्नू कश्यप	श्री सिद्धनाथ कश्यप	III
83. यश सिंह	अरूण सिंह	II
84. दानिया इदरिसी	श्री सन्नाउल्ला इदरिसी	VI
85. अल्लसदीना	श्री सब्बीर अली	VII

रानी लक्ष्मी बाई मेमोरियल स्कूल, सेक्टर-सी, विकास नगर, लखनऊ

86. आशीष सिंह नेगी	श्री प्रेम सिंह नेगी	XII
87. अंकित सिंह नेगी	श्री प्रेम सिंह नेगी	IX

रानी लक्ष्मी बाई मेमोरियल स्कूल, विकास नगर (चाँदगंज)

88. कृष सोनकर	श्री सुशील सोनकर	XI

रानी लक्ष्मी बाई मेमोरियल स्कूल, पटेल नगर, लखनऊ

89. वाचस्पति पाठक	श्री प्रकाश नारायण पाठक	VI

सेन्ट स्टीफन एकेडमी, चिनहट, लखनऊ

90. प्रियांशु मौर्या	श्री बलराम मौर्या	VII

सरस्वती शिशु मन्दिर, इन्दिरा नगर, लखनऊ

91. आरूष कुमार	श्री राजेश सिंह	III
92. संचित नरेश यादव	श्री राम नरेश यादव	III
93. अनन्या	श्री अरविन्द कुमार यादव	IV
94. बबलू रावत	श्री राम अवतार रावत	IV
95. ज्योति यादव	श्री साहब लाल यादव	V
96. तनु बाल्मीकि	श्री गुड्डू बाल्मीकि	V
97. प्रियांशु चौहान	श्री हरी नाथ चौहान	II
98. कृष्ण कुमार	श्री प्रमोद कुमार	II
99. अमित कुमार	श्री विंध्याचल चौहान	III

सरस्वती शिशु मन्दिर, नया गाँव, मॉडल हाउस

100. श्वेता पाल	श्री रघुनन्दन पाल	II
101. हर्षित चौरसिया	श्री सोनू चौरसिया	IV
102. अखिल अवस्थी	श्री विनोद कुमार अवस्थी	VIII

सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज, इन्दिरा नगर

103. आकृति मौर्या	श्री सत्य प्रकाश मौर्या	VI
104. पूजा गुप्ता	श्री राम तेज गुप्ता	XI
105. अखिलेश कुमार	श्री मेवा लाल	XI
106. किर्तिका श्रीवास्तव	श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव	XI
107. अतुल कुमार मिश्रा	श्री राकेश कुमार मिश्रा	IX
108. आकाश कु. यादव	श्री राकेश कु. यादव	IX
109. अर्पिता पाण्डे	श्री अखिलेश चन्द्र पाण्डे	X
110. करण कु.बाल्मीकि	श्री सुरेश कुमार	VIII

सर्वोदय पब्लिक स्कूल, शिवलोक, त्रिवेणी नगर

111. प्राची कश्यप	श्री विमलेश कुमार कश्यप	IV
112. प्रिया मानसी	श्री राजेश कुमार	V

शान्ति पब्लिक स्कूल, भरत नगर, लखनऊ

113. निखिल मौर्या	श्री इन्द्रजीत मौर्या	V
114. आयुषी मौर्या	श्री संतोष कुमार मौर्या	VII
115. जितेन्द्र कुमार	श्री चेत राम रावत	VIII

सेंट बेसिल कान्वेन्ट स्कूल, शिव नगर, इन्दिरा नगर

116. रोचक कश्यप	श्री राम चन्दर कश्यप	VI

वर्धमान विद्या मंदिर इण्टर कालेज, इन्दिरा नगर

117. अनुराधा आर्या	श्री राम आधार आर्या	X
118. पवन निषाद	स्व. राम नरेश	V
119. मोहनी मौर्या	श्री मुख लाल मौर्या	VII
120. अंकित जायसवाल	स्व. रमेश कुमार	VIII

विजन एकेडमी प्रिदर्शनी कालोनी, सीतापुर रोड, लखनऊ

121. कृष्णा वर्मा	श्री सज्जन वर्मा	II
122. तन्मय दुबे	श्री संतोष दुबे	II
123. यूसुफ मिर्जा	श्री रहीम अहमद	VII

वाई.आर. मोन्टेसरी स्कूल, दीनदयाल नगर, खदरा

124. शिवांगी कनौजिया	श्री राजेन्द्र कनौजिया	II
125. शुभम कनौजिया	श्री राजेन्द्र कनौजिया	III

योगिता मान्टेसरी स्कूल, भरत नगर, महिबुल्लापुर

126. अलफिसा बानो	श्री मोहम्मद असलम	VII
127. अराधना वर्मा	स्व. अंगेश वर्मा	VIII
128. विशाल सिंह	श्री हरनाम सिंह	I
129. तनु सिंह	श्री दीपू सिंह	IV
130. नीरज कुमार	श्री जगदीश दास	V

स्नातक पाठ्यक्रम में शिक्षा सहायता पाने वाली छात्रायें :-

लखनऊ विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय रोड, लखनऊ

छात्र/छात्रा	अभिभावक	कक्षा
1. कु. ईशा सिंह	श्री राज कुमार सिंह	बी.एससी.I

महिला विद्यालय, अमीनाबाद, लखनऊ

2. कु. शिखा वर्मा	श्री राम कुमार वर्मा	बी.एससी.I

कु. ईशा सिंह

कु. शिखा वर्मा

कु. ईशा सिंह ने इण्टरमीडिएट परीक्षा में 455/500 अंक प्राप्त किए। कु. शिखा वर्मा ने इण्टरमीडिएट परीक्षा में 424/500 अंक प्राप्त किए। इन दोनों छात्राओं को ''भावना'' परिवार की बधाइयां एवं शुभाशीष।

जे.बी. अग्रवाल
महासचिव (प्रशासन)

पत्रांक : भावना/प-010/अ/526 दिनांक : 14 अगस्त, 2016

कार्यालय ज्ञापन

प्रबंधकारिणी की 06 अगस्त, 2016 को सम्पन्न हुई बैठक के लिए गए निर्णय के अनुपालन में समिति की फरवरी 2016 तक संशोधित नियमावली के नियम 11.1 तथा नियम 11.6 में निहित प्राविधानों के अनुसार समिति के पूर्व निर्गत कार्यालय ज्ञापन संख्या भावना/प-010/अ/500 दिनांक 25 मार्च, 2016 तथा भावना/प-010/अ/519 दिनांक 17 जून 2016 को निम्नवत् संशोधित किया जाता है।

1. सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ के सदस्य श्री विनोद चन्द्र गर्ग (बी-38/465/विशिष्ट) को महानगर तथा आसपास के क्षेत्र के प्रभार से मुक्त किया जाता है। वे राजेन्द्र नगर, मोतीनगर, आर्यनगर, ऐशबाग तथा आसपास के क्षेत्र के प्रभारी यथावत बने रहेंगे।

2. श्री राजेन्द्र कुमार चुघ (आर-55/428) को स्थाई आमंत्री के रूप में प्रबंधकारिणी में मनोनीत किया जाता है। वे तत्काल प्रभाव से सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ के सदस्य की हैसियत से महानगर तथा आसपास के क्षेत्र के प्रभारी होंगे।

जगत बिहारी अग्रवाल
महासचिव (प्रशासन)

भावना का स्थापना दिवस

श्री विनोद कुमार शुक्ल- अध्यक्ष, भावना
अमरनाथ-सम्पादक, भावना संदेश

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) का 17वाँ स्थापना दिवस 20 अगस्त 2016 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। भावना के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार शुक्ल जी की अध्यक्षता में शुरू हुए इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे न्यायमूर्ति श्रीनाथ सहायजी। अन्य अतिथियों में जस्टिस श्री सुधीर चन्द्र वर्मा जी, वरिष्ठ नागरिक समिति के अध्यक्ष श्री श्याम पाल सिंह जी एवं कारपोरेट जगत की प्रसिद्ध हस्ती राधाकृष्ण ग्रुप के मुख्य महा-प्रबन्धक श्री अजित कुमार गुप्त जी। अतिथियों एवं मंचस्थ पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात भावना के संकल्प गीत के सामूहिक गायन से इस कार्यक्रम का श्री गणेश किया श्री देवकी नन्दन शांत, श्री उदयभान पाण्डेय, श्री अशोक मेहरोत्रा एवं श्री सुशील कुमार शर्मा जी ने।

भावना के अध्यक्ष द्वारा भावना के क्रियाकलापों पर प्रकाश डालते हुए सभी सदस्यों/अतिथियों से इसे बल प्रदान करने की अपील की गई। भावना के महासचिव (प्रशासन) श्री जगत बिहारी अग्रवाल द्वारा निर्बल वर्ग के शिक्षार्थियों को शिक्षा सहायता योजना के तहत सहायता राशि के चैक वितरित किए गए। लखनऊ स्थित 32 स्कूलों के 130 छात्र-छात्राओं के लिए उनके विद्यालयों को सहयोग राशि की पहली किश्त के ये चेक सौंपे गए। इनमें कक्षा 8 तक के 92, कक्षा 9-10 के 21 तथा कक्षा 11-12 के 17 बच्चे सम्मिलित थे। इसी अवसर पर श्रीमती अर्चना गोयल एवं श्री मनोज कुमार गोयल द्वारा इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए 92 छात्र छात्राओं को स्टेशनरी का एक-एक पैकेट उपहार स्वरूप दिया गया। प्रत्येक पैकेट में क्लिप बोर्ड, कापी, पेन्सिल, रबर, स्केल, शार्पनर, जेल पेन व स्केच पेन था। ब्लाइंड स्कूल से आए 12 छात्र-छात्राओं के भोजन के स्टील थाल तथा सभी स्कूलों से सर्वाधिक अंक पाये 5 छात्र-छात्राओं को स्टील टिफिन बाक्स भी उक्त दम्पत्ति द्वारा भेंट किए गए। कक्षा 10 व 11 के 90 प्रतिशत से अधिक अंक पाने वाले 17 मेधावी छात्र-छात्राओं को घड़ियाँ उपहार स्वरूप की गई। इन घड़ियों का वितरण डॉ. नरेन्द्र देव श्री जे.एन. सरीन, श्री जगत बिहारी अग्रवाल एवं श्री सुशील शंकर सक्सेना जी द्वारा सामूहिक रूप से दिया गया। इनके द्वारा ही कक्षा 12 के बच्चों को कैलकुलेटर भी दिए गए। सभी छात्र-छात्राओं के नाश्ते की व्यवस्था महिला प्रकोष्ठ की सदस्य श्रीमती श्याम बाला सिंह व श्रीमती बीना सक्सेना द्वारा की गई। डॉ. नरेन्द्र देव द्वारा स्वरचित पुस्तक **स्वस्थ रहने के सरल उपाय**-सभी बच्चों को दी गई।

इस अवसर पर उपस्थित **राधाकृष्णा ग्रुप** के मुख्य महाप्रबन्धक श्री अजित कुमार गुप्ता जी द्वारा सभी छात्र-छात्राओं को खूबसूरत टिफिन बाक्स उपहार में वितरित किए। साथ ही यह घोषणा भी की गई कि भावना के वरिष्ठ नागरिक उनके आम्रपाली वाटर पार्क में वर्ष में एक बार निःशुल्क मनोरंजन कर सकते हैं। उनके आने-जाने की व्यवस्था आर. के. ग्रुप करेगा। **भावना** के सभी उपस्थित अतिथियों एवं सदस्यों को भी एक-एक पावर बैंक भी उपहार में दिया। सभी उपस्थित छात्र-छात्राओं का सामूहिक फोटो भी लिया गया। उपस्थित अतिथियों ने इस कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए, वर्तमान में समाज की आवश्यकता बताया। यद्यपि यह कार्यक्रम **भावना** द्वारा ही आयोजित किया जाता है लेकिन इस योजना की परिकल्पना, संरचना और भौतिक क्रियान्वयन इस समिति के महासचिव (प्रशासन) **श्री जगत बिहारी अग्रवाल** द्वारा की जाती रही है।

मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री श्रीनाथ सहाय जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि वरिष्ठ नागरिकों की संस्थाओं के कार्यक्रमों में सामान्यतः या तो उनकी अपनी समस्याओं पर चिन्तन होता है या आध्यात्मिक चिंतन (भावना पहली ऐसी संस्था है जिसके सम्मेलन में जनकल्याण की बात हो रही है। श्री अरविन्द कुमार गोयल ने सभी उपस्थित

सदस्यों/अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री सुशील शंकर सक्सेना, वरिष्ठ उपाध्यक्ष द्वारा उन सभी दानदाताओं को धन्यवाद दिया जिनके सहयोग से यह आर्थिक सहायता देना सम्भव हो सका है।

समूचे कार्यक्रम का शायराना संचालन श्री देवकी नन्दन शांत जी द्वारा किया गया। भोजन काल में भीड़ से बचने के लिए पहले बच्चों व महिलाओं को भोजन पर भेजा गया। प्रेक्षागृह में उपस्थिति शेष पुरुष सदस्यों के मनोरंजन हेतु एक संक्षिप्त काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें श्री अशोक मेहरोत्रा श्री देवकी नन्दन शांत, श्री उदय भान पाण्डेय, श्री कृष्ण अखिलेश एवं अमरनाथ ने अपनी स्वरचित रचनाओं को प्रस्तुत किया। श्री सुशील कुमार शर्मा जी द्वारा श्री अजय प्रसून का देशभक्ति पर आधारित गीत - **एक बार नहीं, दो बार नहीं, हम शत् बार नमन करते हैं - का सुमधुर गायन किया।**

स्नातक कक्षा में प्रवेश पाने वाली दो कन्या-कु. ईश सिंह व कु. शिखा वर्मा को बी.एससी. (प्रथम वर्ष) की शिक्षा के लिए भावना के अध्यक्ष श्री वी.के. शुक्ला की धेवती कु. आँचल भारद्वाज (आस्ट्रेलिया) द्वारा प्रत्येक को छः हजार के चेक दिलवाये गए। इन दो छात्राओं द्वारा इंटरमीडिएट में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने के कारण स्नातक कक्षा में शिक्षा सहायता देने का संकल्प लिया गया।

HON'BLE JUSTICE MR. SRI NATH SAHAI

Graduated in Law. Born on August 20th, 1933. Entered Government Services as Additional Munsif in July, 1957. Worked as Additional Munsif, Munsif, Additional Civil Judge, Civil Judge, Civil & Session Judge from January, 1971 to December 1973. Deputy Legal Remembrancer to Government of Uttar Pradesh from December, 1973 to 1977. Special Assistant/Legal Advisor/Secretary to Governor from 1977 to 1979. Deputy/Joint Legal Remembrancer from 1979 to 1983. District Judge from 1983 to 1986. Secretary Judicial and Legal Remembrancer, Uttar Pradesh, from January 27th, 1986. Appointed Judge in the Allahabad High Court on January 3rd, 1989. Retired on August 20th, 1995.

भावना के क्रिया-कलाप - एक नजर में

०१. वरिष्ठ नागरिकों के हित संरक्षण एवं दुर्बल आय वर्ग परिवार की सेवा तथा उनके बच्चों को शिक्षा सहायता प्रदान करने हेतु भावना ने निम्नलिखित प्रकोष्ठों की स्थापना कर प्रत्येक के लिए एक एक संयोजक/सचिव बनाया हुआ है।

क्रम	प्रको ठ का नाम	संयोजक/सचिव	सम्पर्क फोन
०१	सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ	श्री रमाकांत पाण्डेय	९८३९३९५४३९
०२	वाह्य सम्पर्क प्रकोष्ठ	इं. सतपाल सिंह	९८३९०४३४५८
०३	ग्राम्यांचल एवं निर्धन जन सेवा प्रकोष्ठ	इं. देवेन्द्र स्वरूप शुक्ल	९१९८०३८८८९
०४	विधि तथा आर.टी.आई प्रकोष्ठ	डॉ. वीरेन्द्र बहादुर सिंह	९४१५०४८५३७
०५	शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ	इं. जगमोहन लाल जायसवाल	९४५००२३१११
०६	अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ	इं. अमर नाथ	९४५१७०२१०५
०७	संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ	इं. मनोज कुमार गोयल	९३३५२४८६३४
०८	भावना रसोई प्रबंधन प्रकोष्ठ	इं. देवेन्द्र स्वरूप शुक्ल	९१९८०३८८८९
०९	सांस्कृतिक कार्य प्रकोष्ठ	इं. देवकी नन्दन शांत	९९३५२१७८४१
१०.	वैकल्पिक चिकित्सा प्रकोष्ठ	डॉ.नरेन्द्र देव	९४५१४०२३४९

११.	पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ	श्री पाल प्रवीण	९९१९२३८१८९
१२.	डे-सेंटर प्रबंधन प्रकोष्ठ	डॉ.श्रीराम सिंह	९४१५०९३६०६
१३.	प्रशिक्षण,गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें	डॉ.छेदा लाल वर्मा	९९१९६६०३१७
१४	महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ	श्रीमती अर्चना गोयल	९३८९१९३७१५

०२. शिक्षा सहायता योजना- श्री जगत बिहारी अग्रवाल के सद्प्रयासों से वर्ष २००७-०८ से शुरु हुई इस योजना के तहत २०१५-१६ तक लखनऊ के ३७ मान्यता प्राप्त विद्यालयों के ७६२ छात्र-छात्राओं को रु.१०,०१,०००/- का आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा चुका है। वर्तमान सत्र २०१६-१७ में भी २० अगस्त २०१६ को ३२ विद्यालयों के १३० छात्र-छात्राओं को रु. १,८२,२०० धनराशि के चैक वितरित किए गए।

०३.ग्राम्यांचल एवं निर्धनजन सेवा- विगत १२ वर्षो से प्रत्येक शीत ऋतु के प्रारम्भ में निर्धन व असहाय लोगों को नए ऊनी कम्बल व पुराने किन्तु उपयोगी कपड़ों का वितरण किया जा रहा है। वर्ष २०१५-१६ में भी निम्न प्रकार कम्बल वितरित किए गए।

दिनांक	वितरण स्थान		कम्बल वितरण संख्या
२०.१२.२०१५	ग्राम भगवती पुर,	ब्लाक- बख़्शी का तालाब, लखनऊ	१००
२७.१२.२०१५	ग्राम बहरौरा,	ब्लाक-माल, लखनऊ	६४
२६.१२.२०१५	ग्राम निधारी,	नोयडा जिला गौतम बुद्धनगर	५०
०५.०१.२०१६	ग्राम कनवारी,	इन्दिरा पुरम् जिला गाजियाबाद	५०
०६.०१.२०१६	प्रियदर्शिनी कालोनी	लखनऊ	५०
१३.०१.२०१६	ग्राम भौली,	ब्लाक- बख़्शी का तालाब, लखनऊ	६२
१६.०१.२०१६	इंटौजा	लखनऊ	५०
२३.०१.२०१६	ग्राम नबी पनाह	ब्लाक-मलिहाबाद लखनऊ	७२
२६.०१.२०१६	ग्राम अतरौली,	ब्लाक-भरावन जिला हरदोई	१००
०३.०२.२०१६	ग्राम बगहा	ब्लाक- बख़्शी का तालाब, लखनऊ	१००

कुल ७५८ कम्बलों का वितरण जिनका मूल्य रु.१८६५००/-था। इसके अतिरिक्त २६.०१.२०१६ को अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र औरंगाबाद लखनऊ पर ८८०० रुपये मूल्य के ४४ नए ऊनी स्वेटरों का वितरण भी किया गया।

०४.भावना का सहयोग एवं सम्पर्क क्षेत्र-

(अ) **सम्बद्धता-** भावना निम्नलिखित संघों/महासंघों से सम्बद्ध है-

All India Senior Citizens Confederation (**AISCCON**), वरिष्ठ नागरिक कल्याण महासमिति उ.प्र., एवं वरिष्ठ नागरिक महासमिति उ.प्र.

(ब) **भावना का अंतरंग समन्वय-** WorldU3A, U3AAsiaPacificAlliance, Helpage International, HelpageIndia, HelpYourNGO, Senior Citizens Confederations of **NEPAL, DELHI, UTTARA KHAND**, Senior Citizens Associations of **CHANDIGARH, DAMAN**, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद।

(स) **भावना को विभिन्न संस्थाओं का सहयोग**

१.**अवधअस्पताल** एवं हार्ट सेन्टर सिंगार नगर,आलमबाग लखनऊ, २.एस.सी.त्रिवेदी मेमोरियल बाल चिकित्सालय लखनऊ, ३.सुधा डैन्टल क्लीनिक लखनऊ, ४. हेल्पेज इण्डिया

(द) **भावना को अथवा उसके द्वारा विभिन्न संस्थाओं को परोक्ष सहयोग/समन्वय की भागीदारी-**

महामना मालवीय मिशन गोमतीनगर लखनऊ, स्वास्थ्य संवर्धन केन्द्र इन्दिरानगर लखनऊ, सच्चिदानंद निष्काम सेवा ट्रस्ट

लखनऊ, कल्याणम् करोति लखनऊ, चिन्मय वानप्रस्थ संस्थान पुणे महाराष्ट्र, रिलायन्स मनी लखनऊ, कार्तिकेय इन्वेस्टमेंट लखनऊ, Tata Institute Of Social Sciences Mumbai,

(इ) भावना से सम्बद्ध संस्थायें- १. मिरर फाउण्डेशन्स फॉरसेल्फ इम्प्रूवमेंट एण्ड नेचुरल लिविंग, लखनऊ २.आस्था सेन्टर फॉर जिरियाट्रिक मेडीसिन्स-पॉलिएटिव केयर हास्पिटल एण्ड हास्पाइस एण्ड सोशल वेलफेयर सोसाइटी, महानगर लखनऊ, ३.स्वास्थ्य एवं जड़ी बूटी संस्थान कल्याणपुर लखनऊ, ४.विद्युत पेंन्सनर्स परिद्वद लखनऊ ५. वेटरन सहायता समिति लखनऊ, ६. कॉमर्सियल टैक्स रिटा.आफीसर्स एसो. लखनऊ, ७. परमहंस योगानंद सोसाइटी फॉर स्पेशल अनफोल्डिंग एण्ड मोल्डिंग (PYSSUM). ८. श्री तारीफ़ सिंह धर्मार्थ ट्रस्ट, जिला शामली,उ.प्र., ९. रुद्राक्ष वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति,बगहा, लखनऊ १०. भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति(ग्रामीण) भौली, लखनऊ, ११. पलाश ग्रामीण वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति भगवतीपुर, लखनऊ।

(इ) भावना की शाखायें- एन.सी.आर क्षेत्र गाजियाबाद, उन्नाव, सोनभद्र

(इ) भावना के क्रियाकलापों की जानकारी एवं संचार माध्यम- भावना संदेश त्रैमासिक नियमित पत्रिका, **U3A**पत्रिका, **AISCCON News, World Sign Post, E-mail: bhavanasindia.@gmail.com, facebook page- Bharatiya VarishthaNagarik Samiti, website: www.bhavanaindia.org, Bhawana google group: bhawana-lucknow@googlegroups.com** भावना की प्रबंधकारिणी के सभी पदाधिकारियों एवं भावना द्वारा गठित विभिन्न प्रकोष्टों से जुड़े सचिव व सदस्यों के सम्पर्क फोन्स।

(इ) भावना द्वारा साहित्य प्रकाशनः १. भावना संदेश त्रैमासिक पत्रिका वर्ष २००१ से नियमित, २.उपहार- आध्यात्मिक पुस्तक वर्ष-२००८, सच्चिदानंद सुधा, आध्यात्मिक पुस्तक वर्ष-२००९, भावना के प्रसून आध्यात्मिक पुस्तक वर्ष- २०१०, स्वस्थ रहने के सरल उपाय (लघु स्वास्थ्य पुस्तिका) वर्ष २०१३, भावनांजलि आध्यात्मिक पुस्तक वर्ष-२०१५

(फ) भावना द्वारा वरिष्ठ नागरिकों का सार्वजनिक अभिनन्दनः

१.	न्यायमूर्ति श्री द्वारिका नाथ झा	२१.०८.२००५
२.	श्री गंगारत्न पाण्डेय (साहित्यकार)	०२.०२.२००६
३.	डॉ.परमानंद जड़िया (साहित्यकार)	०९.१२.२००७
४.	श्री विजयशंकर शुक्ल (साहित्यकार)	१६.११.२००८
५.	श्री जयप्रकाश चन्द्र (समाजसेवी)	२२.११.२००९
६.	स्वामी पूर्णानंद जी (अभियंता एवं समाजसेवी)	०५.१२.२०१०
७.	श्री श्रीशरण मिश्र, डॉ. उमा शशि मिश्र श्री जयपाल सिंह, श्री राम बाबू शुक्ल	०४.१२.२०११
८.	श्री कैलाश चन्द्र मिश्र	१८.११.२०१२
९.	डॉ.रामाश्रय सविता (साहित्यकार)	१४.१२.२०१४

अँधेरे जब जरा सी रौशनी से
भाग जाते हैं
तो फिर क्यों लोग डरकर,
जिन्दगी से भाग जाते हैं?
हमें मालूम है फिर भी नहीं
हम खिलखिला पाते
बहुत से रोग तो केवल,
हँसी से भाग जाते हैं।
- ओमप्रकाश यती

भावना संदेश और साक्षात्कार श्रंखला

भावना समिति अपनी पत्रिका भावना संदेश के माध्यम से ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों का जो समाज सेवा के किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हैं, का साक्षात्कार अपने सम्पादन प्रकोष्ठ के माध्यम से कराता आ रहा है ताकि उनसे प्रेरणा लेकर भावना के कार्यकर्ता और अधिक उत्साह से सामाजिक कार्यों में गतिशील हों। अब तक लिए गए साक्षात्कारों का विवरण इस प्रकार है।

क्रम	साक्षात्कार लिए गए विभूति का नाम	भावना संदेश के किस अंक में प्रकाशित

०१.	न्यायमूर्ति श्री कमलेश्वर नाथ	जुलाई-२०११
०२.	स्वामी पूर्णानंद जी	जनवरी-२०१२
०३.	इं.के.पी.वार्ष्णेय	अप्रेल-२०१२
०४.	श्री राकेश कुमार मित्तल IAS	जुलाई-२०१२
०५.	श्री राज नारायण कपूर	अक्तूबर-२०१२
०६.	डा.बैजनाथ सिंह	जनवरी-२०१३
०७.	इं.एस.सी.गोविल	अप्रेल-२०१३ (संस्थापक-आभा मानव मन्दिर, वृद्धाश्रम,मेरठ)
०८.	डॉ. निर्मला सक्सेना	अप्रेल-२०१३ (संचालिका वृद्धमहिला आश्रम, वीनस विकास संस्थान,लखनऊ)
०९.	पद्मश्री डॉ.एस.सी.राय, पूर्व मेयर लखनऊ	जुलाई-२०१३
१०.	डॉ.इन्दु सुभाष	जीवन संध्या-स्मारिका, नवम्बर-२०१३ (संस्थापिका-पति परिवार कल्याण समिति, लखनऊ)
११.	डॉ.अभिषेक शुक्ला	अप्रेल-२०१४ (संचालक आस्था अस्पताल, लखनऊ)
१२.	श्री ए.के.सिंह, निदेशक हेल्पेज लखनऊ	अक्तूबर-२०१४
१३.	न्यायमूर्ति करन लाल शर्मा	अक्तूबर-२०१५
१४.	न्यायमूर्ति सुधीर चन्द्र वर्मा	अप्रेल-२०१६
१५.	श्री ओम नारायण, निदेशक कोषागार (से.नि.)	जुलाई-२०१६

भावना संदेश के समयबद्ध प्रकाशन हेतु विशेष अनुरोध

भावना संदेश प्रत्येक वर्ष में चार बार प्रकाशित होंता है। माह जनवरी, अप्रेल, जुलाई एवं अक्तूबर। स्वाभाविक ही है कि इसके पाठक सम्बन्धित माह के अंक को उस अंकित माह के प्रारम्भ में ही चाहेंगे। इस प्रक्रिया को पूरी करने के लिए भावना के सभी पदाधिकारियों/आजीवन/विशिष्ट सदस्यों से विशेष अनुरोध कि वे अपनी वांछित प्रकाशन सामग्री, लेख, विचार, सम्मतियाँ, प्रबंधकारिणी बैठकों की कार्यवाही-रिर्पोट, नए सदस्यों की सूची, दानदाताओं की सूची, सभी प्रकोष्ठों का अद्यतन कार्यवाही आख्या, News Update, फोटोग्राफ आदि निम्नलिखित घोषित समयावधि तक सम्पादन प्रकोष्ठ को उपलब्ध कराने की कृपा करें। चूँकि प्रकाशन सामग्री का संपादन, कम्पोंजिंग, मुद्रण एवं बाइन्डिग आदि में लगभग एक माह का समय लगता है अतः इस प्रक्रिया में आप सभी का सहयोग अति आवश्यक है।

भावना संदेश का अंक	प्रकाशन सामग्री प्राप्त होने की अन्तिम तिथि
जनवरी अंक	३० नवम्बर
अप्रेल अंक	२८ फरवरी
जुलाई अंक	३० मई
अक्तुबर अंक	३० अगस्त

अगर उक्त तिथि के बाद कोई भी प्रकाशन सामग्री प्राप्त होती है तो उसके प्रकाशन का कोई भी दायित्व सम्पादन प्रकोष्ठ पर नहीं माना जाए। अगर घोषित तिथि के बाद प्राप्त सामग्री के प्रकाशन की अनिवार्यता समझी जाती है तो सम्पादन प्रकोष्ठ को पत्रिका के बिलम्बित प्रकाशन के लिए उत्तरदायी न माना जाए। आशा सभी सदस्य एवं पदाधिकारीगण सहयोग करेंगे।

कृपया ध्यान दें!

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) से जुड़े सभी ऐसे सदस्य जो साहित्य की किसी भी विधा में रचना करते हों, के बारे में **भावना संदेश** के आगामी (जनवरी-17) अंक में एक परिचयात्मक परिशिष्ट प्रकाशित किया जाएगा। इसमें उस साहित्यकार का फोटो, संक्षिप्त परिचय तथा एक रचना का प्रकाशन होगा। प्रत्येक साहित्यकार को एक पृष्ठ आवंटित

है, तदानुसार अपनी रचना व परिचय के कलेवर का समायोजन स्वयं जान लें। सम्बन्धित साहित्यकार के निजी परिवार का सदस्य भी इस परिशिष्ट का अतिथि साहित्यकार बन सकता है चाहे वह स्वयं भावना का सदस्य नहीं हो। परिचय में कृपया अपना नाम, जन्मतिथि, साहित्यिक विधायें जिनमें आप रचना करते हैं, तथा प्रकाशित कृतियों के नाम दें। कृपया प्रकाश्य कृतियों के नाम देने से बचें। अगर आप किसी संस्थान अथवा सरकारी एजेन्सी द्वारा सम्मानित हैं तो उसका भी विवरण दें।

कृपया यह ध्यान रखें कि वांछित उपरोक्त सूचनायें विलम्बतम नवम्बर 2016 की अन्तिम तिथि तक निश्चित रूप से प्राप्त हो जानी चाहिए। आप अपनी रचना, फोटो व परिचय आदि निम्नलिखित किसी भी एक पते पर भिजवा सकते हैं :-

ई-मेल द्वारा : creativesheebu@gmail.com

डाक द्वारा : अमरनाथ, 401-ए, उदयन-।, बंगला बाजार, लखनऊ-226002 मोबाइल : 9451702105

Health Cards with History of disease and treatment for all

The Delhi government is planning to issue health cadrs to all citizens. Thus, they claim, will treatment and prescription details. Tenders have already been issued for selection of the private concessionaire who will execute the work.

Senior officials in the state health department said the card, Delhi Health ID, will help streamline patient services apart form creating a real time data on disease burden.

The electronic health record of all persons will be collacted through a centralised web-based application. It will be accessible free of cost to all health institutions, either public or private, "Said one of the officials. He added that initially it will be voluntary for private hospitals to utilise the software and after a certain time it can be made compulsory.

"It is a good initiative by the Delhi government. It should have been done much before." said Dr. Amir Ullah Khan, a health economist. (Courtesy : AISCCON News-March 2016)

BHAVANA NCR Conducts Tranining Programme with a Difference

Bhavana NCR Branch successfully conducted 2 1/2 day programme of imparting training to 24 professionals of GAIL (India) Limited in the specialist field of structural repairs and waterproofing from 18th to 20th July 16.

It is win-win for each of the three i.e. GAIL as a PSU company, BHAVANA as a charitable institution and individual members of Bhavana, who delivered lectures in the training programme. May it is remembered that we, membes of Bhavana, are all rich in terms of at least 35-40 yeaers of professional experience besides experience of life time. During our active life, we hardly had time or intentions to share with others. Now at this 3rd age, when we are getting pension, we should our utilise our time for the benefit of society as per our capability.

Let us use BHAVANA as a platform/windo to showcase our sill and experience, for the beneficial use of the society. It would also keep us gainfully engaged and keep ourselves physically and mentally fit.

ईमेल की तरह यूपीआई आईडी : यूपीआई तुरंत ऑनलाइन बैंक पेमेंट करने का एक सिस्टम है। इसके तहत आप जिसे पैसे भेजना चाहते हैं, उनका यूपीआई आईडी आपको पता होना चाहिए। यह ईमेल की तरह होता है। यह आपका नाम या फोन नंबर हो सकता है। मसलन, अगर आपका फोन नंबर 9560000034 है और आपका अकाउंट एसबीआई में है तो आपका यूपीआई आईडी 9560000034@sbi हो सकता है। आप चाहें तो आधार कार्ड नंबर से भी यूपीआई आईडी भी बना सकते हैं।

नवभारत टाइम्स : 01/08/16

भावना संदेश जुलाई, 2016 अंक के प्रकाशन के बाद बने नये भावना सदस्यों की सूची

सदस्यता क्र.- एस-161/749 (वि.स.)
सुरेश कुमार गुप्ता
निदेशक एवं अध्यक्ष, मानसीकॉम कन्सल्टेन्ट्स प्रा.लि.
एस-139 भूतल, ग्रेटर कैलाश-1,
नई दिल्ली-110048 फोनः 011-41631687/09810155484
ई.मेलः suresh@mansycom.com
DOB:14/10/1948 MD: 14/09/1977

सदस्यता क्र.- एस-162/751 (वि.स.)
डॉ. सईद अहमद, नेत्र-रोग चिकित्सक
बी-103, कमसण्डा अपार्टमेन्ट्स, 2, पार्क रोड,
हजरतगंज, लखनऊ-01 फोनः 09838341578
ई.मेलः sayeed_ah@hotmail.com
DOB:01/07/1952 MD:15/07/1979

सदस्यता क्र.- वी-51/753 (वि.स.)
डॉ. वीरेन्द्र बहादुर सिंह
अपर आयुक्त (से.नि.) वाणिज्यकर विभाग उ.प्र.
अब एडवोकेट, हाई कोर्ट/सुप्रीम कोर्ट
2/282, विकास खंड, गोमती नगर, लखनऊ-226010
फोन : 0522-2391220/09415048537
ई. मेलः dr.kalchuri@yahoo.com
DOB:05/08/1951 MD: 20/06/1978

सदस्यता क्र.- आर-93/755 (वि.स.)
रामचन्द्रन सुब्रामनियन
विशेष महानिदेशक (से.नि.), सी.पी.डब्लू.डी.
1553ए, सेक्टर बी-1, वसन्त कुन्ज, नई दिल्ली
फोन : 011-46552485/09818913939
ई.मेलः umamani58@rocketmail
DOB:30/11/1948 MD: 09/06/1976

सदस्यता क्र.- पी-46/757 (वॉलन्टियर सदस्य)
परमप्रीत सिंह अरनेजा, निजी उद्यम (ए.ई.एन्ड सी., दिल्ली) बी.एच.-45, ईस्ट शालीमार बाग,
दिल्ली-110088 फोनः 09999475333
ई.मेलः parampreet@aeandc.com DOB:03/09/1971

सदस्यता क्र.- ए-77/759 (वि.स.)
श्रीमती अनिता शर्मा, गृहणी
ए-125, सेक्टर 30, नोयडा-201303, उ.प्र.
फोनः 09810025922
ई.मेलः elcondevices@rediffmail.com
DOB:10/06/1964 MD:02/12/1987

सदस्यता क्र.- आर-92/750 (वि.स.)
श्रीमती रमा गुप्ता
निदेशक, मानसीकॉम कन्सल्टेन्ट्स प्रा. लि.
एस-139 भूतल, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली
फोनः 011-41631687/09810155484
ई.मेलः suresh@mansycom.com
DOB:21/12/1954 MD: 14/09/1977

सदस्यता क्र.- एस-163/752 (वि.स.)
श्रीमती शहनाज़ प्रवीन, गृहणी
बी-103, कमसण्डा अपार्टमेन्ट्स, 2, पार्क रोड,
हजरतगंज, लखनऊ। फोनः 09838341578
DOB:08/08/1956 MD:15/07/197

सदस्यता क्र.- एम-45/754 (वि.स.)
श्रीमती माधुरी सिंह, एडवोकेट
2/282, विकास खंड, गोमती नगर, लखनऊ
फोन : 0522-2391220/09415048537
DOB:04/01/1954 MD:20/06/1978

सदस्यता क्र.- एस-164/756 (वि.स.)
श्रीमती सुब्रामनियन उमामहेश्वरी, गृहणी
1553ए, सेक्टर बी-1, वसन्त कुन्ज, नई दिल्ली
फोन : 011-46552485/09818913939
ई.मेलः umamani58@rocketmail.com
DOB:29/03/1958 MD:09/06/1976

सदस्यता क्र.- एस-165/758 (वि.स.)
संजय शर्मा, उद्योगपति
एलेक्ट्रो कन्ट्रोल्स एन्ड डिवाइसेज़
ए-125, सेक्टर-30, नोयडा। फोनः 9810025922
ई.मेलः elcondevices@rediffmail.com
DOB:09/12/1964 MD: 02/12/1987

सदस्यता क्र.- के-46/760 (वि.स.)
कपिल देव त्रिपाठी
भारतीय प्रशासनिक सेवा (से.नि.)
2/134, विराम खंड, गोमती नगर, लखनऊ
फोन : 0522-2395443/09935045827
ई.मेलः kdt0811@gmail.com
DOB:02/10/1951 MD: 10/03/1971

भावना के सदस्य बनिए और बनाइये

सदस्यता क्र.- एन-40/761 (विशिष्ट सदस्य)
श्रीमती निर्मला त्रिपाठी, गृहणी
2/134, विराम खंड, गोमती नगर, लखनऊ
फोन : 0522-2395443/09935045827
ई.मेलः kdt0811@gmail.com
DOB:03/11/1953 MD: 10/03/1971

सदस्यता क्र.- एस-166/763
डॉ. श्री कृष्ण सिंह 'अखिलेश'
मैटीरियल मैनेजर (से.नि.), भा.भूवैज्ञा.सर्वे.वि.
569/40, बरगवाँ, एल.डी.ए. कॉलोनी,
कानपुर रोड, लखनऊ-226012 फोनः 09956510140
DOB:08/07/1938 MD: 11/08/1968

सदस्यता क्र.- एस-167/765
सोहन लाल गुप्ता
समीक्षा अधिकारी (से.नि.), उ.प्र. सचिवालय
116/10, घसियारी मंडी, कालीबाड़ी मार्ग,
लखनऊ-226001 फोनः 09198110235
DOB:15/07/1953 MD: 05/05/1985

सदस्यता क्र.- आर-94/767
रोमेश चन्द
सीनियर मैनेजर (से.नि.), एच.ए.एल.
10/201, दीपक, सहारा स्टेट्स, जानकीपुरम,
लखनऊ-226021 फोनः 09794264774
ई.मेलः nisha.gupt@yahoo.com
DOB:01/04/1949 MD: 30/11/1976

सदस्यता क्र.- बी-32/769
भीम सेन शुक्ल
अवर अभियंता (से.नि.), उ.प्र.रा.वि.उ.नि.लि.
902, शेखूपुरा, विकासनगर, लखनऊ-226022
फोनः 09415115490
ई.मेलः bhim.sen1924@gmail.com
DOB:10/07/1956 MD: 01/7/1975

सदस्यता क्र.- टी-8/771
तिलक कुमार मनोचा
संयुक्त निदेशक (से.नि.), प्रशिक्षण विभाग, उ.प्र.
11, बी.एन. घई लेन, लालबाग, लखनऊ-01
फोनः 0522-2200330/09453381679
ई.मेलः manochatk@gmail.com
DOB:06/09/1946 MD: 05/10/1973

सदस्यता क्र.- वी-51/762/संस्थागत
विजय श्री फ़ाउन्डेशन (प्रसादम् सेवा) विशाल सिंह, सचिव
538क/1590क, त्रिवेणी नगर-2, सीतापुर रोड,
लखनऊ-226020 फोन : 09935888887
ई. मेलः vishalvirat@gmail.com

सदस्यता क्र.- के-47/764
श्रीमती कमला कान्ती सिंह, गृहणी
569/40, बरगवाँ, एल.डी.ए. कॉलोनी,
कानपुर रोड, लखनऊ-226012
फोनः 09956510140
DOB:01/01/1944 MD: 11/08/1968

सदस्यता क्र.- एस-168/766
श्रीमती सरिता गुप्ता, गृहणी
116/10, घसियारी मंडी, कालीबाड़ी मार्ग,
लखनऊ-226001 फोनः 09198110235
DOB:06/09/ MD: 05/05/1985

सदस्यता क्र.- एन-41/768
श्रीमती निशा गुप्ता, गृहणी
10/201, दीपक, सहारा स्टेट्स, जानकीपुरम,
लखनऊ-226021 फोनः 09794264774
ई.मेलः nisha.gupt@yahoo.com
DOB:05/10/1 MD: 30/11/1976

सदस्यता क्र.- डी-34/770 (वॉलन्टियर सदस्य)
धनंजय द्विवेदी, (निजी उद्यम में सेवारत)
538ख/559क, शिवनगर, खदरा, सीतापुर रोड,
लखनऊ-226020 फोनः 09415759739
DOB:24/07/1966 MD: 21/11/1991

सदस्यता क्र.- के-48/772
श्रीमती किरन मनोचा, गृहणी
11, बी.एन. घई लेन, लालबाग, लखनऊ
फोनः 09453381679 ई.मेलः manochatk@gmail.com
DOB:09/03/1 MD: 05/05/1973

<u>भावना संदेश जुलाई,2016 के प्रकाशन मे गलत फोटो प्रकाशित हो जाने के कारण पुनः प्रकाशित हेतु सदस्यों की सूची</u>

सदस्यता क्र.- ए-76/747
अनिल कुमार पाण्डेय
डाइरेक्टर जनरल (से.नि.), G.N.I.O.T.,
ग्रेटर नोयडा, बी-3, सी.ई.एल. अपार्टमेन्ट्स,
बी-14, वसुन्धरा एन्क्लेव, दिल्ली-110096
फोनः 011-22618064/09871171695 ई.मेलः rmrcindia@gmail.com
DOB:15/04/1949 MD: 29/05/1975

सदस्यता क्र.- यू-15/748
श्रीमती उषा पाण्डेय
प्रिन्सिपल (से.नि.), चौगुले पब्लिक स्कूल,
करोलबाग, दिल्ली बी-3, सी.ई.एल. अपार्टमेन्ट्स,
बी-14, वसुन्धरा एन्क्लेव, दिल्ली-110096
फोनः 011-22618064/09871171695
DOB:11/1949 MD: 29/05/1975

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति

भावना द्वारा प्रायोजित जनहित के कार्यक्रमों हेतु आर्थिक सहयोग दाताओं की सूची (13.6.2016 से 10.9.2016 तक)

क्र0 सं0	दाता का नाम	सदस्यता संख्या	प्राप्त सहयोग रुपयों में					
			शिक्षा सहायता	निर्धन जन सेवा	भावना रसोई हेतु	साक्षरता अभियान सहायता	अन्य कार्यक्रम	योग
1	श्रीमती शान्ता भटनागर	H- 4/25	2400.00	2600.00				5000.00
2	श्री पंकज अग्रवाल	गैर सदस्य	1200.00					1200.00
3	श्रीमती इन्दुप्रभा गर्ग	I-8/466/Vishist	2000.00					2000.00
4	श्री विनोद चन्द्र गर्ग	V-38/465/Vishist	2000.00					2000.00
5	श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह	Y-6/593/Vishist	2400.00	2500.00				4900.00
6	श्री सुभाष चन्द्र विद्यार्थी	S-80/412/Vishist	1200.00					1200.00
7	श्री बिजेन्द्र कुमार अग्रवाल	गैर सदस्य	6000.00					6000.00
8	श्री सुशील शंकर सक्सेना	S-1/2/Vishist	2400.00	2600.00		1100.00		6100.00
9	श्री सुभाष चन्द्र चावला	S-13/88/Vishist	2000.00	1000.00				3000.00
10	श्री जे.एन.सरीन	J-6/144/Vishist	6000.00	2500.00		1500.00		10000.00
11	श्री राम लाल गुप्ता	R-16/150/Vishist	1200.00					1200.00
12	श्रीमती नीलम चुघ	N-26/429	1200.00					1200.00
13	श्रीमती स्नेहलता	S-55/276/Vishist	1200.00					1200.00
14	श्रीमती सरोज देवी	S-42/216/Vishist				2100.00		2100.00
15	श्री उदयभान पाण्डेय	U-5/277				1100.00		1100.00
16	श्री सुभाष मणि तिवारी	S-121/555				1100.00		1100.00
17	श्री एस. के. सिंह	गैर सदस्य				1100.00		1100.00
18	श्री लक्ष्मी कान्त झुनझुनवाला	L-5/454/Vishist	5000.00					5000.00
19	श्री रमेश प्रसाद जायसवाल	R-79/633/Vishist	2500.00			2500.00		5000.00
20	श्री सिद्धेश्वर नाथ शर्मा	S-137/616/Vishist	5000.00			1100.00		6100.00
21	श्री नरेन्द्र कुमार मित्तल	N-17/228	1800.00					1800.00
22	श्रीमती रेखा मित्तल	R-27/229	1800.00					1800.00
23	श्री राजेन्द्र नाथ कालड़ा	R-58/467	1200.00					1200.00
24	श्री अशोक कुमार अरोरा	A-54/584/Vishist				2100.00		2100.00
25	श्री राज देव स्वर्णकार	P-51/414		1200.00		1000.00		2200.00
26	डॉ. भानु प्रताप सिंह	B-26/639		3000.00				3000.00
27	कु.आंचल भारद्वाज	गैर सदस्य	12000.00					12000.00
28	श्री रमा कान्त पाण्डेय	R-80/635/Vishist	1200.00					1200.00
29	न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी	D-25/589/Vishist				11000.00		11000.00
30	श्री मुरारी लाल अग्रवाल	M-34/643/Vishist	2400.00			1100.00		3500.00
31	न्यायमूर्ति सुधीर चन्द्र वर्मा	S-43/216/Vishist	20000.00					20000.00
32	श्री एल.एन.सेठ	L-6/596/Vishist	2000.00					2000.00
33	श्री शिव नारायण अग्रवाल	S-117/544/Vishist	3000.00					3000.00
34	श्री सुशील कुमार अग्रवाल	S-102/496	5000.00					5000.00
35	श्रीमती नरेन्द्र गैरा	N-16/212	1200.00					1200.00
36	श्री प्रमोद कुमार वर्मा	गैर सदस्य				580.00		580.00
37	श्री दिलीप कुमार विरानी	D-20/438				151.00		151.00
38	उ0प्र0 विद्युत पेंशनर परिषद	V-37/462	7200.00			5000.00		12200.00
39	श्रीमती उमाशशि मिश्रा	U-10/475/Vishist	1200.00	3250.00				4450.00
40	श्री बेनी प्रसाद कुरील	B-19/395/Vishist	2500.00	2500.00		5000.00		10000.00
योग			**106200.00**	**21150.00**	**0.00**	**37531.00**	**0.00**	**164881.00**

BHARTIYA VARISHTHA NAGARIK SAMITI

Service & Programs

• Social & emotional support to Elders.
• 24x7 Helplines (Medical & General) for Elders to meet emergencies.
• BHAVANA's own well equipped Charitable Age Care Centre (Physiotherapy Clinic) at Lucknow managed by experienced qualified physiotherapists.
• Bhavana's own Multi-Facility Day Care centre for senior citizens at Lucknow.
• Tie-ups with spcialized Old Age Hospital, a Multi-speciality Hospital, Dentral Surgeon & Eye-care Hospital
• Tie-ups with Ayurvedic, Naturopathy, Homeopathy, Clinical Psychiatry, Accupressure, Reiki & Acupuncture Therapists.
• Tie-up for Hospice & Palliative Care for needy Elders.
• Tie-up with best Old Age Home of Lucknow.
• Frequent social & spiritual excursions and get-togethers for Elders.
• Camps are organized at frequent intervals at different locations in and around Lucknow wherein full medical checkup (including clinical tests) and treatment of Elders is done free of cost.
• Financial assistance scholarships are given to extremely poor but meritorious students up to class 12.
• An "informal Literacy Centre" is functional in slum area of Mansarovar Colony- Lucknow to educate destitute children or those belonging to "below poverty line families". More than 50 children are being educated in this Centre.
• Woolen blankets, garments, bed-linen, utensils etc. are provided to pre-identified needy poor families by organizing frequent camps at different places in and around Lucknow.
• Camps are organized in villages to create awareness in villagers about personal bygiene as well as cleanliness in own house and locality. They are also informed about the government schemes available for their welfare. Simultaneously, they are also informed about salient features of Constitution of India, relevant to the village folks.
• Very senior citizens of repute are felicitated twice every year in specially organized programmes.
• Frequent seminars and talks are organized to update Elders about their rights & privileges, taxation, laws, investment opportunities, health related issues etc.
• Problems of Elders are highlighted at various Forums and through memorandums, letters to editors etc.
• Interaction and co-ordination is maintained with other organizations working in India and globally for the cause and care of Elders.
• Regular publication of quarterly bilingual (Hindi-English) magazine and books on positive thinking.
• Currently BHAVANA has 748+ life members (including 250+ females) and eleven Institutional Members.
• Help, in cash or kind, small or big, is solicited from generous members and non-members to enable BHAVANA continue implementation of these and many more such services & programmes.
• Donations to BHAVANA are exempted from Income Tax under section 80G, of Income Tax Act.
• Donation cheques/DDs may be drawn in favour of BHARTIYA VARISHTHA NAGARIK SAMITI payable at par at any bank at Lucknow.

J.B. Agarwal
General Secretary (Admn.)

Population Ageing and its Consequences: Scientific study, research and care of elderly has gained tremendous priority and importance during the past couple of decades. Rapid advances in medical science and better care of elderly, improvement in nutrition, mass immunization against diseases and due to decreasing infant mortality rate, late marriages and later child bearing and more people now practicing family planning, the absolute numbers of the elderly over 60 years is fast increasing. Today, 60% of world's older persons live in Asia and by 2025 it will increase to 75%. In several, so called advanced countries, this population is around 50% of the workforce. About 25% population of Japan is of older persons above 60 years age and in China it is 11 %. In Japan alone, there are more than 32000 elders are over 100 years age. More than 200000 elders are above 100 years in the world. Modernization, urbanization, breaking of joint family systems and consumerism has aggravated the problems of elderly. In most Asian countries, the order of precedence had been mother, father, teacher and God but the fast changing culture and the impact of western civilization has diluted the precedence, family ties and mutual regard. Ageing is no longer a minor issue and soon in many countries, elderly will outnumber the young. The dream of people to live long is now becoming a reality. Baby bonus schemes have been taken up in Australia, Scandinavia, France, Spain and Singapore, etc to increase the birth rate.

Paradoxically, however, the problems of elderly is overshadowing the joy of longevity and affect the social, economic and physical well being of individuals, their families and their society. Recent surveys have indicated that 50% people above 50 have one or more diseases. Elderly people continuing to learn and work have overall higher health standard. Problems of elderly women and particularly widows or singles are many more. Their greater emotional attachment with family members, lack of security, depression, hypertension, difficulty in adapting to changing lifestyles, make their living miserable. Never married men and women have lowest survival rate. Traditionally, the care of elderly bas been largely the responsibility of women i. e. spouse, daughter-in-law and daughter and they provide physical, emotional and sometimes economic support. In case of chronically ill elderly persons, the care becomes moredifficult.

National & International efforts: Malta, a small country of 3,50,000 population, situated in the middle of the Mediterranean, was the first to raise the question of ageing at UN in 1968. In 1979, the General assembly agreed to raise the issue in World Assembly in 1982 and an International Institute on Ageing in Malta was later setup by UN in 1988. A notable signpost on the road leading to the implementation of the International Plan of Action on ageing was erected during the 47th session of General Assembly of U NO in October 1992, the Proclamation on Ageing. Recognizing the need for a practical strategy on ageing for the next decade, the General Assembly urged the international community, in Proclamation, to undertake the implementation of their International Plan of Action on Ageing. It supported broad and practical partnership with UN programme on Ageing, including those between Governments, specialized agencies and UN Bodies, NGOs and private sector. It strengthened the UN Fund for ageing as a means for supporting developing countries.

The Asian and Pacific Population conference held in 1992 in Indonesia also stressed that Asia has become the center of population ageing and

faces the necessity of dramatic social and economic changes, in order to cope with the demographic transition. In 21st century, the world population will experience ageing at a rate never before experienced in the history of mankind. In this sense, the 21st century could be called the **"Era of Population Ageing".** The conference recommended prolonged productivity and self-reliance of older people. It maintains that ageing need not be a negative experience. China is well known as a country where the elderly are held in deep respect even today. The establishment of the Chinese National Committee on Ageing in 1983 was an important step. The committee's principal responsibilities included education, training and research, planning reforms, supervision and inspection. China has more than 45, 000 town and village run old people's homes, care, recreation and rehabilitation centers, residential flats, consultancy offices and separate bureaus have been to help and educate the elderly. In all transports and recreation centers, senior citizens get substantial discounts. China has the largest number of **third age universities** in the world. Around 20000 third age universities have more than 2 million members.

As a member of International Federation on Ageing and Helpage International, Singapore Action Group of Elders (SAGE) was established as early as 1977. Singapore hosted the 8th ASEAN Gerontology conference jointly with INIA from August 27 to September 17, 2007. SAGE has setup a Center for Study of Ageing (CENSA) and managed by multi-disciplinary professionals. TSAO is a Foundation in Singapore for women, National Volunteer and Philanthropy Center Singapore (NVPC); Retired Senior Volunteer Programme (RSVP) are excellent NGOs working in Singapore. Recently, in 2007, Singapore Government has setup a council for Third Age (C3A) and it will work with voluntary organizations, statutory Boards and the private sector. The Singapore Institute of Management (SIM) has initiated many new courses for adults.

Universities of Third Agers - U3A: Genesis: Dr. Velles first developed this concept at Toulouse, France in February 1973 and it was very successful from the very beginning. Today, there is large number of U3As in Europe, America, Australia, Canada, and Japan and in very large numbers in China. Since 1976 the International Association of Third Age Universities (AIUTA) is also functioning and its Headquarters is in Anatole-3170 Toulouse Cedex - France. Reports indicate that most of these U3As are functioning very well and their memberships vary from 50 to 5000 elderly men and women.

U3A Activities: Activities in U3A vary according to membership, location, support by the Government and Non-Government organizations. Tentative list of activities, collected from U3As in UK, Australia, South Africa, China, India and several other countries, is given below:

i) Organise seminars, workshops, camps
ii) Monthly/weekly meetings at convenient locations. Guest lectures
iii) Studies and research on ways to improve the quality of life of elderly
iv) Short and long term educational/training programmes including distance education
v) Special programmes designed for pre-retirees, training care-givers, Management of Day Care Centres, courses for Policy Makers, Planners, etc
vi) Research in medicine, pharmacology, public administration, Social Gerontology, Medical Gerontology, Geriatrics, economics, politics, sociology, psychology, demography etc
vii) Computer literacy e. g. Basic packages, Windows, Word, internet, multimedia, Excel, digital photography, video editing,

repairs, web designing etc

viii) Art, drawing, photography, oil paining, fabric art, etc

ix) Music e. g. guitar, accordion, drums, piano, dancing, chorus singing etc

x) Yoga, tai-chi, naturopathy, meditation, spiritual lectures, acupressure, traditional Chinese medicines, physiotherapy occupational therapy, health club, religious issues, laughter club, healthy cooking, nursing skills, etc

xi) Picnics, tours, film shows, common lunches/dinners, visiting museums/zoo etc

xii) Games, dancing, wine club, badminton, tennis, table-tennis, billiards, golfetc

xiii) Need based vocational trainings, social works

xiv) Library, bulletins, magazines

xv) Short courses on Financial Management, investment, journalism, environment, waste management, poetry, legal rights, astronomy, comparative religions, history, languages, philosophy, study of scriptures etc xvi) Employment bureau, placement, counseling cell

Normally, U3As work in close collaboration with NGOs, educational bodies, religious organizations, hospitals and charge nominal membership and course fees

Need for age care: Ever increasing socio-economic implications and humanitarian issues of the Aged, the vulnerable section of the population especially susceptible to physical and mental health deterioration and social crisis, must now be a serious concern for the Government, policy makers, planners, NGOs, universities as well as corporate sectors. Though several national and international organizations/ federations are already involved in the care and education of elderly but all this appears to be far too inadequate.

OLD AGE CAN BE CREATIVE OR SELF-DESTRUCTIVE. IT IS YOUR CHOICE TO DECIDE. OLD AGE NEED NOT BE PAINFUL AND DEATH MAY NOT BE FRIGHTENING. IT IS POSSIBLE TO LEARN IN THE DAYS OF RETIREMENY

U3A in India: Indian Society of U3A: 'In India, the first U3A was established at Rewa in Madhya Pradesh on October 12th, 2007 with Dr Saijan Singh as its founder President. Mr Tom Holloway, founder Director of Chatback Trust U. K and the Chief editor of the world e-news letter "SINGNPOST" was also present. Subsequently, several U3As have been established in Allahabad, Lucknow, Udaipur, Banglore, Chennai; Kolkata etc. U3As in India organised a National Seminar on Population Ageing and Development in collaboration with G. B. Pant Social Science Institute Allahabad and the Institute of Social Development, Udaipur on March 28th and 29th, 2008 at Allahabad. The Indian Society of U3As as a conglomerate of voluntary bodies working for the welfare of elderly in India was also inaugurated on March 29th, 2008. Its website can be visited on **www.u3aindia.org**. A website providing deeper insight into worldwide U3As is **www.u3a-indiainternationalconference2012.org**.

-Within two years of its existence, ISU3A had organised a World U3A Conference in 2010 at Chitrakoot (M.P.) jointly with Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya and it is now organizing Third U3A International Conference 2012 at Chinmaya Vibhooti, Pune from October 12-14, 2012.

The organizational structure, activities and annual subscriptions in U3As are decided by its members and vary from group to group. Recently on March 9th, 2008, the "Kalyani U3 AAllahabad" for women only was setup by a women association. Common activities taken up presently by U3As in India are-lectures/discussions on health care; health checkups; yoga

classes; computer literacy; picnic trips; music concert; formation of help groups for emergency; lectures on finance management and investments; counseling; organizing seminar; book clubs; spiritual discourses; rural development project etc etc

Fast growth ofU3As in different parts of India is indeed very encouraging. Formation ofthe Indian Society ofU3As, with its headquarters at Udaipur and 5 zonal offices (Delhi, Allahabad, Kolkata, Mumbai and Bangalore) and 24 institutions including Universities, research institutions and senior citizens organizations, besides about 800 individual members, is a commendable step in such a short period of time and this is assisting in giving a fillip to this desirable movement and help in creating greater awareness in the society especially for elders.

Organized elders will have say in the policy formulation at Central and State levels, move for international linkages and establish institutions for education, research and training and developing improved facilities for active, productive and graceful living to older population.

NEPAL SAARC SENIOR CITIZENS CONFERENCE- A SYNOPSIS.

The Kathmandu Declaration signed at the eighteenth summit meeting of the South Asian Association for Regional Cooperation (SAARC) held in Kathmandu, Nepal on November 26-27, 2014 included "Social Protection:

The leaders acknowledged the special needs of the elderly, women, children, differently-abled persons, unemployed persons, and persons working at hazardous sites and agreed to develop and strengthen social protection for them and to share best practices in this regard." In view of declaration, Organizing a Regional workshop is a first step towards the first milestone to establish a SAARC Senior Citizen Forum.

The Govt. of Nepal and the National Federation of Associations of Senior Citizens of Nepal organized on **11th & 12th of July 2016** "South Asian Senior Citizens Workshop" comprising of all the eight SAARC Countries. The representatives of the Apex bodies of senior citizens in those countries were invited. Mr RN Mital was separately and independently invited as special invitee and requested to submit the Background Paper. The Prime Minister of Nepal inaugurated the conference and the Minister for Social justice in Nepal participated. On this occasion, the PM announced a sizable increase in old age pension.

At the end of the Workshop a declaration was adopted. This event has acquired special significance because the SAARC secretariat is also located in Kathmandu. They were very supportive of this effort and actively participated in it. It has been indicated that our collective representations and issues will be included in the agenda of SAARC Conferences. The heads of SAARC Countries thus, will hopefully, not be able to ignore our issues.

The ten point declaration, when accepted and adopted, would pave way for dignity & respect for the elderly population as a matter of right besides inclusive growth in terms of financial and health security.

Background Paper, as well as, a Report and Declaration adopted at the conference are printed in following pages.

A.K. MALHOTRA
GENERAL SECRETARY(BHAVANA)

SAARC SENIOR CITIZENS CONFERENCE HELD AT KATHMANDU : A REPORT

A.K. Malhotra
Secy. Gen. (Advocacy)

A regional body called South Asia Senior Citizens' Forum (SASCF) has been established on 12th July , 2016, in Kathmandu, Nepal, at the concluding session of a two day workshop on the issues of Senior Citizens in South Asia . Towards this end, the delegates resolved to constitute a South Asia Senior Citizens' Working Group coordinated by Dr. Gauri Shankar Lal Das as Chairman, and Shri Chhatra Bahadur Pradhan as Member-Secretary, and Mohammad Edrees Omarzad, Ferdous Ara Begum, Sonam Tshewang, Digamber Chapke, Sugan Bhatia, Shyam Sunder Dhaubhadel, and Neela Gunasekera as Members.

Representatives from Afghanistan, Bangladesh, Bhutan, India, Nepal, Sri Lanka, and other SAARC countries were present at the workshop. The SASCF has been established on the basis of the 36 point Kathmandu Declaration signed at the 18th SAARC Summit meeting in 2014, focusing towards the 'Special Needs of Elderly Population' of the region. The Forum also reaffirms commitments to the Older Peoples Rights enshrined in the Vienna International Plan of Action on Ageing, the United Nations Principles for Older Persons, the Madrid International Plan of Action on Ageing, 2002; General Recommendation no 27 of the CEDAW Convention on the protection of the Human Rights of Older Women (adopted in 2010) and Sustainable Development Goals aiming at leaving no one behind, in order to create a social inclusive society for all by 2030.

This Forum aims to work closely with the respective Governments, NGOs and Civil Society members of the region in order to improve the wellbeing and protection measures of the ageing population. South Asia Senior Citizens' Forum has emerged as an unified body to recognize, promote and protect human rights of older people as manifest in the policies, programs and legal instruments for senior citizens in the South Asia region.

This newly established regional body will also maintain a close liaison with the global network which helps older people claim their rights, challenge discrimination and overcome poverty, so that they can lead dignified, secure, active and healthy lives, Open Ended Working Group at the United Nations, African Union and ECLAC (Economic Commission for Latin America and the Caribbean) and other International and regional bodies to exchange views and learn from the experiences of others and act jointly as a pressure group for an UN Convention on the rights of Older Persons.

South Asian Association for Regional Co-Operation (SAARC) was established in 1985, in Dhaka, Bangladesh, as a regional alliance with commonalities in culture, socio economic norms and values including demographic patterns of ageing population. At present the region is experiencing a huge demographic transition due to increase in the life expectancy, decline in the mortality and fertility rates including communicable diseases and improvement in the basic health care and living standards. According to UN DESA at present about 66 % of world's ageing population live in low and middle income countries, which will rise to 77 % by 2050

4. Recognition of the principle of providing Minimum Survival with Dignity Services in the form of Social Security, Health Care, Shelter, and Protection of Life and Property;
5. Recognition of the principle of an evolving culture of Human Rights from the present status of Directive Principles of State Policy in the respective Constitution of each South Asian society;
6. Recognition of the Right to Form Associations by all Stakeholders, including Senior Citizens, for performing an effective role in their own development and in the development of other citizens children and youth including children and youth;
7. Recognition of the need to establish separate Ministries/Departments for Senior Citizens'

Development in each South Asian society in view of the rapidly expanding percentage of population of senior citizens;

8. Recognition of the need to prepare specific sub-policy for Women Senior Citizens as part of the National Policies for Senior Citizens and back up such sub-policies with adequate resources and assigned functions;
9. Recognition of the need to undertake national and regional periodic reviews for measures initiated and mechanisms evolved as part of the progress achieved in the area of senior citizens' development; and
10. Recognition of the need to benchmark Best Practices in all services for Development of Senior Citizens in the South Asian Countries, including those in the areas of Assistive Devices, both nationally and in the South Asian region through periodic consultations under the auspices of the South Asia Senior Citizens Forum.

This Declaration shall be shared with rest of the countries in the South Asia Region based on the participations in the ensuing meetings of the Working Group.

Rt.Hon. PM KP Oli delivering inaugural speech

Secretary General Chhatra Bahadur Pradhan with Thanks remarks

बस एक क्लिक पर भेजें पैसे या करें ऑनलाइन पेमेंट

यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस सिस्टम की शुरूआत : करीब 15 सरकारी और प्राइवेट बैंकों ने यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) की शुरूआत कर दी। नैशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) ने अप्रैल महीने में यूपीआई को लॉन्च किया था। इसके बारे में कहा जा रहा है कि यह ऑनलाइन बैंक पेमेंट को बहुत तेज और आसान बना देगा।

कैशलेस होता है पेमेंट : मान लीजिए, आपने किसी सुपरमार्केट से घर के सामान खरीदा और दुकानदार ने आपको बिल दिया। फिर आप उसे कैश दे देते हैं। यूपीआई में भी ऐसा ही बिल्कुल सिंपल फंडा है। यहां आप बस यह करते हैं कि कैश से पेमेंट करने की जगह आप दुकानदार को अपना यूपीआई आईडी बताते हैं। यह यूपीआई के जरिए एक इनवॉइस जेरनेट करता है जिसे आप मोबाइल फोन से अप्रूव कर देते हैं। आपका अप्रूवल मिलते ही पेमेंट हो जाता है।

ऑनलाइन होगी नैशनल पेंशन स्कीम : पेंशन कोष नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने पेंशन योजनाओं को बढ़ावा देने के लिए कदम बढ़ा दिए हैं। वित्तीय एजेंटों को प्रोत्साहित करने के मकसद से उन्हें ऑनलाइन प्लेटफार्म के जरिए एनपीएस से जुड़ने वाले अंशधारकों से 5 रुपये से लेकर 5,000 रुपये तक फीस वसूलने की अनुमति दी है।

वित्तीय एजेंट के पीओपी (पाइंट ऑफ प्रेजेंस) कहा जाता है। अंशधारकों को ऑनलाइन एनपीएस खाता खोलने, योगदान के लिए ईएनपीएस प्लेटफार्म शुरू किया गया है। सेवा शुल्क उन्हीं ग्राहकों पर लागू होगा जो किसी पीओपी से संबद्ध है। यह कर अंशधारकों पर लागू होगा, जिन्होंने पैन या बैंक केवाईसी सत्यापन के माध्यम से ईएनपीएस प्लेटफार्म का उपयोग कर खाता खोला है।

South Asia Senior Citizens Workshop Background Paper
July 11 & 12, 2016

Er. A.K. Malhotra

The emerging challenge of the 21st century is the phenomenon of population ageing. World is ageing very fast. It is a major unprecedented demographic shift which is taking place. This phenomenon can become a source of social unrest and a drag on the economy of the country in addition to causing human misery, unless remedial measures are taken in time. On the other hand if this phenomenon is properly handled it can become the vehicle for progress and prosperity as has happened in some countries, specially Japan. In fact it is not always been recognised that the population ageing is a great achievement of human endeavour as it is happening because of lower fertility, advancement in medical science hence better health care and longer life span. However, not all Countries have done the needful to respond to the challenges posed by the ageing of their populations. You can imagine the rate at which the population is ageing from the fact that every second 2 persons turn 60+ in the world. Today there are 901 million senior citizens representing 12.3% of the World population of around 7.4 billion, it is projected to exceed 2billion that is around 22% of the expected World population of 9.7 billion in 2050. . It is interesting to note that 60+ now outnumber children under five; by 2050, they will outnumber those under 15. The ¡¥youth bulge¡¦ of today which some countries find to be a great advantage will be the ¡¥age bulge¡¦ of recent future These demographic changes are most rapid in the developing world which, by 2050, will be home to eight out of 10 of the world¡¦s seniors.. The SAARC countries can claim about 25% 0f the World population that is around 1.77 billion and are home to around 9%

Elders, widely varying from 4% in Afganistan to 14% in Sri Lanka. In a UN funded study Countries were ranked according to the well being of the older persons inhabiting them. Out of 194 countries only 96 could be sampled as for the remaining 98 the available data was incomplete. Among **SAARC** countries only six could be studied as the part of data for Bhutan and Maldives was found to be missing. Though the traditions in the SAARC Countries enjoin them to respect the elders, to venerate them yet unfortunately the remaining six SAARC Countries for which data was available, could not be ranked very favourably. All of them except Sri Lanka were deep in the lower half of the 96 nations. Afganistan was at the bottom that is 96. India was also woefully low being 71, Nepal was a notch better at 70 and Bangladesh better at 67. Sri Lanka ranked highest at 46 This year, Switzerland was found at the top. As in 2013 and 2014, the top 19 places are taken by industrialised nations. Africa is overrepresented at the bottom, with countries from this region occupying seven of the 10 lowest places Japan at position 8 was judged to be the friendliest country for the Old in Asia. It has set an example before the World of how to convert ageing population into an instrument for progress. It is a a hyper-ageing country, with 33% of its population now over 60 which is expected to grow to more than 42% in 2050, highest in the World. Almost 50 years ago, it adopted a comprehensive welfare policy, introduced universal health care, a universal social pension, and a plan for income redistribution, low unemployment and progressive taxation. This investment has paid off with a healthier labour force and increased longevity. As a result, Japan is not just the oldest, but also one of the

healthiest and wealthiest countries in the world largely due to the contributions by its ageing population The key domains which were studied to work out the above comparative ranking were income security, health status, capability, and the enabling environment ¡V factors which determine the well being of the older persons. Time does not permit me to go into their details but I would like to point out the issues which this and similar other studies have highlighted,

1] Missing data- Out of 194 Countries only 96 could be studied because in case of rest of them the available data was incomplete. In our region also Bhutan and Maldives could not be studied for the same reason. Since any policy framework is data driven, we have to persuade our Governments to ensure full data about the status of elders in the country is available. A few years ago Nepal had drawn up a very comprehensive questionnaire for conducting a survey of the population of elders. I could manage to get a copy of it and forwarded it to through AISCCON to our authorities with a request that a similar survey should be carried out in India also. The request remained unacknowledged.

2] Gender discrimination- A lifetime of gender discrimination combined with the inequality of old age is having a devastating effect on older women. Many women are denied access to the formal labour market and instead work as carers of children and other family members. Globally, only 46.8 per cent of women aged 55 to 64 are economically active, compared with 73.5 per cent of men. Moreover, almost 50% women particularly widows who live with families have complained of elder abuse in India. We have to take steps to empower women and end the gender discrimination.

3] Social Pension - It has been observed that the social pension in most cases is inadequate and generally not indexed with cost of living. There is often inequality between different categories of older persons. Pension systems play a vital role in helping to reduce poverty and inequality In fact Older people are entitled to benefit of social pension from international commitments such as the programme agreed in Madrid in 2002 to end poverty, but they are deliberately or by default excluded on grounds of age or non availability of resources or because they can not make their voice heard.

The World Bank recommends social pensions as an essential pillar of all pension systems to ensure all older people are adequately protected. This is one major area where we will have to work with our Governments collectively to secure justice to our disadvantaged elders.

4] Maintenance Act- Traditional norms of our societies laid stress on providing care to the elderly. However, due to withering of the joint family system, a large number of elderly are not being looked after by their family. Consequently, many older persons, particularly widowed women are now forced to spend their twilight years all alone and are exposed to emotional neglect and to lack of physical and financial support. Hence, there is a need to have simple, inexpensive and speedy provisions to claim maintenance and support for parents. In India an attempt has been made to provide this facility through the MWPSC Act. It is desirable that possibility on similar lines should be there in other SAARC Countries also if it does not already exist.

5] Health Care- Health status measured by three indicators: life expectancy at 60, access to quality health care, and psychological wellbeing is often not available in full measure to all categories of older persons. There is need for training in geriatric care, especially in developing

countries. Research in geriatric care and gerontology is also a focus area.

6] Basic facilities- There is inadequate provision in most of the Countries of basic facilities such as old age home accommodation, Community Centres, Help Line, Nursing and Respite Homes, Palliative Care Homes etc

7] Physical Security -Lastly but very importantly we must emphasize the issue of physical security of senior citizens. In this regard I can give example of situation in India only and I suppose it may be similar in other **SAARC** Countries also. According to a survey in India 12% seniors live alone or with their spouse. They are soft targets for the antisocial elements. According to State Crime Research Bureau of Maharashtra, a state in India, a quarter of total crimes recorded in 2014 were against senior citizens. The figures show 7% increase every year in the number of elderly victims of various crimes. Burglary is the most commonly reported crime against elders. Many burglary attempts end up in murder. Security experts say a majority of such offences are committed by known persons, such as the househelp who have not been registered and scrutinized by the police. The Ministry for Home in India had issued in 2013 a detailed advisory to the State Governments to ensure safety of senior citizens particularly those living alone to,

- Prepare database of older persons living alone.
- Identify crime prone areas
- Each Police station should have security scheme for the protection of the Elderly. They should provide patrolling both during day and night.
- Hold rich senior citizens as most vulnerable and ensure security clearance of their staff.
- Ensure that beat staff along with community or NGO members regularly visit the residences of senior citizens living alone.
- Senior Police Officers should periodically interact with senior citizens, set up special cell for them, monitor their safety besides setting up 24x7 toll free help line.

Another area of emerging social offence against elders in India is abandonment. According to newspaper reports on an average 2 senior citizens are found abandoned daily in Chennai alone. They are found abandoned in temples, in hospitals or even on highways perhaps in the hope that some kind hearted philanthropist will find him and take mercy on him.

Such crimes are committed particularly in disadvantaged, socio-economically weak families because the elderly become a burden when they become disabled or terminally sick and and are unable to contribute both monetarily and physically. To make them acceptable the introduction of adequate social pension, adequate health care and availability of old age homes for the indigent will make the difference. We need an Organization in our region which recognizes such situations and represents them to suitable authorities. We are supported in our effort to make the life of our elders reasonably comfortable by two recent developments namely, **1] SAARC** Kathmandu Declaration 2014 in which special needs of the senior Citizens and other disadvantaged groups has been recognized. **2]** The 17 universal Sustainable Development Goals have been set by UN before each Country recently to be achieved within the next 15 years.. They aim to end poverty, delivering prosperity and peace to people of all ages across the world. The Index responds to core issues of concern to older people and is a framework for governments

and the international community to develop programmes to ensure that no older person is left behind.. The concerns of senior citizens can be best addressed if we raise our voice collectively before the Govrnments and ensure that they are also included in the agenda of various SAARC meetings. It will be possible if all **SAARC** countries come together and unite to constitute a body say SAARC Senior Citizens Forum. The SSCF will be effective, **1]** if it functions as a group to work with the governments to implement social protection activities for senior citizens. **2]** it makes it possible to learn and share good policies and practices among the SAARC countries. **3]** to exchange mutual learning on the existing programmes and policies inclusive of public private partnerships. **4]** to outline shared agenda so as,to include it in different levels of SAARC meetings/activities. **5]** to identify common areas and issues to advocate in SAARC member Countries. In short such an organization will enable the senior citizens of the SAARC countries to collectively raise their voice to facilitate the authorities to take appropriate policy decisions for the betterment of the elders in the region. Elders only want an environment where they can live a purposeful life with dignity and one which enables them to contribute to the best of their ability to the progress of their Country. **R.N.Mital** Chairman:Association of Senior Citizens of Hyderabad Member:National Council of Senior Citizens of Govt. of. India Chief Patron/Advisor:Indian Society of U3A Imm.Past President:All India Senior Citizens Confederation Member:Core Committee of NHRC to advise on matters regarding elders South Asia Senior Citizens Workshop Declaration adopted by the delegates participating in the Workshop July 11-12, 2016 Kathmandu The South Asia Senior Citizens Forum countries have some specific common traditions that they share amidst geographic diversity these shared traditions include the following:

1. Senior Citizens are respected by all, are considered as mentors in their families, and have often worked as those who provide advice in the governance of social and political relations;
2. Senior Citizens are provided care by their children and other relatives in their families;
3. The South Asian communities have a tradition of providing support to their neighbors including senior citizens in moments of distress or destitution;
4. The South Asian societies have generously supported civil society organizations dedicated to providing services for development of senior citizens, as in case of other citizens;
5. The South Asian societies cherish democracy and democratic principles, have affirmed their faith in democracy in their respective Constitutions, and, have viewed democratic decentralization as the ideal principles of governance for development of their citizens;
6. The South Asian societies have posited their deep faith in equality of all citizens and work towards elimination of discrimination against age and gender in their societies;
7. The South Asian societies have been evolving Policy statements for all their citizens, including their senior citizens both men and women - with a view to providing services for their development through a process of participation of all stakeholders;
8. The South Asian societies have by and large incorporated the need for services for the development of senior citizens in the Directive Principles of State Policy (such Directions exhort the Governments to mobilize resources for providing assistance to persons, including senior citizens, in need) in their respective Constitutions, and, are very receptive to evolve

steps that would ultimately seek to incorporate such services as part of the Fundamental Rights of senior citizens;

9. Many of the South Asian societies have taken steps to enact legislations leading to recognition of the responsibility of providing social security and other services on their children and other relatives, and bringing in State responsibility for specific program for senior citizens who do not have children or who are unfortunately rendered destitute; and
10. The services for the quality life style of the senior citizens in the South Asian countries include elements of all kinds of securities for those who have remained deprived in the family and societies.

The Minimum agenda evolved by the Workshop shall include the following:

1. Recognition of the strong faith of the Senior Citizens Community in the South Asian Countries in the democratic election processes and their wholehearted and robust participation therein; consequent utilization of their large presence in the democratic election processes as a strength of the Senior Citizen Community to bargain for their legitimate place in developing policies, laws and program with resource allocation in each country in the South Asian region
2. Recognition of the principle of minimum age for being classified as a Senior Citizen, e.g. 60 years and above;
3. Recognition of the principle of being a special category of Senior Citizens +, e.g. 80 years and above;
4. Recognition of the principle of providing Minimum Survival with Dignity Services in the form of Social Security, Health Care, Shelter, and Protection of Life and Property;
5. Recognition of the principle of an evolving culture of Human Rights from the present status of Directive Principles of State Policy in the respective Constitution of each South Asian society;
6. Recognition of the Right to Form Associations by all Stakeholders, including Senior Citizens, for performing an effective role in their own development and in the development of other citizens children and youth including children and youth;
7. Recognition of the need to establish separate Ministries/Departments for Senior Citizens¡¦ Development in each South Asian society in view of the rapidly expanding percentage of population of senior citizens;
8. Recognition of the need to prepare specific sub-policy for Women Senior Citizens as part of the National Policies for Senior Citizens and back up such sub-policies with adequate resources and assigned functions;
9. Recognition of the need to undertake national and regional periodic reviews for measures initiated and mechanisms evolved as part of the progress achieved in the area of senior citizens¡¦ development; and
10. Recognition of the need to benchmark Best Practices in all services for Development of Senior Citizens in the South Asian Countries, including those in the areas of Assistive Devices, both nationally and in the South Asian region through periodic consultations under the auspices of the South Asia Senior Citizens Forum.

This Declaration shall be shared with rest of the countries in the South Asia Region based on the participations in the ensuing meetings of the Working Group.

साधन धाम मोक्ष कर द्वारा

यह बात निर्विवाद है कि मनुष्य इस पृथ्वी के सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ और अतुलनीय है। उसकी श्रेष्ठता का मुख्य कारण मस्तिष्क है। वह इतना उन्नत और जटिल है कि अन्य प्राणी तो उसके मुकाबले जिन्दा मशीन की तरह हैं। मनुष्य शरीर से अलग अपने बारे में सोच सकता है। निर्णय ले सकता है। हम भौतिक और अभौतिक या स्थूल और सूक्ष्म दो अस्तित्वों वाले प्राणी हैं। तुलसीदास कहते हैं कि हमारे जड़ चेतन के बंधन की कहानी अकथनीय है। कहां तक कहा जाए।

सनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाइ बखानी।।
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई।।

(उ.का.दो. 116 चौ. 1)

दो अस्तित्वों वाले प्राणी मनुष्य को, इसी कारण दोहरा संघर्ष करना पड़ रहा है। दो मोर्चों पर एक साथ अपने अस्तित्व से ही जूझना पड़ रहा है। बाहर की लड़ाई में उसने विज्ञान और कानून की खोज की। भीतर की लड़ाई में धर्म साधन बना। पश्चिमी देशों की बात तो हम अकसर करते हैं किन्तु हम वहां की भौगोलिक कठिनाइयों को ध्यान में नहीं रखते। जहां शून्य से बहुत नीचे तापमान कई महीनों तक रहता हो और वनस्पतियां कम हो, वहां मानव जीवन की सुरक्षा विज्ञान के कारण ही हुई है। आदमी आदमी के बीच कलह या सम्बन्धों के समाधान के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ या कानून बने हैं। लेकिन मनुष्य के अन्तःकरण की लड़ाई दुनिया भर में समान है और धर्म ही उसका समाधान है। तुलसी साहित्य धर्म अधर्म के विचार का साहित्य है। वह विवेक प्रधान है। **धरम राजनय ब्रह्मविचारू** (अयो. का.दोहा 287 चौ.2) और **बिनु विवेक संसार घोरनिधि पार न पावै कोई**। (विनय प. 115)। धर्मग्रन्थ सत्संग और अपना अन्तःकरण या विवेक तीनों का सहयोग महत्वपूर्ण है। सुप्रसिद्ध अमरीकी विचारक डेलकारनेगी का कथन है कि हमारी कठिनाई अज्ञान नहीं जड़ता है। तुलसी पहले ही कह चुके हैं।

रघुपति भगति करत कठिनाई (वि.प. 167)

कहत सुगम करनी अपार, जानै सोई जेहि बनि आई। तमाम धर्म और विज्ञान वाले मनुष्य के बारे में जो खोज कर रहे हैं, उससे यह बात सामने आई है कि लगातार अच्छाइयों की ओर मानव बढ़ रहा है। (मनोवैज्ञानिक इं. आर. थॉमसन)। तुलसी भी इसी आशा और विश्वास के सहारे कहते हैं।

कबहुक हौं यहिं रहनि रहौगो। वि.प. 172
श्री रघुनाथ कृपाल-कृपा ते संत सुभाव गहौंगो।

मनुष्य की समस्या यह है कि बहुत कम लोग विचार कर अपनी मानसिक क्षमता का प्रयोग कर पाते हैं। **'द पावर ऑफ योर माइंड'** पुस्तक में ओ इरविंग जैकोबसन चिंतक कहता है कि दो से दस प्रतिशत लोग ही अपनी मानसिक क्षमता का प्रयोग कर पाते हैं। तुलसी दोहावली में कहते हैं, लोग प्रायः भेड़ की तरह चलते हैं-मूर्ख जनता का सम्मान भेड़ियाधसान के समान है अर्थात जहाँ एक ने बड़ाई की, वहीं सब करने लगते हैं।

तुलसी भेड़ी की धँसनि जड़ जनता सनमान (दो 495) तुलसीदास अपनी दीर्घकालीन साधना और अध्ययन का सार तत्व बतलाते हैं कि

वे पुरान संत मत एहू।
सकल सुकृत फल राम सनेहू।। (बा.दो. 26 चौ.1)
बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिदु द्रवहिं न रामु।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह विश्रामु।।
अस विचारि मतिधीर, तजि कुतर्क संसय सकल।
भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद।।

(रा.च.मा.उ.)

तुलसी बार-बार वेदों की चर्चा करते हैं। उन पर जोर देते हैं। आखिर वेदों की खोज क्या है? महत्व क्या है? अगर थोड़े से शब्दों में कहना हो तो कहा जा सकता है कि मनुष्य का मन दैवी और आसुरी शक्तियों से सम्पन्न है। सारे देवी देवताओं की उत्पत्ति हमारी इच्छा शक्ति से हुई है। इच्छाशक्ति स्वयं देवी है। (अथर्व, 19.9.4, 19.

4.2, 19.4.4)

तुलसी संकेत देते हैं कि -

तो से अरू श्रीराम से नाही न नई पहचान' या

आनंद सिंधु मध्य तब बासा

बिन जाने कस मइसि पियासा। विनयपत्रिका - 136/2

राम नाम कामतरू : तुलसीदास अपने काव्य में शिव और राम को अनेक बार कल्पवृक्ष या कामधेनु कहते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण यह खोज है कि मनुष्य का मन ही कल्पवृक्ष है। हमारा चेतन (लगभग 10 प्रतिशत) और अचेतन - (90 प्रतिशत) अनन्त शक्तियों से सम्पन्न है। अचेतन परमबलशाली और रहस्यमय तो है किन्तु वह अच्छाई बुराई में भेद नहीं करता। वह चेतन के बार-बार दोहराये गये आदेशों, कामनाओं आदि का पालन कर देता है। अचेतन मन रावण और भस्मासुर को भी वरदान दे देता है।

19वीं सदी में सुप्रसिद्ध अमरीकी दार्शनिक मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स ने इस ओर ध्यान दिलाया कि मनुष्य की इच्छाएं कल्पनायें और विश्वास व्यर्थ नहीं जाते। अब तो इनके महत्व पर बहुत खोज हो चुकी है। उनका व्यवहारिक जीवन में अनेक विधियों से खूब उपयोग भी हो रहा है। तुलसी स्वयं अपने अनुभव से कहते हैं :-

नाम राम को कल्पतरू कलि कल्यान निवास।

जो सुमरत भयो भाँग ते, तुलसी तुलसीदास।। (बा.को. 26)

राम नाम से सब कुछ मिलने वाला है, कोई कमी नहीं रहेगी :-

राम नाम काम तरू जोई जोई मांगिहै।

तुलसीदास स्वारथ परमारथ न खांगिहै।।

और भगवान शिव भी परम ज्ञानी और कल्याणकारी है:

प्रभू समरथ सर्वज्ञ सिव, सकल कला गुन धाम।

जोग ग्यान वैराग्य निधि, प्रनत कल्पतरू नाम।।

(राम चरित मानस बालकाण्ड-दोहा 107)

लेकिन विनय पत्रिका में तुलसी ने मन के भी यही गुण बतलाये हैं :-

असन-बसन पसु बस्तु बिबिध विधि

सब मनि मँह रह जैसे।

सरग नरक चर अचर लोक बहु,

बसत मध्य मन तैसे।। (वि.प्र. 124)

दोहावली में 26-27 पर भी राम नाम को कामतरु कहा है। मानव मस्तिष्क एक वीडिया कैमरे की तरह है। बचपन से बुढ़ापे तक सारे दृश्य और ध्वनियाँ उसमें सुरक्षित और अंकित रहती है। केवल आवश्यकता और रूचि के अनुसार हमारी बाहरी स्मृति में कुछ चीजें रहती हैं। यह बड़े आश्चर्य की, किन्तु सत्य बात है कि पदार्थ (ऊर्जा) और कल्पना दोनों सच है। दोनों के फल एक से होते हैं। यहां विज्ञान और धर्म की सीमाएं विचित्र ढंग से टूट रही हैं। अब जो लोग मूर्तियों और चित्रों का घोर विरोध करते हैं वे स्वयं सोचे। तुलसी ने अपने कल्याण और सुरक्षा के लिए यह मनोचित्र अपने मानस में बसा लिया है :-

सुभग सरासन सायक जोरे,

खेलत राम फिरत भृगया बन, बसति सो मृदु भूरति मन मोरे (गी. अर.-2)

और अकल्पनीय भयावह परिस्थितियों में भी सीता जी यह चित्र अपने मन में बसाए सुरक्षित हैं :-

जेहि विधि कपट कुरंग संग धाइ चले श्रीराम।

सो छवि सीता राखि उर जापति रहति हरिनाम।।

(अर. 29ख)

मानव मन तो एक शराबी बंदर की तरह है जो कहीं स्थिर होकर कुछ पकड़ कर बैठ नहीं सकता। जो लोग कुछ नहीं सोचते वे जड़वत् हैं, जो केवल अतीत की बातें सोचते हैं, उन्होंने दौड़ के समय पैरों में जंजीर बांध रखीहै। मानव जीवन अनेक संभावनाओं का भंडार है। उसकी कुंजी उसी के पास है। तुलसी दास चित्त चंचलता को जानते हैं।

एकौ पल न कबहूं अलोल चित,

हित दै पद-सरोज सुमिरौ। (विनय प. 141/5)

(कभी एक पल स्थिर चित्त होकर, प्रेम से तुम्हारे चरण कमलों का स्मरण नहीं करता।

मानव मन लगभग 5 हजार भयों से घिरा रहता है। प्रभु का ध्यान राम की कृपा निकटता की अनुभूति, असीम सुरक्षा और आनंद से मन को भर देती है। बिना इस

अनुभव के मन को शांति नहीं मिलने वाली। ध्यान दो प्रकार के हैं। 1. सक्रिय, 2. निष्क्रिय। तुलसी पहले प्रकार के ध्यान की बात करते हैं।

जागिए न सोइए, बिगोइए जनमु जाँय,
दुख, रोग रोइए, कलेसु कोइ काम को।
राजारंक रागी औ बिरागी भूरिभागी ये
अभागी जीव जरत, प्रभाउ कलि बाम को
तुलसी कबंध कैसो धाइबो विचार अंध
धंध दखिअत जग सोच परिनाम को।
सोइबों जो राम के सनेह की समाधि सुखु
जागिबो जो जीह जपै नीकें राम नाम को। (कवितावली उ. कां.-83)

ध्यान, जप, तप, ज्ञान, भक्ति आदि के द्वारा जीवन निर्मल बनाएं। शरीरात के बाद भी आमी प्रवृत्तियों को नहीं बदलता और तब कुछ कर सकना सम्भव भी नहीं होता। इसीलिए तुलसी ने मानव जीवन को साधन धाम और मोक्ष का द्वार कहा। (उ.का.)। पराविद्या की सारी खोजों की बातें इसी की पुष्टि कर रही हैं। इसलिए इस बारे में सावधान रहें अवसर मत चूकें।

डॉ. त्रिलोकीनाथ सिंह
538क/1492, त्रिवेणीनगर-।।, लखनऊ-226020

भावना के गौरव : **डॉ. त्रिलोकी नाथ सिंह,** एम.ए. पी.एचडी., डी.लिट्
पता : 538/1492, त्रिवेणी नगर-2, लखनऊ, फोन : 9415578355
जन्मतिथि : 13/08/1936
पद एवं सेवा : पूर्व रीडर, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
आपके निर्देशन में 100 पी.एचडी. शोध उपाधि प्राप्त
पूर्व एसो. प्रोफेसर (हिंदी) भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र पारामारिवो (सूरीनाम)
200 से अधिक रेडियो दूरदर्शन मन्दिरों, सामाजिक सभाओं में व्याख्यान एवं वार्तायें।
पुस्तकें व लेख : 1-तुलसीदास उत्तरकाण्ड 2- सुगम भाषा विज्ञान 3- भाषा वैज्ञानिक निबन्ध
सम्मान : सूरीनाम के अनेक संस्थाओं द्वारा 1992 से 1997 तक सात बार सम्मानित
विशेष : 1- डॉ. त्रिलोकी नाथ सिंह - व्यक्तित्व एवं कृतित्व-विषय पर लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा एम.फिल. 2009 की परीक्षा में शोध छात्र पंकज कुमार द्वारा लघु शोध प्रबन्ध लिखा गया। 2- भारत की प्रसिद्ध शोध ापरक पत्रिकाओं में 25 शोधपरक लेख छपे। 3- अनेक पुस्तकों का सम्पादन।
भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) के आजीवन सदस्य T-4/254

100 वर्षीय भारतीय महिला ने जीता स्वर्ण

भारत की मन कौर को अमेरिकन मास्टर्स गेम में 20 अगस्त को 100 मीटर की दौड़ पूरी करने में करीब डेढ़ मिनट का समय लगा, लेकिन वह स्वर्ण पदक हासिल करने में कामयाब रहीं। 100 वर्षीय कौर वरिष्ठ एथलीटों के अपने आयु वर्ग में एकमात्र महिला धावक थीं। उनके अन्म प्रतिद्वंद्वियों ने भी उन्हें बधाई दी। वह भी उनके इस जज्बे को सलाम करने से खुद को नहीं रोक पाए। कौर ने 100 मीटर दौड़ एक मिनट 21 सेकेंड में पूरी की। अपनी जीत का जश्न उन्होंने अपने हाथों को हवा में उठाकर मनाया।कौर के चेहरे पर जीत की खुशी साफ दिख रही थी। दौड़ पूरी करने के बाद उनकी सांसें तेज हो गई थी और वह कुछ बोल नहीं पा रही थीं। वह अब तक अपने करियर में कुल 20 पदक जीत चुकी हैं।

दैनिक जागरण : 3.8.16

क्या करूँ

समझ नहीं आता है कैसे
गुस्से का इजहार करूँ?

प्यार करूँ मैं उनसे जमकर
या जमकर तकरार करूँ?
- नज़्म सुभाष

प्रार्थना, सपना, कुल देवता

सारा विज्ञान लगभग सही है। पूर्ण सत्य उसे भी नहीं मालूम है। खोज जारी है। धर्म के बारे में यही सच्चाई है। शायद परमात्मा की यही इच्छा है। पश्चिमी देशों में ऐसी घटनाएं नोट की जाती है। उन पर विचार होता है। हमारा उद्देश्य भी यह है कि पाठकों के सामने स्मृति में सुरक्षित रखने के लिए ऐसी बातें लाएं। नीचे कुछ घटनाएं दी जा रही है। फरवरी 2000 ई. में लिखी चार घटनायं यहां दी जा रही हैं।

1. सजल नेत्र-रुद्राष्टक जप पर युवक मौत के मुंह से वापस – यह घटना 20 नवम्बर 1996 ई. की है। लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रो. डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित के सुपुत्र अभिनव दीक्षित चतुर्थ वर्ष इंजीनियरिंग के छात्र थे। 8 नवम्बर से उन्हें बुखार आ रहा था। कहीं ठीक नहीं हुए तो 19 नवम्बर को लखनऊ के किंग जार्ज मेडिकल कालेज में भर्ती कराये गये। 20 नवम्बर को बुखार 107 डिग्री तक पहुंच गया। अभिनव बरफ पर लिटाए गये और ऊपर भी बरफ रखी गई। कोई दवा और सुई काम नहीं कर रही थी। इकलौते पुत्र की सांस उल्टी चलने लगी। देखने वालों का तांता लगा था। डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित निराश होकर घर, निराला नगर भाग आए। अपने घर में शिवजी के छोटे से मंदिर के सामने बैठकर अत्यंत करुण भाव से रामचरित मानस के उत्तरकांड के **रूद्राष्टक का सजल नेत्रों से लगभग एक घंटे जप करते रहे।** उधर मेडिकल कालेज में देखने वालों में सी. डी.आर.आई., लखनऊ के उपनिदेशक प्रोफेसर डॉ. ए.सी. चटर्जी थे। वह रोग की जांच के लिये रक्त का नमूना लेकर तुरन्त ही सी.डीआर.आई. को भागे। वहां उन्हें पता चल गया कि यह दिमागी (सेरेब्रल) मलेरिया का केस है। तेजी से मेडिकल कालेज पहुंचकर यह बात बतलाई। ऐसे मामले वहां कभी-कभार ही आते हैं। सुई के (सम्पुल) के लिए भाग दौड़ शुरू हुई तो आलमबाग की एक दवा की दुकान पर केवल दो शेष बचे थे, मिले। सुई लगा दी गयी। कुछ घंटों में असर दिखाई पड़ने लगा। अभिनव का जीवन बच गया। फिर स्वस्थ हो गये। कछ लोग डॉ. चटर्जी का पहुंचना संयोग मान सकते हैं, किन्तु यह प्रभु समरथ सर्वज्ञ शिव की कृपा का कल है। ऐसे अनेक उदाहरण मिल रहे हैं।

2. मरणासन्न पांच वर्ष के बच्चे को शिव मन्दिर में जीवनदान मिला – यह घटना आज से लगभग 70 वर्ष पहले की है। लखनऊ नगर के निराला नगर मुहल्ले (सी-262) में रेलवे के एक अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री शिवशंकर मिश्र जी वर्तमान में रहते हैं। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में बलिया जिले में गंगा नदी के तट पर एक तीर्थ है जहां भृगुमंदिर और भृगुआश्रम की बस्ती है। यहां प्राचीनकाल में अनेक ऋषियों ने तप किया था। यहां अब भी बड़ा मेला लगता है। शिवशंकर मिश्र का यहीं जन्म हुआ था। भृगुआश्रम से लगभग चार-पांच किलोमीटर पर मिश्र जी के बचपन में एक जंगल था, जहां लम्बी जटा वाले 'मूंज' बल्कल पहने, भभूत रमाए एक परोपकारी तपस्यालीन संत रहते थे। मिश्र जी के पिता जी साधु पुरुष थे और संत की उन पर कृपा थी। वहां जंगल में तहखाने में एक छोटा सा शिव मंदिर था। शिव शंकर मिश्र पांच वर्ष की उम्र में ऐसे बीमार पड़े कि मरणासन्न हो गए। निराश होकर उनके पिता संत के पास ले गये तो साधु ने बालक को शिव मंदिर में लिटाने को कहा। बाबा ने वहां पहुंचकर दीपक जलाया और समाधि लगा ली। लगभग एक घंटे बाद बच्चे के रोने की आवाज आई और संत ने कहा 'पंडित, इस बच्चे को ले जाओ। आज से इसका नाम शिव शंकर रख दो।' लगभग पचहत्तर वर्ष की आयु में शिव शंकर मिश्र अभी स्वस्थ हैं। यह बतलाते हैं जब भी उन पर संकट आया उन्होंने शिव जी को याद किया और उन्होंने उन्हें संकट से उबार लिया। अब वह गुफा, मंदिर, संत सब लुप्त हो चुके हैं।

3. पिता के देहान्त की सपने में सूचना मिली – ऐसी ही एक घटना और है। लखनऊ विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान के पूर्व प्रो. एवं अध्यक्ष डॉ. ज्ञानशंकर पाण्डेय जी निराला नगर, लखनऊ में रहते हैं। वह बड़े राम भक्त और साधक हैं। चित्रकूट यात्रा और अयोध्या की परिक्रमा वह प्रायः करते रहे हैं। डॉ. पाण्डेय का टांडा गांव

सुल्तानपुर जिले में है। बात 1956 ई. की है। डॉ. पाण्डेय लखनऊ में रह रहे थे। वह काफी बीमार, चल रहे थे। यहीं उनकी दवा हो रही थी। इस बीच इनके पिता श्री राजपाल पाण्डेय बीमार पड़े। उन्हें इलाज के लिये इलाहाबाद ले जाया गया। रात बारह-एक बजे डॉ. पाण्डेय को लखनऊ में सपना आया कि उनके एक परिचित कह रहे हैं - 'काका तो मर गये।' पाण्डेय जी अपने पिता जी को काका कहकर पुकारते थे। वह अचानक जाग गए और उन्हें वह आवाज गूंजती सी लगी। सबेरे पाण्डेय जी ने यह बात पत्नी से बतलायी तो वह इसे सपना कहकर टाल गई। पिता के मृत्यु को समाचार कई महीने पाण्डेय जी को नहीं दिया गया क्योंकि वह बीमार चल रहे थे, लेकिन सपना था। डॉ. ज्ञान शंकर पाण्डेय को ऐसा ही एक सपना 1966 ई. में आया। उन्होंने रात सपने में देखा कि पीपल का पेड़ बीच से फटकर सड़क पर गिर पड़ा। दोपहर को वह विश्वविद्यालय जाने लगे तो देखा राय बिहारी रोड के किनारे का पेड़ रात बिजली गिरने से आधा भाग फटकर सड़क पर गिर गया था।

4. कुल देवता ने चोरों से बचाया - दिल्ली की सुप्रसिद्ध सरकारी संस्था राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) से अवकाश प्राप्त भाषा विज्ञान के प्रो. डॉ. कृष्ण गोपाल रस्तोगी हैं। उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखी है 'आप बीती'। उसमें उन्होंने लिखा है कि उनके परिवार में 'कुल देवता' (अर्थात् मृत पूर्वजों) की पूजा की परम्परा है। एक बार उनके एक चचेरे भाई पड़ोस में रहते थे और एक चाचा नगर के अन्य भाग में रहते थे। एक दिन सबेरे खबर आई कि चाचा जी के यहां चोरी हो गई। डा. रस्तोगी अपने चचेरे भाई के साथ घटना स्थल पर पहुंचे। घर के पास पहुंचते ही उनके चचेरे भाई की भावभंगिमा बदल गई। उसके मुंह से अपरिचित आवाज में कुल देवता बोलने लगे। 'देखो घर में एक खिड़की गलत जगह पर लगी है। इसे तोड़कर ही चार चोर रात में घुसे थे। रात भर मैं उन्हें छत पर लेजाकर भरमाए रखा। वहां बीड़ी के टुकड़े और गंदगी आदि है। जब एक चोर तुम्हारे चाचा की तकिया के नीचे से चाभी निकालने लगा तो मैंने उससे आवाज करवा दी। चाचा जाग गए। चोर तो भाग गए लेकिन कुछ ले नहीं जा सके। खिड़की की जगह दीवाल बनवा दी। मैं चलता हूं। इसके बाद भाई ठीक-ठाक हो गया। उसे कुछ मालूम नहीं यह क्या बोल गया। डा. रस्तोगी की बात पर सन्देह करने का कोई कारण नहीं दिखता।

डॉ. त्रिलोकीनाथ सिंह
538क/1492, त्रिवेणी नगर-।।, लखनऊ-226020 मो.: 9415578355

जीने की राह

समस्या जब बड़ी हो तो चिंता होती ही है। कई बार सूझता ही नहीं कि क्या करें? पर ऐसे क्षण में कोई कहे कि सब ठीक हो जाएगा। दुःख पहली बार कोई आया है? पहले भी तो सामना किया था। अच्छा लगेगा ना। हाल में ऐसे ही शब्दों को किसी के चेहरे का हौसला बनते हुए देखा।

छोटे-बड़े ऐसे क्षण हम सबके जीवन में होते हैं, जब हमें जीवन बड़ा और समस्याएं छोटी महसूस होती है। वे प्यार और विश्वास के पल मुश्किल लगने वाली रुकावटें भी पार कर लेते हैं। कभी अपने दम पर। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि डर, बेचैनी और असुरक्षा का भावन हमारी समझ के गलियारों को तंग कर देता है। उसके कारण जब दुःख आता है, तो हमें सिर्फ अंधेरा ही दिखता है। जब हम अपनी पिछली रुकावटों को देखते हैं तो महसूस होता है कि ऐसी ही कितनी गलियों से हम पहले भी गुजरे थे। यह सोचना हमें न सिर्फ खुद पर, दूसरों पर और इस ब्रह्मांड पर विश्वास करने का साहस देता है। मन का अंधेरा भी घटने लगता है। मशहूर मनोविज्ञानी और पुनर्जन्म पर काम करने वाले ब्रायल वीज कहते हैं, **'सब उलट-पलट होने के बावजूद जीवन धीमी गति से ही सही पर सहज संतुलन की ओर लौट आता है।** गलती चाहे आपकी हो या दूसरों की, जब हालात काबू में न हों तो सबसे पहले अपने विवेक की रक्षा करनी चाहिए। फिर सोचें कि आगे क्या? खुद को या फिर पिछले कर्मों को कोसने से कुछ नहीं होता।

क्रमशः अगले पृष्ठ पर...

विवेक का साथ न छोड़ें : एक राजा को अपने चार मंत्रियों में से महामंत्री को चुनना था। राजा को तरकीब सूझी। उसने चारों को कहा कि उसने एक खास ताला बनवाया है, जो उसे खोलेगा, वही महामंत्री बनेगा। सभी महामंत्री बनने की चाह में रातभर ताले को खोलने के तरीकों का अध्ययन करते रहे, सिवाय एक मंत्री के। उसने हर रोज की तरह कुछ देर बाहर ताड़ के पेड़ को निहारा और चला गया। सुबह सबने दरबार में रखे विशाल ताले को देखा और अपने विचार नोट्स देखकर ताला खोलने लगे। जल्दी सोने वाले मंत्री ने कुछ देर ताले को देखा और पाया कि वह तो बंद ही नहीं है। उसने सिरे को हुक से हटाया। ताला खुल गया।

'ओह माइंड रिलेक्स प्लीज!' के लेखक स्वामी सुख बोधानंद कहते हैं, 'जीवन ताले की तरह है और समझ चाबी। हमें अपनी सजगता को मार्गदर्शक बनाना चाहिए। हाथी जैसे जीवन में हमारी समझ चींटी की तरह है, जो जरूरी नहीं कि हर रहस्य को समझ सके।' जब स्थितियों पर काबू न हो तो चुनौतियों को जीवन का विस्तार समझना ही बेहतर होता है। कई बार यह यात्रा बेहद खूबसूरत अनुभवों से परिचय कराती है।

दुख से यूं आएं बाहर :- • परेशानियां जीवन को दुखी नहीं बनातीं, बल्कि हमारा नजरिया उसे मुश्किल बना देता है। • गुस्सा, बेचैनी व डर को दरकिनार कर पहले समस्या को पहचानें। • समस्या से भागें नहीं, स्वीकारें। खुद को उसके लिए तैयार करें। • सबसे बेहतर समाधान तक पहुंचने का प्रयास करें। • एक बार फैसला लेने के बाद समस्या पर अटके न रहें। • क्या सबक मिला, इसको याद रखें। मन में कुंठा और निराशा की जगह न दें। • दुःख हर तरह के लोगों के जीवन में आते हैं। इस वजह से अपने को न कोसें। समस्याओं को जीवन का विस्तार मानें। हिन्दुस्तान : 4.07.2016

प्रगति के मुख्य बिन्दु

- उच्च लक्ष्य निर्धारित करो
- कुछ ऐसा करो कि संसार याद रखे
- सफलता की प्रबल इच्छा
- सफलता पर विश्वास
- धैर्य, प्रतीक्षा
- दृढ़ संकल्प तथा समर्पण
- सतत परिश्रम
- समय तथा मन का सदुपयोग
- आत्म-अनुशासन
- अपने व्यक्तित्व का निरन्तर सुधार
- दूरों के अच्छे गुणों से प्रेरणा लो
- दोष मत देखो
- मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, गुरु देवो भव
- प्रेम भरे सुखद सम्बन्ध
- मिल कर काम करो
- ठीक तथा सार्थक चिन्तन
- गप्पें मत हांको
- कम बोलो, अधिक सुनो
- अच्छे साहित्य का अध्ययन करो
- उच्च चरित्र निर्माण
- मानवीय मूल्य
- प्रत्येक काम में आनन्द प्राप्त करो
- भीतर से शान्त रहो
- शक्ति, शान्ति, आनन्द, प्रेम, सौन्दर्य, एकता, सतत प्रगति एवं विकास
- परमात्मा के चिन्तन से दिव्य शक्ति तथा दिव्य गुण प्राप्त करो
- मन शान्त, एकाग्र, सूक्ष्म, स्थिर तथा शुद्ध हो

हमें ऐसे नव विश्व का निर्माण करना है जो कि सत्य तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित हो उसमें प्रेम, शक्ति, आनन्द, एकता, सौन्दर्य तथा देदीप्यमान युवा स्वास्थ्य का साम्राज्य हो, भेदभाव, पारस्परिक संघर्ष तथा मन की नकारात्मक वृत्तियां कदापि न हो।

डॉ. कृष्ण गोयल, डायरेक्टर-दिव्य चेतना केन्द्र

शाबास - प्रगति सिंह

'कामरान' संस्था के महासचिव एवं **'भावना'** के विधि प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. वीरेन्द्र बहादुर सिंह की भतीजी एवं आगरा जोन के वर्तमान एडिश्नल कमिश्नर ग्रेड-1 श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह की सुपुत्री कु. प्रगति सिंह, PCS(J) 2014 की परीक्षा में सफल घोषित हुई है। भावना की ओर से उन्हें ढेर सारी बधाईयाँ।

गिलास आधा खाली

बूढ़े का अंतहीन अस्पताल प्रेम

बहू-बेटी की मान्यता है कि वह कुछ खिसक गया है। बूढ़े को छींक भी आए तो वह अस्पताल और उसके शुभचिंतक समाचारपत्रों के दफ्तर सिधारते हैं। जितनी प्रमुखता से बीमारी की खबर छपती है, वह उतनी ही जल्दी स्वस्थ भी होता है, सामान्य बूढ़ों के लिए अस्पताल मरघट का प्रवेश द्वार है, वहीं इस खास शख्सीयत के लिए आरामगाह। जो मंत्री-मुख्यमंत्री बहुत व्यस्त हैं, वही उसकी मिजाजपुर्सी को पधारे हैं। डॉक्टरों के अनुसार, वह स्वस्थ हैं, पर वह अस्पताल छोड़ने को प्रस्तुत नहीं हैं। उसकी बूढ़ी आँखों में जवान नर्सों को देख चमक आ गई है। वह नैन-सुख घर पर कहां है? पर यही नर्सें जब उसे बाबा के आदर सूचक संबोधन से नवाजती है तो यह आधुनिक केशवदास फिर से बेड पकड़ लेता है।

दूर-पास का परिवार आ चुका है। बूढ़े के टें बोलने की आशा में। यदि सरकार चिकित्सा के लिए अनुदान घोषित करे, तो इस लूट में अनुपस्थित रहकर क्यों कोई अपना हिस्सा गंवाए? सबकी तमन्ना कमाऊ रिश्ते की चेक को आखिरी दम तक भुनाने की है। दिखाने को सब बूढ़े की खिदमत में व्यस्त हैं, किन्तु निष्क्रिय सेवा-भाव किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के आगमन पर ही सक्रिय होता है। सब बूढ़े की वसीयत को लेकर आशंकित हैं। दिलफेंक वृद्ध आदतन खासा कंजूस है। भरोसा नहीं कि किस नर्स या पूर्व प्रेमिका पर सर्वस्व लुटा दे? बूढ़ा चुप है। सिर्फ डॉक्टर, नर्स या मंत्री को देखकर ही चेतता है।

नश्वर जीवन के सफर का अंत लाजिमी है। बुढ़ऊ की इस अंतहीन बीमारी से रिश्तेदार भी तंग आ चुके हैं। डॉक्टर कहते हैं कि सब सामान्य है पर वृद्ध का बाल हठ है कि उसका रोम-रोम रोगग्रस्त है। वातानुकूलित कक्ष, हमदर्दी, प्रचार, तीमारदारों का तांता, फल-फूल, समाचारों की सुर्खियां यह क्यों गंवाए? विरोधियों का दावा है कि इस लाश को महत्वाकांक्षा जिंदा रखे हुए है। उन्हें संदेह है कि बूढ़े का अस्पताल प्रेम सत्ताधारियों के लिए सिर्फ मौन ध्यानाकर्षण प्रस्ताव है। जाने क्यों सरकार उसकी राष्ट्र-व्यापी प्रसिद्धि से प्रभावित नहीं है, वरना उसे राज्यसभा का सदस्य क्यों नहीं बनाती? गोपाल चतुर्वेदी। हिन्दुस्तान, 6 जून, 2016

गिलास आधा भरा

मरघट का द्वार - 6 जून 2016 के 'नश्वर' स्तंभ में 'बूढ़े का अंतहीन अस्पताल प्रेम' पढ़कर बड़ा ही कष्ट हुआ। कष्ट की तीव्रता इसलिए और गहन हो गई कि लेखन संभवतः पद्म पुरस्कार प्राप्त है। उन्होंने लिखा कि सामान्य बूढ़ों के लिए अस्पताल मरघट का द्वार है। यह उनका व्यक्तिगत आंकलन हो सकता है, सामान्य जन का तो कदापि नहीं। अस्पताल तो जीवन-मृत्यु का निर्णायक कुरुक्षेत्र है। दूसरे उनके अनुसार जवान नर्सें नैन सुख प्रदायिनी साधन मात्र है। क्या ही अच्छा होता यदि वे उन्हें निष्काम सेवा भाव को समर्पित देव-बालाएं या देवियां कहते। **'दूध का गिलास आधा खाली है'** न कहकर यह कहते कि **'आधा भरा है'** तो कितना अच्छा लगता। तीसरे, हर बूढ़ा केशवदास या आसाराम ही नहीं होता। चौथे, दूर-पास के रिश्तेदार बूढ़े के टें बोलने की प्रत्याशा में ही नहीं आते। वे तो आते हैं अपने रहनुमा के अंतिम दर्शन एवं आशीर्वाद पाने एवं उसकी दीर्घायु की कामना करने हेतु। भीष्म पितामह को शर-शैया पर देखने हेतु युधिष्ठिर क्या वसीयत की प्रत्याशा में ही गए थे? और अन्त में घर वाले अपने रहबर को घर ले जाने के लिए जितना उत्सुक रहते हैं, बुढ़ऊ उससे कहीं अधिक जल्दी में रहते हैं, अपनों के बीच पहुंचने को यदि होश में हैं तो। यही तो है गुण-सूत्र जीवन की निरन्तरता का।

बलभद्र सिंह, ओमनगर, आलमबाग, लखनऊ हिन्दुस्तान : 14.6.16

'काव्य कलश' का लोकार्पण

भावना के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के सदस्य, सुप्रसिद्ध भजन-गायक एवं कवि इंजी. उदयभान पाण्डेय 'भान' की सद्य प्रकाशित काव्य कृति, **'काव्य-कलश'** का लोकार्पण समरोह 03 जुलाई-2016 को लखनऊ स्थित उ.प्र. हिन्दी संस्थान के यशपाल सभागार में लखनऊ की साहित्यिक संस्था नवपरिमल के अध्यक्ष श्री मदनमोहन सिन्हा 'मनुज' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रसिद्ध न्यायमूर्ति (से.नि.) श्री श्रीनाथ सहाय जी मुख्य अतिथि एवं डॉ. शम्भूनाथ जी, श्री उदयप्रताप सिंह जी तथा श्री गोपाल चतुर्वेदी जी मुख्य अतिथि थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में हिन्दी संस्थान के निदेशक श्री मनीष शुक्ल जी तथा काव्यकलश पर समीक्षात्मक वार्ता एवं चर्चा हेतु डॉ. उषा सिन्हा तथा प्रसिद्ध शायरद्वय श्री वी.पी.श्रीवास्तव 'बेखुद' तथा नाज़ प्रतापगढ़ी जी भी उपस्थित थे। इस समारोह का आयोजन लखनऊ स्थित नवपरिमल, बिम्बकला केन्द्र तथा भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था जिसका कुशल संचालन प्रसिद्ध शायर साहित्यभूषण श्री देवकीनन्दन 'शांत' जी द्वारा किया गया। बिम्बकला केन्द्र के अध्यक्ष एवं भावना के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के सदस्य, सुमधुर कंठ के धनी तथा कवि श्री अशोक मेहरोत्रा जी ने जब स्वरचित गीत-**तेरी स्तुति मैं क्या गाऊँ** द्वारा सरस्वती वंदना की तो पूरा सभागार मंत्रमुग्ध रह गया। भावना के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार शुक्ल जी ने अपने स्वागत भाषण में उक्त कृति के रचनाकार श्री उदयभान पाण्डेय जी की जमकर प्रशंसा की। सभी अतिथियों का पुष्पहार पहनाकर, बैज लगाकर तथा मोमेन्टो देकर स्वागत किया गया। उसके बाद हुआ गुलाबी घूँघट में मुंह छिपाए हुए कृति के घूंघट का अनावरण और काव्यकलश के रस का पान। कृति के लोकार्पण के तत्काल बाद श्री पाण्डेय जी ने अपनी उक्त कृति से - कुछ नऽ सुझात बा (भोजपुरी), कुछ भी न मेरे पास, तेरा आस्तां तो है (ग़ज़ल), प्यार करते हो तो इकरार क्यों नहीं करते? (ग़ज़ल) तथा आज की नारी (अबला अब भान हुई झाँसी की रानी (मुक्तक) का सस्वर गायन किया तो श्रोताओं की तालियों से पूरा सभागार गड़गड़ा उठा। उसके बाद काव्यकलश के विषयवस्तु पर चर्चा हुई जिसमें नवपरिमल से जुड़े डॉ. अरुणेन्द्र चन्द्र त्रिपाठी जी ने उक्त कृति की भोजपुरी रचनाओं के रचनापक्ष पर प्रकाश डाला। श्री वी.पी. श्रीवास्तव 'बेखुद' तथा नाज़ प्रतापगढ़ी जी ने इसकी ग़ज़लों पर रोशनी डाली। लखनऊ विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान की पूर्व अध्यक्ष डॉ. उषा सिन्हा जी ने कृति की विस्तृत समीक्षा करते हुए इसके कला एवं भाव पक्ष का विस्तृत विवेचन किया। मंचस्थ सभी अतिथियों ने कृति की भूरि भूरि प्रशंसा की तथा लगभग सभी ने कृतिकार को यह भी सलाह दी कि वे भोजपुरी रचनाओं की ओर विशेष ध्यान दें तो वे भोजपुरी साहित्य के एक दिन दैदीप्यमान नक्षत्र बन सकते हैं।

यह समारोह दो चरणों में चला। पहले चरण में काव्य कलश का लोकार्पण तथा दूसरे चरण में काव्य कलश की कुछ रचनाओं की संगीतमय प्रस्तुति हुई।

इस समारोह में भावना के सदस्यों/पदाधिकारियों में से इसके संरक्षक एवं न्यायमूति-द्वय (से.नि.) कमलेश्वर नाथ जी एवं श्री सुधीर चन्द्र वर्मा, अध्यक्ष श्री विनोद कुमार शुक्ल, श्री अरविन्द कुमार गोयल, श्री जगत बिहारी अग्रवाल, श्री विश्वनाथ सिंह, श्री विनोदचन्द्र गर्ग, श्री अरुण कुमार, डॉ. छेदालाल वर्मा, कर्नल राजेन्द्र नाथ कालड़ा, श्री राजदेव स्वर्णकार, श्री सुशील कुमार शर्मा, श्री संतोष प्रकाश माथुर, श्री अशोक मेहरोत्रा, श्री देवकीनन्दन शांत, अमरनाथ आदि उपस्थित थे। इनमें से श्री विनोद कुमार शुक्ल, कर्नल राजेन्द्र नाथ कालड़ा तथा श्री सुशील कुमार शर्मा, एवं श्री संतोष प्रकाश माथुर सपत्नीक थे तो श्री देवकी नन्दन शान्त जी का लगभग पूरा परिवार इस समारोह को भव्यता प्रदान कर रहा था। बिम्ब कलाकेन्द्र के महासचिव हास्य-रसावतार श्री राजेश अरोरा 'शलभ', श्री शिव भजन

'कमलेश', डॉ. सुभाष चन्द्र 'गुरुदेव', डॉ. कमलेश नारायण श्रीवास्तव, श्री बीपी श्रीवास्तव 'बेखुद', श्री विप्लव सक्सेना, श्रीमती सौम्या सक्सेना, श्रीमती रमा सिंह, श्रीमती विद्या बिन्दु सिंह आदि अन्य कवियों/साहित्यकारों ने भी उपस्थित होकर इस समारोह को काव्यमय बना दिया। इस समारोह में आए प्रत्येक आगन्तुक को काव्यकलश की प्रति उपहार स्वरूप प्रदान की गई तथा शानदार नाश्ते का रसास्वादन कराया गया। यह अजीम-ओ-शान समारोह वास्तव में काव्यप्रेमियों के लिए एक यादगार बन कर रह गया।

काव्य-कलश : 240 पृष्ठों के इस वृहत संकलन में भजन, गीत, ग़ज़ल, नज़्म, कजरी, चैती, सोहर, मुक्तक व क़तआत है। पूरी पुस्तक तीन खंडों में विभाजित है। पहले खंड में 06 भोजपुरी मिलाकर कुल 32 भजन है। दूसरे खण्ड में 46 गीत जिनमें 10 भोजपुरी है। तीसरे खण्ड में 54 ग़ज़लें, 13 नज़्में, 30 क़तआत और 18 मुक्तक हैं। मनसा पब्लिकेशन्स, विराम खंड गोमती नगर, लखनऊ द्वारा जुलाई 2016 में ही प्रकाशित इस कृति का मूल्य 250 रुपये है। इसे क्रियेटिव इंक, हिमांशु सदन, पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित किया गया है। इसका ISBN : 978-93-81377-94-9 है। इस पुस्तक में श्री मदन मोहन सिन्हा 'मनुज', डॉ. उषा सिन्हा, न्यायमूर्ति श्रीनाथ सहाय, डॉ. शम्भुनाथ, श्री उदयप्रताप सिंह, श्री गोपाल चतुर्वेदी, नाज़ प्रतापगढ़ी, श्री वीपी श्रीवास्तव 'बेखुद', प्रो. चित्तरंजन कर, भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति, बिम्ब कला केन्द्र, श्री देवकी नन्दन शान्त, जी ने अपनी शुभानुशंसाओं से इसे सिंचित किया है। श्री विजय कुमार सिंघल, सम्पादक जय-विजय, श्री कमला कान्त मिश्र 'कांत', नाटककार वाराणसी, अशोक कुमार मेहरोत्रा 'अशोक', अमरनाथ एवं राजेश अरोरा शलभ ने अपने काव्यमय उद्गारों से इसे सुवासित किया है। इस पुस्तक के बारे में स्वयं कृतिकार का कथन है कि -

ये कलश भजन-गीत-ग़ज़ल का दयार है।
दौलत मेरे जज्बात की, ये बेशुमार है।
जनाब नाज़ प्रतापगढ़ी जी के शब्दों में -
यह काव्य कलश यूँ तो है पहली ही
कृतिकार को लेकिन ये अमर कर देगी।
जनाब वी.पी. श्रीवास्तव 'बेखुद' के शब्दों में -
काव्य का यह कलश, दिलकश गुलफिशानी दे रहा है
भान की नाज़ुक ख़याली की निशानी दे रहा है।
श्री देवकी नन्दन 'शांत' जी के शब्दों में -
गीत, ग़ज़लों से सराबोर कलश छलका है
छंद-भजनों से वे पुरजोर कलश छलका है।
श्री राजेश अरोरा शलभ जी के शब्दों में -
गीत और छन्द लिखें, ग़ज़ल के बन्द लिखें
गान का भी मान है, सटीक ताल लय है।

क्या हम स्वयं को इंसान कह सकते हैं?

गाड़ी नहीं मिली तो कंधे पर ले चला पत्नी का शव (एनबीटी 27.8.16)

कालाहांडी जिले में एक आदिवासी व्यक्ति को अपनी पत्नी के शव को अपने कंधों पर लेकर करीब 10 किमी. तक चलना पड़ा। उसे अस्पताल से शव को घर तक ले जाने के लिए कोई वाहन नहीं मिला था। दाना मांझी के साथ उसकी 12 साल की बेटी भी थी। 42 साल की महिला को बुधवार रात को भवानीपटना में जिला मुख्यालय अस्पताल में टीबी के कारण मौत हो गई थी। उसके बाद कुछ स्थानीय पत्रकारों ने उन्हें देखा। तब बाकी 50 किमी. की दूरी के लिए एक एंबुलेंस की व्यवस्था हुई।

शव यात्रा को नहीं दिया गया रास्ता (एनबीटी 27.8.16)

जबलपुर में शुक्रवार को रेत माफिया और गुंडों ने एक महिला की शवयात्रा को अपनी जमीन से होकर नहीं गुजरने दिया। साथ ही श्मशान घाट का रास्ता बंद कर दिया। इसलिए एक परिवार को शवयात्रा लेकर तालाब से गुजरना पड़ा।

प्रसव पीड़ा में चली 6 किमी पैदल (एनबीटी 27.8.16)

एमपी के छतरपुर जिले में एंबुलेंस न मिलने पर एक महिला को प्रसव के लिए 6 किमी. पैदल चलना पड़ा। यह हालत तब है जबकि राज्य में ऐसी इमरजेंसी के लिए जननी एक्सप्रेस वाहन चलाया जाता है।

कारगिल विजय दिवस

26 जुलाई, 2016, लखनऊ कामर्शियल टैक्स रिटायर्ड आफिसर्स एसोसिएशन उ.प्र. (COMRON) द्वारा राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में कारगिल विजय दिवस पर शहीद परिवारों एवं भूतपूर्व वीर सैनिकों का सम्मान समारोह मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री भानु प्रताप सिंह, आई.पी.एस., डायरेक्टर जनरल पुलिस विजलेंस उत्तर प्रदेश रहे। मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा कि कारगिल दिवस पर मनाये जाने वाले इस कार्यक्रम से देश के नवयुवकों का आकर्षण सेना की तरफ बढ़ेगा एवं भारतीय सैनिकों का भी मनोबल बढ़ेगा, जिनके शौर्य एवं बलिदान के कारण ही हमारी सीमायें सुरक्षित हैं, आतंकवादियों का हौसला पस्त हुआ है और इसी कारण हम सब चैन की नींद सो पाते हैं। डॉ. वीरेन्द्र बहादुर सिंह ने सभी सम्मानित होने वाले अमर शहीदों एवं भूतपूर्व वीर सैनिकों को कीर्ति गाथा को जब सभागार में उपस्थित लोगों के सामने उद्‌बोधित किया तो लोगों की आँखे नम हो गई। निम्न सैनिकों एवं शहीद परिवारों को सम्मानित किया गया :-

अमर शहीद परिवार

1. शौर्य चक्र अलंकृत अमर शहीद लेफ्टीनेंट हरी सिंह बिष्ट की माता जी श्रीमती शांति बिष्ट।
2. शौर्य चक्र अलंकृत अमर शहीद मेजर समीरुल इस्लाम की धर्मपत्नी श्रीमती फौजिया इस्लाम।
3. शौर्य चक्र अलंकृत अमर शहीद मेजर कमल कालिया की धर्मपत्नी श्रीमती अर्चना कालिया।
4. शौर्य चक्र अलंकृत अमर शहीद कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह के पिताजी लेफ्टिनेन्ट कर्नल विजय सिंह।
5. सेना मेडल अलंकृत नायक राम प्रसाद यादव के पुत्र श्री राम पाल यादव (फैजाबाद)

भूतपूर्व वीर सैनिक

1. कीर्ति चक्र अलंकृत कर्नल अजीत सिंह।
2. सेना मेडल अलंकृत ले. कर्नल अजीत सिंह।
3. कीर्ति चक्र अलंकृत ले. कर्नल दीपक तिवारी (तैनाती हैदराबाद) के लिये उनकी तरफ से उनकी माता जी श्रीमती नीरू तिवारी।
4. महावीर चक्र अलंकृत कोमोडर अरविन्द सिंह।

समारोह के लक्ष्यप्रतिष्ठ अतिथि परमवीर चक्र अलंकृत अमर शहीद कैप्टन मनोज पाण्डेय के पिताजी श्री गोपी चन्द्र पाण्डेय तथा निदेशक सैनिक कल्याण ब्रिगेडियर अमूल्य मोहन रहे। समारोह में अन्य सम्मानित अतिथियों में प्रमुख रहे भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार शुक्ल एवं ज्वाइंट पेंशनर फेडरेशन उत्तर प्रदेश के महासचिव श्री एन.पी. त्रिपाठी। सभी अतिथियों ने अपने उद्‌बोधन में देश के सैनिकों की कतर्व्यपरायणता एवं उनके त्याग तथा बलिदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। समारोह में सुश्री रश्मि तिवारी (रोशनी तिवारी) ने अपने कोकिल कंठ से देश भक्ति के गीत 1- **'ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी**, 2- **अय मेरे प्यारे वतन, तुझपे दिल कुर्बान**, गाकर लोगों का मन मोह लिया। शौर्य चक्र अलंकृत अमर शहीद लेफ्टिनेन्ट हरी सिंह बिष्ट की भांजी कु. इशिता ने देश के सैनिकों का मनोबल बढ़ाने वाला गीत गाया। समारोह के अन्त में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ जिसमें कलाश्री शमशुर रहमान (स्वर्णहंस नृत्य कला मंदिर, लखनऊ) के कलाकारों द्वारा देशभक्ति से सम्बन्धित मनोहारी नृत्य प्रस्तुत किये गये। **कामरान** द्वारा आयोजित वीर सैनिकों व शहीदों की स्मृति में आयोजित इस कार्यक्रम की आम जनता ने खुले दिल से सराहना की। वास्तव में ऐसे कार्यक्रम इन बहादुर सैनिकों के प्रति हमारी स्मृतियों को उजागर करती है और उनके परिवारों का मनोबल बढ़ाती है। यद्यपि कार्यक्रम **कामर्शियल टैक्स रिटायर्ड आफीसर्स एसोसिएशन उ.प्र.** द्वारा आयोजित तथा और इस संस्था के कर्मठ एवं ऊर्जावान पदाधिकारी तथा सदस्य इसको सफल बनाने में पूरी लगन के साथ जुटे रहे। लेकिन इस संस्था का एक अतिउत्साही ऊर्जा से लबालब तथा शहीदों के प्रति पूरे मन से समर्पित कार्यकर्ता/अधिकारी ऐसा था जिसके प्रत्येक कदम पर पूरे सभागार की प्रशंसनीय नजर पड़ रही थी। वह है इस संस्था के महासचिव श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह। प्रत्येक सम्मानित शहीद एवं वीर सैनिक के बायोडाटा प्राप्त करके उन्हें सभागार में पढ़कर सुनाना कम रोमांचकारी नहीं है। कामरान संस्था की जितनी प्रशंसा की जाय वह कम है और उससे ज्यादा प्रशंसनीय रहा श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह का यह सम्पूर्ण आयोजन, प्रबन्धन, संचालन एवं समापन। शाबास कामरान। सभी शहीद एवं वीर सैनिकों को भावना का सलाम।

(सम्बन्धित शहीदों एवं वीर सैनिकों की फोटो आवरण पृष्ठ-3 पर देखें।

सीनियर सिटिजन कैसे उठाएं टैक्स छूट का लाभ

यह सही है कि सेवानिवृत्ति के बाद सीनियर सिटीजन की श्रेणी में आने पर ज्यादातर लोग कर दायरे से बाहर आ जाते हैं। लेकिन एक बड़ी संख्या ऐसे बुजुर्गों की भी है जिनकी आमदनी के स्रोत सीनियर सिटीजन होने के बाद भी बने रहते हैं। इसलिए इन्कम टैक्स की छूट का लाभ इस श्रेणी के नागरिकों को भी मिलता है। और अब तो इनकम टैक्स छूट के लिहाज से देखें तो सरकार ने बुजुर्गों का भी दो श्रेणियों में बांट दिया है-सीनियर सिटिजन 60-80) और सुपर सीनियर (80 वर्ष से अधिक)। वित्त मंत्री ने बजट में इन दोनों के लिए कई तरह के कर छूट लाभ प्रदान किए हैं। उचित प्लानिंग और उन पर नियम से पालन अधिक मात्र में टैक्स की बचत करा देता है। तीन लाख रुपये तक की सालाना आय वाले सीनियर सिटिजन को आयकर के दायरे से बाहर रखा गया है। जबकि तीन लाख से पांच लाख रुपये तक की सालाना आमदनी वाले सीनियर सिटिजन पर तीन लाख रुपये से अधिक की आमदनी पर दस फीसद की आयकर दर लागू होगी। जबकि इस श्रेणी में आने वाले सुपर सीनियर सिटिजन की टैक्स दायरे से बाहर रखा गया है। पांच लाख से दस लाख रुपये की सालाना आमदनी वाले सीनियर सिटिजन को पांच लाख रुपये से अधिक की आमदनी पर 20 फीसदर की दर से टैक्स अदा करना होगा। यही नियम सुपर सीनियर सिटिजन पर लागू होगा। दस लाख रुपये से अधिक सालाना आमदनी वाले वरिष्ठ व अति वरिष्ठ नागरिकों को इस सीमा से अधिक की आमदनी पर तीस फीसद की दर से टैक्स अदा करना होगा। अलबत्ता दोनों ही श्रेणी के बुजुर्ग नागरिकों को अग्रिम टैक्स भरने से छूट दी गई है बशर्ते उनकी आमदनी बिजनेस अथवा किसी पेशे से न आती हो। बुजुर्ग नागरिक भी टैक्स में छूट का लाभ लेने के लिए आयकर अधिनियम की धारा 80 सी के तहत आने वाली स्कीमों का लाभ ले सकते हैं। इनमें जीवन बीमा, पीपीएफ, इक्विटी लिंक्ड म्यूचुअल फंड्स, पांच साल की लॉक इन अवधि वाले बैंक एफडी व डाकघर सीनियर सिटिजन सेविंग स्कीम आदि शामिल हैं। पांच वर्षीय एफडी करते समय फार्म 15एच भरने पर ब्याज पर टीडीएस से छूट का लाभ भी ले सकते हैं।

बुजुर्ग होम लोन पर भी सामान्य नागरिकों से अधिक छूट के हकदार हैं। यदि कोई बुजुर्ग नागरिक जिस घर में खुद रहता है उसके लिए होम लोन की मूल राशि पर दो लाख रुपये की टैक्स छूट का लाभ ले सकता है। जबकि इस होम लोन की अदायगी में ब्याज भुगतान पर तीन लाख रुपये की आयकर छूट बुजुर्ग नागरिकों को मिलेगी। चिकित्सा खर्चे पर बुजुर्गों के लिए तीस हजार रुपये की आयकर छूट का प्रावधान है लेकिन यह छूट मेडिकल इंश्योरेंस पॉलिसी पर ही मिलेगी। जबकि सुपर सीनियर सिटिजन जिनके पास मेडिकल कवरेज नहीं है वे भी चिकित्सा खर्च पर तीस हजार रुपये की आयकर छूट ले सकते हैं। इसी तरह विशेष बीमारियों के इलाज पर सीनियर सिटिजन के लिए 60000 रुपये तक के खर्च को आयकर से मुक्त रखा गया है। जबकि यह सीमा सुपर सीनियर सिटिजन के लिए 80000 रुपये की है। इसलिए टैक्स दायरे में आने वाले वरिष्ठ नागरिकों को आयकर में छूट के मिलने वाले इन लाभों के मुताबिक ही शुरू से प्लानिंग करनी चाहिए ताकि साल के अंत में अधिक से अधिक बचत का लाभ ले सकें। राइट होराइजन, जागरण : 18.07.2016

रिटायरमेंट के लिए 47 फीसद भारतीय नहीं कर रहे बचत

रिटायरमेंट के बाद वित्तीय सुरक्षा की अहमियत बढ़ जाती है। यह और बात है कि भारत में कार्याशील लोगों में 47 फीसद ने सेवानिवृत्ति के लिए या तो बचत शुरू नहीं की है या फिर बंद कर दी अथवा ऐसा करने में उन्हें मुश्किल पेश आ रही है। यह ग्लोबल औसत 46 फीसद से अधिक है। एचएसबीसी की रिपोर्ट में यह बात कही गई है।

इसमें 17 देशों के 18207 लोगों की प्रतिक्रिया ली गई। इन देशों में अर्जेंटीना, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, मिस्र, फ्रांस, हांगकांग, भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया, मेक्सिको, सिंगापुर, ताइवान, संयुक्त अरब अमीरात, ब्रिटेन और अमेरिका शामिल है। रिपोर्ट में चिंताजनक पहलू यह है कि भारत में जिन 44 फीसद लोगों ने भविष्य के लिए बचत शुरू की थी, उन्होंने उसे रोक दिया है या ऐसा कर पाने में कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। जागरण : 18.07.16

राज्य कर्मचरियों एवं पेंशनर्स को कैशलेस चिकित्सा अनुमन्य

संख्या-217/2016/2108/पांच-6-16-19(जी.)/16

प्रेषक,

अरूण कुमार सिन्हा,

प्रमुख सचिव, उ.प्र. शासन।

सेवा में,

महानिदेशक,

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं, उ.प्र., लखनऊ

चिकित्सा अनुभाग-6 लखनऊ : दिनांक 29 अगस्त, 2016

विषय : राज्य कर्मचारियों एवं पेंशनरों को कैशलेस चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराये जाने के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक वित्त विभाग के अर्द्धशासकीय पत्र संख्या-वे.आ.-2-541/दस-16, दिनांक 06.05.16 व आपके पत्र संख्या-महा.निदे./कैम्प/2016/481 दिनांक 05.08.16 व अर्द्धशासकीय पत्र संख्या-11फ/2016 महा.निदे./कैम्प/438, दिनांक 26.07.16 के अनुक्रम में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि राज्य कर्मचारियों एवं सेवानिवृत्त राज्य कर्मचारियों (पेंशनरों) को कैशलेस चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराये जाने हेतु प्रमुख सचिव, वित्त की अध्यक्षता में गठित समिति की संस्तुतियाँ को स्वीकार करते हुए शासन द्वारा सम्यक विचारोपरान्त राज्य कर्मचारियों एवं सेवानिवृत्त राज्य कर्मचारियों (पेंशनरों) को कैशलेस चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराये जाने का सैद्धान्तिक निर्णय लिया गया है।

2- उक्त के दृष्टिगत उ.प्र. सरकार सेवक चिकित्सा परिचर्या नियमावली, 2011 यथा संशोधित नियमावली 2014 में सक्षम स्तर का अनुमोदन प्राप्त करते हुए सुसंगत नियमों में संशोधन की कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। कृपया तद्नुसार अग्रेतर कार्यवाही सुनिश्चित करने का कष्ट करें।

भवदीय,

अरूण कुमार सिन्हा, प्रमुख सचिव।

शव की हड्डियां तोड़ गठरी में पहुंचाया, (एनबीटी. 27.8.16)

80 साल की विधवा, सलमानी बेहड़ा की बालासोर जिले में बुधवार सुबह सोरे रेलवे स्टेशन के पास मालगाड़ी के नीचे आ जाने से मौत हो गई थी। उनके शव को सोरो कम्युनिटी हेल्थ सेंटर लै जाया गया मगर वहां पोस्टमार्टम की सुविध ा नहीं थी। शव को ट्रेन से बालासोर जिला ले जाना था मगर एंबुलेंस मौजूद नहीं थी। सोरो जीआरपी के असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर प्रताप रूद्र मिश्रा का कहना है कि आटो रिक्शा ड्राइवर शव रेलवे स्टेशन हो जाने के लिए ज्यादा पैसे मांग रहा था इसलिए सीएचसी के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के जरिए शव को रेलवे स्टेशन पहुंचाने का फैसला किया। देरी होने से शव अकड़ गया था इसलिए शव बांधने में परेशानी हो रही थी इसलिए उन्होंने कूल्हे के पास से शव को तोड़ दिया, उसके बाद उसे पुरानी चादर में लपेटा, एक बांस से बांधा और दो किलोमीटर दूर स्थित रेलवे स्टेशन ले गए। उसके बाद शव को ट्रेन से ले जाया गया।

वहीं दो महिलाओं के शवों के साथ कथित तौर पर अमर्यादित व्यवहार के बारे में मीडिया की खबरों का स्वतः संज्ञान लेते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने ओडिशा की सरकार को नोटिस जारी किया और उससे एक महीने के अंदर रिपोर्ट सौंपने को कहा। ओडिशा मानवाधिकार आयोग ने भी डीएम को नोटिस जारी कर 4 सप्ताह में रिपोर्ट मांगी।

Suicide Prevention

• Dr. Anjali Gupta
Clinical Psychologist, (Nur Manzil Psychiatric Centre) & First year M.Phil Clinical Psychology Trainees (Amity University) Lucknow, Member - Bhavana Training & Seminar cell

Suicide is the act of deliberately killing oneself (WHO) Suicide prevention is a term used for the collective efforts to reduce the incidence of suicide through preventive measures. The first World Prevention Day was held in 2003 and was an initiative of the international Association for Suicide Prevention (IASP) and the World Health Organization (WHO) Since then, World Suicide Prevention Day has taken place on 10th September each year. The theme of the 2016 world suicide prevention day is **"connect, communicate, care"**. The need for observing the day arises from the finding of WHO that over 800000 people die by suicide each year that is one person every 40 second.

Risk Factors - The risk factors for suicide include mental disorder (such as depression, personality disorder, alcohol dependence, schizophrenia) physical illnesses (such as neurological disorders cancer, and HIV infection), interpersonal conflicts etc.

Myths and Facts - There are certain myths and Facts about suicide the myths are **"We can't stop people who want to kill themselves,** informing someone about our friend's suicidal tendency is betraying their trust; Sharing with my friend about suicide will only make it worse etc.. But the facts are "we can help our friend and save her/him from possible danger, we need to talk about it. Through ventilating our emotions (catharsis) one realizes the need for help, Most suicidal people don't want to die but this is last cry for help."

Warning signs - Suicide does not occure all on a sudden, there will be some warning signs and symptoms. We have to be carefully observes the followings signs, thinking or talking about suicide, focusing on death and dying, reading about suicide, writing about death and/or suicide, talking about feeling worthless or hopeless, increased use of drugs or alcohol, increased conflicts with friends, room-mates, peers, teachers, giving away possessions, engaging in reckless behaviors and collecting lethal instruments (guns, razors, rope etc.), or harmful medicines etc.

Do's and Don'ts - While dealing with such persons who are showing these signs we have to follow certain Do's and Don'ts. We have to take suicide risk seriously, but at the same time we have to stay calm, listen and accept their feelings. We have to ask directly about thoughts of suicide, and try not to judge or argue. Do not be afraid, be persistent and have patience while they answer, be honest and express concern and we have to offer full support. We have to make him aware that he needs help to handle his problems, and we should not argue with the person. The suicidal thoughts are neither silly thoughts nor a secret but they have to be viewed seriously and contact immediately your nearest health care service center.

पेंशनर्स को केन्द्र का उपहार

केन्द्र,जीवन प्रमाणपत्र (डिजीटल लाइफ सर्टिफिकेट) की प्रक्रिया को सीनियर सिटिजन्स कि लिए और सरल बनाना चाहता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा २०१४ में लॉच जीवनप्रमाण के पहले वर्जन के द्वारा पेंशनर्स को यह सुविधा दी गई थी कि वे आधार के जरिए स्वयं जीवित होना प्रमाणित कर सकते हैं जिससे उन्हें किसी भी सरकारी कार्यालय में जाने की जरूरत ही नहीं रह जाएगी। नए प्रस्ताव 'जीवन प्रमाण-२' को लागू करने से वे अपने ताजा आधार प्रमाण को अपने घर से ही ई-मेल अथवा डाक द्वारा भी अपने सम्बंधित कार्यालय में भेज सकेगें। नए पोर्टल के द्वारा आधार नम्बर धारक को यह हक होगा कि वह अपने जीवन प्रमाण रिकार्ड्स ऑनलाइन एक्सेस कर सकें या आधार ऐप के जरिए देख सके जिससे उसे पता चलेगा कि कितनी बार उसने आधार का प्रयोग किया है। हर ऑथेन्टिफिकेशन के बाद ई-मेल ऐड्रेस देने वाले शख्स को ई-मेल मिलेगा और ऐसे ऑथेन्टिफिकेशन की ट्रांजैक्शन हिस्ट्री भी मिलेगी। (नवभारत टाईम्स-दिनांक २१-०६-२०१६)

व्यंग्य

शादी कार्ड- एक ऐसा भी

(नशामुक्ति अभियान के तहत कुमारी बीड़ी की शादी के कार्ड को स्वयं तो पढ़ें ही, दूसरों को भी पढ़वायें।)

(नशेड़ियों, गंजेडियों, सुलफियों, शराबियों, अफीमचियों,तम्बाकियों एवं भंगड़ियों को शादी में पधारने का खुला आमन्त्रण)

अमंगलम् गुटखा खाद्यम्, अमंगलम् धूम्रपानम्, अमंगलम् मद्यपानम्, अमंगलम् सर्व व्यसनम्।

कराग्रे बसते बीड़ी, कर-मध्ये चुरुटम्, कर-मूले स्थिते गुटखा, प्रभाते कर दर्शनम्।।

भगवान सोमरस एवं भगवती वारुणी देवी के परम आशीर्वाद से-

दुर्भाग्यवती **बीड़ी कुमारी** उर्फ सिगरटी देवी — मृतात्मा **कैंसर कुमार** उर्फ लाईलाज कुमार

कुपुत्री श्री तम्बाकूलाल जी एवं श्रीमती चुटकी देवी **संग** **कुपुत्र श्री गुटखालाल जी एवं श्रीमती भांग देवी**

निवास- ४२० यमलोक हाउस,चुटकीगली, दुखनगर,(यमलोक) निवास-गंजरिया मोहल्ला व्यसनपुर, (नर्क लोक)

का, अशुभ विवाह तय हुआ है। अतः इस भयानक अवसर पर चाचा गाँजा सिंह,चाची अफीम देवी, दादा हुक्का मल, दादी शराबो, मामा चरस सिंह, मामी कॉफी देवी, नाना कड़क चायवाला, नानी मस्त हैरोईन, चूना ताऊ जी, ताई सुगन्धित सुपारी, फूफा जर्दा राम जैसें बुजुर्गों की उपस्थिति में नवदम्पत्ति को अभिशाप प्रदान करने हेतु आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

(पता -चिन्ता भवन, कष्ट मोहल्ला, दुगर्ति गली, दुःखनगर, जिला परलोक)

विवाह स्थल - श्मशान घाट, बारात आगमन अनिश्चित।

नोट- १.बारात एम्बूलेंस द्वारा, कैंसर अस्पताल होते हुए, कालघड़ी में श्मशानघाट पहुँचेगी।

२.बारातियों का स्वागत बड़ी धूमधाम से श्मशानघाट पर यमराज महोदय अपने यमदूतों के साथ करेंगे। वहीं पर प्रत्येक बाराती को यमराज जी द्वारा विशेषरूप से तैयार कराए गए कीमती कफ़न भी उपहार स्वरूप दिए जाएँगें और प्रत्येक बाराती को उन्हीं के द्वारा गंगाजल का आचमन भी कराया जाएगा।

दर्शनाभिलाषी :
सेठ दमा दास, श्रीमती टी.बी.देवी,
श्रीमती खाँसी बाई

स्त नशीली गोलियाँ, इन्जैक्शन एवं पिच्च-थू परिवार

विनीत :
बलगम, कुमारी कब्जी देवी

(हमाली बुआ जी की छादी में जलूल जलूल आना जी- मीठी सुपारी-पान मसाला, बाल मंच)

डा.नरेन्द्र देव (विशि ट सदस्य भावना एवं सचिव वैकल्पिक चिकित्सा प्रको ठ) द्वारा जन हित में जारी

वरदान धर्मार्थ नेत्र चिकित्सा सेवा संस्थान, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

उ.प्र. के मुजफ्फरनगर शहर में वहाँ के कुछ अति उत्साही वरिष्ठ नागरिकों ने स्थानीय जनता के सहयोग से एक धर्मार्थ निःशुल्क नेत्र चिकित्सालय की स्थापना की है। यह चिकित्सालय ७७ प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर में कार्यरत है। मात्र दस रुपये में अपना पंजीकरण कराकर एक माह तक चाहे कितनी ही बार आप निःशुल्क नेत्र परीक्षण करा सकते हैं। इस संस्थान का अपना ऑपरेशन-कक्ष और आवश्यक मशीने भी हैं। यह संस्थान लगभग तीन निःशुल्क नेत्र-कैम्प प्रत्येक माह आयोजित करता आ रहा है, जिसमें परीक्षण, दवा, आपरेशन, खाना-पीना तथा मरीज के घर से आने व जाने की निःशुल्क व्यवस्था यही केन्द्र करता है।

जाने किसने नजर लगा दी

जाने किसने नजर लगा दी, किया किसी ने टोना।
जहर उगलने लगा तभी से, घर का कोना-कोना।
घर की बहू, सास को मारे, सास बिचारी रोए
कैसी शिक्षा, कैसी संस्कति, सिर पर लेकर ढोए
फिर भी सास पांव को दाबे, बहू ठाठ से सोए
बेबस हुए टूट कर धागे, युग ने कभी संजोए।
जाने किसने नजर घुमा दी, तंत्र मंत्र रच ढोना।
जाने किसने नजर लगा दी, किया किसी ने टोना।
अमृत की आशा में बैठा, सोच रहा घर प्यारा।
सारे यत्न भुलाया देकर, खोया कंचन सारा
अपनी अपनी ढपली बजती, अपना धनबल प्यारा
हाथों में भर गया गरल सब, सबका न्यारा न्यारा
जाने किसने डगर सुझा दी, पड़ा सभी कुछ खोना।
जाने किसने नजर लगा दी, किया किसी ने टोना।
आँखों में आँसू भर लाई, दीवारें सब घर की
ईंट ईंट विह्वल हो बैठी, देख दशा घर भर की।
कभी किसी बूढ़े बाबा ने, नीव धरी थी घर की
सोचा था अमृत बरसेगा, कृपा रहे हरि-हर की।
जाने किसने प्रखर बना दी, हृदय पीर का होना
जाने किसने नजर लगा दी, किया किसी ने टोना।
तड़प-तड़प आँगन बेचारा, सूना सूना रोया
एक अकेला चूल्हा ठहरा, दूना दूना सोया
बंद हो गई शिशु किलकारी, बेमन खोया खोया
छप्पर छानी भरे उसांसे सब कुछ मन भर रोया
जाने किसने नजर गड़ा दी.. घर भर नयन भिगोना
जाने किसने नजर लगा दी, किया किसी ने टोना।
वृद्ध बखारी, खाली थाली, मन मसोस कर बैठी
अन्तर्भाव पढ़े क्या कोई, घर की ऐसी तैसी
कंचन वर्षा होती रहती, करें सभी अठखेली
कभी महल सी सजती रहती, अब रह गई अकेली
जाने किसने नजर लगा दी, किया कुकृत्या घिनौना।
जाने किसने नजर लगा दी, किया किसी ने टोना।
घर तो एक इकाई भर है, सारा विश्व यही है
घर घर की यह अकथ कहानी, सहती विश्व मही है
जाने कितनी बार धरा पर उठकर टिकी रही है
धरती तो धारण करने को तत्पर सही रही है
जाने किसने डगर भुला दी, पड़ा सभी कुछ खोना।
जाने किसने नजर लगा दी, किया किसी ने टोना।

डॉ. श्रीकृष्ण अखिलेश (गीतांकुरण से साभार)

थकान

- अमरनाथ

मैं अभी थका नहीं।।
मैं अभी चुका नहीं।
प्राण अभी शेष है
हौंसला घटा नहीं।।
मैं अभी थका नहीं।।
इक मंजिल है डगर
दूजी पर है नज़र
पास मेरे न समय
साँस लूँ, कहीं ठहर
जितनी अब जिन्दगी
चलना आठों पहर
साथी विश्वास है
शेष अभी आस है
साँस का पता नहीं।
मैं अभी थका नहीं।।
जोश अभी शेष है
होश अभी शेष है
साहस का ओजमय
कोश अभी शेष है
सपने गढ़ रहा मैं
आगे बढ़ रहा मैं
उम्र के ढलान पर
देह की थकान पर
मैं कभी रुका नहीं।
मैं अभी थका नहीं।।
आयु बढ़ेगी रोज
काम का घना बोझ
रिसती नित जिन्दगी
दास्ताँ कहती यही
कल पर न छोड़ काम
कर न अभी आराम
वक्त लौटता नहीं
लिया संकल्प यही
रुकुँगा न, रुका नहीं।
मैं अभी थका नहीं।।
रोज घटे जिन्दगी
पल पल अब कीमती
उम्र बढ़ती प्रतिपल
प्राण मन कर बेकल
होना रवि को अस्त
किन्तु नहीं मैं पस्त
उम्र के दबाव से
काल के प्रभाव से
मैं कभी झुका नहीं।
मैं अभी थका नहीं।।

तीन मुक्तक

माँ

उसके लबों पर कभी, बद्दुआ नहीं होती
वो केवल माँ होती जो खफ़ा नहीं होती
बेटे के सब गुनाह वो धोती रहती है
होती जब गुस्से में माँ, रोती रहती है।

प्यार

प्रिये! प्यार में तेरे रुसवा, जायें कहाँ दीवाने लोग?
जानें क्या-क्या पूछ रहे हैं, सभी जाने-पहचाने लोग?
जितना तुमको हमने चाहा, वे लोग भला क्यूँ चाहेंगे
माना तेरे दर आयेंगे, बहुत ही प्यार जताने लोग।

आदमी

मुहब्बत में दिखावे की, कभी, दोस्ती नहीं मिला
मिलना तुझको गले नहीं तो हाथ भी नहीं मिला
नाम थे घरों पर चमके और औहदें साथ में
किया बहुत तलाश मैंने, पर आदमी नहीं मिला।

अतुलेश कुमार
770, आराधना, उदयन-।, बंगला बाजार, लखनऊ

अभी तो शेष है मुझमें

अभी तो शेष है मुझमें,
अथक संघर्ष की क्षमता।
धुंधली होने लगी है किन्तु -
धुंधली सी किरण भी है।
मुझे लगता है यह संदेह,
बस यूंही अकारण है।।
अंधेरे भेद कब पाए,
भला उजियार की क्षमता।
साथ मेरे चले जो भी,
वही झिलमिल किरण होगा।
राग दीपक की लहरी से,
तिमिर का तम हरण होगा।।
समझ तूफान कब पाए,
तरणि-संघर्ष की क्षमता।
बहुत चाहा, नहीं जलयान,
तट की शरण जा पाये।
धैर्य संकल्प के आगे,
कहाँ तूफान टिक पाए।।
कहाँ साए की ठंडक में,
धूप की तपन सी क्षमता।
पला सायों में उसने कब,
जहां का दर्द जाना है।
तप दिनभर वही समझा,
दर्दे-गम का तराना है।
अँधेरे भ्रम के कब समझे,
मौन विश्वास की क्षमता।
नहीं होती कोई सीमा,
किसी भ्रम के निवारण की।
नहीं होती मगर श्रद्धा,
कभी यूंही अकारण ही।।
अहं का गीत क्या जाने,
समर्पण भाव की क्षमता।
अहं में अनसुनी चाहे,
करो तुम वन्दना मेरी।
समर्पण भाव में मैं तो,
तुम्हारे छंद गाता हूँ।

डॉ. श्याम गुप्ता
के-348, आशियाना, लखनऊ-226012

आज फिर उनकी नजरों में

तंज नजर उनकी नजरों में हमको आया है
हमें सताने को शायद फिर, अवसर पाया है।
बिछते जिन कदमों में मख़मल, हरदम रहते थे
नज़र हमें उनके पैरों में, छाला आया है।
आज ख़्याल फिर उनका हमको, मुज़्तरिब करेगा
अब्र सियाह बन अब फलक पर, हुआ नुमाया है।
तब्दीली उनकी तीनत में, आ नजर रही है
वक़्त ने शायद खेल कोई, नया खिलाया है।
उनके क़रीब होने का अब, मुग़ालता होता
शायद उनकी यादों का यह, मन पर साया है।
आता नहीं यक़ीन किसी पर, अब आसानी से
ज़िन्दगी ने सबक़ जो हमको यह सिखलाया है
तसव्वुरात से ग़ैर के ना, 'मौसम' का वास्ता
हमें पाक दामन उन्होंने, हरदम पाया है।

श्रीमती अंजली मालवीय 'मौसम'
439, उदयन-।,
बंगला बाजार, लखनऊ

(पुस्तक **'मौसमों के दरम्यान'** में छपी कविता 'आज फिर उनकी नजरों में' का 26 मात्रिक महाभागवत जाति के विष्णु छंद में रूपान्तरण (रूपान्तरणकार-अमरनाथ)

GOD ON LEAVE

ईश्वर आज अवकाश पर है-
मन्दिर की घण्टी ना बजाईये।।
जो बैठे हैं, बूढ़े बुजुर्ग, अकेले पार्क में-
जाकर उनके पास, कुछ समय बिताईये।।
ईश्वर आज अवकाश पर है-
मन्दिर की घण्टी ना बजाईये।।
ईश्वर है पीड़ित परिवार के साथ,
जो अस्पताल में आज परेशान है।
उस पीड़ित परिवार की जाकर कुछ मदद कर आईये।।
ईश्वर आज अवकाश पर है-
मन्दिर की घण्टी ना बजाईये।।
एक चौराहे पर खड़ा युवक काम की तलाश में है
उसके पास जाकर, उसे नौकरी के अवसर दिलाईये।।
ईश्वर आज अवकाश पर है-
मन्दिर की घण्टी ना बजाईये।।
ईश्वर है चाय की दुकान पर-
उस अनाथ बच्चे के साथ जो कपप्लेट धो रहा है
पाल सकते हैं, पढ़ा सकते हैं, तो उसको आप पढ़ाईये।।
ईश्वर आज अवकाश पर है-
मन्दिर की घण्टी ना बजाईये।।
एक बूढ़ी औरत जो दर दर भटक रही है
एक अच्छा सा लिबास, जाकर उसे दिलाईये
हो सकता हो तो उसे किसी नारी आश्रम में छोड़ आईये।।
ईश्वर आज अवकाश पर है-
मन्दिर की घण्टी ना बजाईये।।

संकलित- श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल

मैं उड़ती रहूँगी

सिर पर पल्लू है-
दिमाग की आँख खुली है।
पूरा घर बन्द है-
सूराखों से साँस लेती हूँ।
पूरी की पूरी ढकी हूँ-
मेरी दिल नंगा है।
जंजीरों से बँधी हूँ-
उड़ानें भरती हूँ।
मेरी खामोशी-
कहकहे लगाती है।
तुम पहरे बढ़ा दो-
मैं उड़ती रहूँगीं।
उड़ती रहूँगीं।।

गीता गैरोला
(प्रेरणा अंशु- अगस्त-२०१६ से साभार)

कबीर के दोहे

माटी कहे कुम्हार को, क्या तू रुंदें मोहिं।
एक दिन ऐसा होयगा, मैं रुंधूंगी तोहि।।
माला फेरत युग गया, पाया न मन का फेर
कर का मनका छांड़िकै, मन का मनका फेर।।
तिनका कबहुँ ना निंदए, जो पाँव तले है सोय
कबहुँ उड़ अँखियन पड़े, पीर घनेरी होय।।
गुरु गोविन्द दोनों खड़े, किसके लागों पांय
बलिहारी गुरु आपनें, गोविन्द दिया बताय।।
साई इतना दीजिए, जितना कुटुंब समाय
ता मैं भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।
धीरै धीरै रे मना, धीरै सब कुछ होय
माली सींचें केबरा, ऋतु आए फल होय।।
कबीर ते नर अंध है, गुरु के कहते और
हरि के रूठे, ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर।।
माया मरी न मन मरा, मर मर गए शरीर
आशा तृ णा ना मरी, कह गए दास कबीर।।
रति गंवाई सोय कै, द्योस गवांया खाय
हीरा जनम अमोल है, कौड़ी बदले जाय।।
दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय
जो सुख में सुमिरन करैं, तो दुख काहे को होय।।
बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर
पंथी को छाया नहीं, फल लागत अति दूर।।
उठा बगुला प्रेम का, तिनका चढ़ा अकाश
तिनका तिनके से मिला, तिन का तिन के पास।।
सातसमँद की मसि करौं, लेखनि सब बनराइ
धरती सब कागद करौं, हरि गुण लिख्या न जाइ।।

संकलित-इं.सतपाल सिंह
उपमहासचिव भावना

भारतीय तिरंगा-ध्वज के बारे में जानकारियाँ

• अमरनाथ

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के मूल परिकल्पक श्री पिंगले वैकेया थे। जिसमें बाद में अनेक सुझाव शामिल करते हुए भारत की संविधान सभा ने २२ जुलाई १९४७ को इसे अपनाया। इस ध्वज में समान अनुपात में तीन आड़ी पट्टियां है, जो तीन रंगो में रंगी हुई हैं। गहरा केसरिया ऊपर, सफेद बीच में, तथा गहरा हरा रंग सबसे नीचे। केसरिया रंग वीरता और बलिदान भावना का प्रतीक है तो सफेद शांति और सत्य मार्ग का। हरा रंग समृद्धि और भारत की कृषि प्रधानता को दर्शाता है। सफेद पट्टी के बीच में गहरे नीले रंग का चक्र है, जिसे धर्म-चक्र कहा गया है। इसका प्रारूप सारनाथ अशोक सिंह-स्तम्भ पर बने धर्मचक्र से लिया गया है। सारनाथ के मूल चक्र के शीर्ष पर चार सिंह एक दूसरे की ओर पीठ किए हुए खड़े है। इसके नीचे घंटे के आकार के पद्म के ऊपर एक चित्रवल्लरी में एक हाथी, एक दौड़ता हुआ घोड़ा, एक साँड, तथा एक सिंह की उभरी हुई मूर्तियाँ हैं जिनके बीच बीच में चक्र बने है। इस स्तम्भ के शीर्ष सिंहों के ऊपर धर्मचक्र उत्कीर्ण है। भारत सरकार द्वारा स्वीकृत राजचिह्न में तीन सिंह दिखाई पड़ते है। पद्म को इसमें से हटा दिया गया है। फलक के नीचे देवनागरी लिपि में **सत्यमेव जयते** अंकित है जो मुण्डक उपनिषद के तृतीय मुण्डक के प्रथम खण्ड के छठे श्लोक का अंश है। इस चक्र का व्यास लगभग सफेद पट्टी की चौड़ाई जितना है। इस चक्र में २४ तीलियां है जो दिन के चौबीस घंटो का प्रतीक हैं। यह चक्र हमें समझाता है कि जीवन में गतिशील बन, मेहनत से आगे बढ़, रुकने का अर्थ मृत्यु तथा अपने धर्म को मानो। ध्वज की लम्बाई चौड़ाई का अनुपात ३:२ है। १५ अगस्त १९४७ को राष्ट्रध्वज को पहली बार अधिकृत रूप में दिल्ली के लाल किले पर भारत के प्रथम प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा फहराया गया। उस समय इसे ३१ तोपों की सलामी दी गयी थी। २१ नवम्बर १९४७ को स्वतंत्र भारत के प्रथम डाक-टिकट पर भारतीय-ध्वज ही अंकित किया गया। १९५० में **'ध्वज-संहिता-चिह्न और नाम अधिनियम'** बनाया गया। प्रत्येक वर्ष ७ दिसम्बर को भारत में **झण्डा-दिवस** मनाया जाता है। भारत में अपने राष्ट्र के गौरव - प्रतीक राष्ट्रीय-ध्वज पर श्री श्याम लाल गुप्त पार्षद जी द्वारा एक झण्डा-गीत **'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा।'** लिखा गया है। २३ जनवरी २००४ को भारत के उच्चतम न्यायालय ने सभी नागरिकों को वर्ष के किसी भी दिन इसे अपने घरों पर फहराने की अनुमति दी। राष्ट्रीय सम्मान अधिनियम १९७१ के अनुसार इसे सार्वजनिक रूप से जलाना, फाड़ना, नष्ट करना,अथवा अपमानित करना संज्ञेय अपराध घोषित किया गया, जिसमें तीन वर्ष की सजा और जुर्माने का प्राविधान है। झण्डारोहण करने वाले व्यक्ति को राष्ट्रध्वज से तीन कदम की दूरी पर रहना चाहिए। इसे सलामी देने के बाद ही राष्ट्रगान शुरू होना चाहिए। राष्ट्रगान समाप्त होने के बाद सभी उपस्थित व्यक्तियों को हाथ जोड़कर, नमस्कार की मुद्रा में यह शपथ दोहरानी चाहिए, **''मैं राष्ट्रध्वज तथा सम्पूर्ण प्रभुता सम्पन्न समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य भारत की एकता व अखण्डता के लिए वचन-बद्ध हूँ जिसका यह राष्ट्रध्वज प्रतिनिधित्व करता है''।**

अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र, औरंगाबाद, लखनऊ

लगभग 15 वर्ष पहले मेरे पिता, श्री विनोद कुमार शुक्ला जी ने एक सपना देखा था। उन्होंने एक संस्था की स्थापना की और उनका नाम रखा ''भावना''। धीरे-धीरे एक जैसे विचार रखने वाले बहुत सारे लोग जुड़ते चले गये औश्र यह एक बड़ा संगठन बन गया। इस बार जब मैं लखनऊ अपने माता-पिता को मिलने गई तो मुझे ''भावना'' द्वारा संचालित एक स्कूल में जाने का मौका मिला। इस स्कूल में सड़क पर घूमने वाले बिल्कुल गरीब बच्चों को इकट्ठा करके पढ़ाया जाता है। ये बच्चे इतने गरीब हैं कि इनके पास सोने के लिये सिर के ऊपर छत भी नहीं है। पहले ये बच्चे पूरे दिन भीख मांगा करते थे पर अब ये बच्चे स्कूल में आकर न सिर्फ पढ़ते हैं बल्कि वो समाज में कैसे रहना चाहिये ये भी सीखते हैं। मुझे ये देखकर इतना अच्छा लगा कि वो मैं शब्दों में बता नहीं सकती। मैं इस कार्य के लिए श्री अमरनाथ जी और श्री चन्द्रभूषण तिवारी जी को बहुत-बहुत बधाई देा चाहती हूँ जो अपने पूरे तन-मन से इस क्षेत्र में कार्यरत हैं। मैं ''भावना'' से जुड़े सभी लोगों को उनके सहयोग के लिये धन्यवाद देती हूँ।

श्रद्धा पाण्डेय

पुत्री श्री विनोद कुमार शुक्ला, अध्यक्ष भावना

9-उप-महासचिव (एडवोकेसी)
संयोजक, वाह्य सम्पर्क तथा सदस्य अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ
सतपाल सिंह (वि.स.)
अधी.अभि. (से.नि.), सिंचाई विभाग, उ.प्र.
फोनः 09839043458
e-mail : satpalsngh@yahoo.com

10-उप-महासचिव (कार्यान्वयन)
संयोजक, ग्राम्यां. निर्धन-जन सेवा, भावना रसोई प्रबंधन एवं सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ (प्रभारी, इन्दिरा नगर क्षेत्र)
देवेन्द्र स्वरूप शुक्ल (वि.स.)
अधी.अभि. (से.नि.), उ.प्र. रा.वि.परिषद
फोन : 0522-4006191/09198038889
e-mail : devpreet1977@yahoo.com

11-विशेष कार्याधिकारी (सम्बद्ध अध्यक्ष)
तुंग नाथ कनौजिया (वि.स.)
अधि.अभि. (से.नि.), उ.प्र. रा.वि.उ.निगम
फोन : 09936942923/08738948562
e-mail : kartikeya.investments@yahoo.co.in

12-संयोजक, भावना विधि तथा RTI प्रकोष्ठ
डॉ. वीरेन्द्र बहादुर सिंह, महासचिव - COMRON
फोन : 0522-2391220/09415048537
e-mail : dr.kalchuri@yahoo.com

13-उप-महासचिव (प्रशासन)
संयोजक, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ
जगमोहन लाल जायसवाल (वि.स.)
सहा.अभि. (से.नि.), सिंचाई विभाग, उ.प्र.
फोनः 09450023111

14-कोषाध्यक्ष एवं सदस्य, भावना रसोई प्रबंधन
प्रेम शंकर गौतम (वि.स.)
महाप्रबन्धक (से.नि.), उ.प्र. वेयर हाउ.कार्पो. लि.
फोन : 0522-2713283/09451134894

15-सम्प्रेक्षक, संयोजक, संसाधन प्रबंध, सदस्य भावना रसोई प्रबंधन
मनोज कुमार गोयल (वि.स.)
अधि.अभि. (से.नि.), उ.प्र. आवास विकास परि.
फोन : 0522-2329439/09335248634
e-mail : goel_mk10@rediffmail.com

16-सह-कोषाध्यक्ष/सदस्य, ग्राम्यां.एवं निर्धन-जन सेवा
आदित्य प्रकाश सिंह, स्पेशल असिस्टेंट (से.नि.),
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इन्डिया। फोनः 09628180153

17-सम्पादक, भावना प्रकाशन, सचिव, अनौ. शिक्षण,
सदस्य सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ (कानपुर तथा रायबरेली रोड)
अमर नाथ, जू.इं. (से.नि.), लो.नि.वि., उ.प्र.
फोन : 09451702105

18-सदस्य, अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ
शैलेन्द्र मोहन दयाल
मुख्य अभि.(से.नि.), उ.प्र.रा.वि.परि.
फोनः 0522-2446086/09455550616
e-mail : smdayal39@gmail.com

19-सदस्य अनौपचारिक शिक्षण एवं पर्यावरण प्रकोष्ठ
चन्द्र भूषण तिवारी
पर्यावरण संरक्षण कार्यकर्ता, फोनः 09415910029

20-सदस्य, विधि तथा RTI प्रकोष्ठ
सुशील कुमार (वि.स.) I,A.S.
पूर्व मंडलायुक्त, बस्ती, फोनः 09415086130
e-mail : sushil.alka@gmail.com

21-सदस्य, विधि तथा RTI प्रकोष्ठ
श्री राम वाजपेयी (वि.स.)
डिप्टी कमिश्नर (से.नि.), वाणिज्यकर विभाग, उ.प्र.
फोनः 0522-2399000/09415367088
e-mail : shriram_vajpayee@yahoo.com

22-सदस्य, वाह्य सम्पर्क प्रकोष्ठ
सुभाष चन्द्र विद्यार्थी (वि.स.)
जू.इं. (से.नि.), लो.नि.वि., उ.प्र.
फोनः 0522-2756481/09415151323
e-mail : vidyarthisubhashchandra@gmail.com

23-सदस्य, वाह्य सम्पर्क प्रकोष्ठ
कृष्ण कुमार वर्मा
वरिष्ठ वित्त प्रबंधक (से.नि.), एच.ए.एल. (कोरवा, अमेठी)
फोनः 0522-2714804/09532405353
e-mail : vermakk2011@gmail.com

24-सदस्य, वाह्य सम्पर्क प्रकोष्ठ
सत्य देव तिवारी
वरिष्ठ शाखा प्रबंधक (से.नि.), यूनियन बैंक
फोनः 0522-2772874/09005601992
e-mail : satyadeo1948@gmail.com

25-सदस्य, वाह्य सम्पर्क प्रकोष्ठ
पुरुषोत्तम केसवानी, वरि. प्रबंधक (से.नि.), सेन्ट्रल बैंक
फोनः 0522-2321461/09450021082/08604967902
e-mail : purshottam.keswani@gmail.com

26-सदस्य, ग्राम्यांचल एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ
शैलेन्द्र कुमार तिवारी

चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर (से.नि.), एच.ए.एल.
फोन : 0522-2701126/4011486/09450664880
e-mail : shalkirty@gmail.com

27-सदस्य, ग्राम्यांचल एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ
रमेश प्रसाद जायसवाल (वि.स.)
अपर आयुक्त ग्रेड-1 (से.नि.), उ.प्र. वाणिज्य कर
फोनः 09760617045
e-mail : jaiswalrp1954@gmail.com

28-सदस्य, ग्राम्यां एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ,
विश्व नाथ सिंह
प्रगतिशील कृषक। फोनः 09415768055
e-mail : yogendra.lko20@yahoo.com

29-सदस्य, ग्राम्यांचल एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ
राम मूर्ति सिंह
सहा.अभि. (से.नि.), उ.प्र. पावर कॉर्पो. लि.
फोनः 09415438548
e-mail : rmmurtisingh231218@gmail.com

30-सदस्य, शिक्षा सहा.,डे-सेन्टर प्रबंधन, संसाधन प्रबंध
सुमेर अग्रवाल, व्यापारी-तीरथ पी.के. वेन्चर
फोनः 0522-3919319/09415025151
e-mail : sumeragarwal@gmail.com

31-सदस्य, शिक्षा सहायता एवं संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
सत्य नारायण गोयल (वि.स.)
व्यवसायी। फोनः 09335243519

32-सदस्य, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ
विनोद कुमार कपूर
फ़ेकल्टी (से.नि.), कॉलेज ऑफ़ टेक्नॉ., पंतनगर
फोनः 0532-2321002/09984245000
e-mail : vinodhkapur@rediffmail.com

33-सदस्य, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ
सिद्धेश्वर नाथ शर्मा (वि.स.)
अधी.अभि. (से.नि.), सिंचाई विभाग, उ.प्र.
फोनः 07524968080
e-mail : siddheshwar.sharma@gmail.com

34-सचिव, सांस्कृतिक कार्य प्रकोष्ठ
देवकी नन्दन 'शांत'
उप महाप्रबन्धक (से.नि.), उ.प्र. पावर कार्पो. लि.
फोन : 0522-4017841/09935217841
e-mail : deokinandan@medhaj.com

35-सदस्य, सांस्कृतिक एवं संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
उदय भान पाण्डेय
मुख्य महाप्रबंधक, उ.प्र. पावर कार्पो. लि.
फोन : 0522-2393436/09415001459
e-mail : udaibhanp@yahoo.com

36-सदस्य, सांस्कृतिक एवं सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ
प्रभारी जानकीपुरम क्षेत्र
सुशील कुमार शर्मा
अपर निदेशक (से.नि.), प्रशि. एवं सेवायोजन, उ.प्र.
फोनः 0522-2735951/08765351190

37-सदस्य, सांस्कृतिक एवं संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
अशोक कुमार
अधि.निदेशक (से.नि.), उ.प्र.पावर ट्रांस. कार्पो. लि.
फोनः 0522-2780177/09794122946
e-mail : mehrotra_ak2006@yahoo.co.in

38-सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ
(राजेन्द्रनगर, मोतीनगर, आर्यनगर, ऐशबाग क्षेत्र)
विनोद चन्द्र गर्ग (वि.स.)
व्यापारी - चन्द्रा मेटल कम्पनी, लखनऊ
फोन : 0522-2339298/09415012307

39-सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ (विकास नगर क्षेत्र)
रामानन्द मिश्रा, उपनिदेशक (से.नि.), दूरदर्शन
फोनः 0522-4017161, 9415062778
e-mail : rnmisra48@gmail.com

40-सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ
(अलीगंज, प्रियदर्शिनी कॉलोनी, केशव नगर क्षेत्र)
श्री राजदेव स्वर्णकार
मुख्य प्रबंधक (से.नि.), सेन्ट्रल बैंक
फोनः 0522-4045984/09450374814
e-mail : rajdeo.swarnkar@yahoo.in

41-सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ (महानगर क्षेत्र)
श्री राजेन्द्र कुमार चुघ
वरिष्ठ वाणिज्य प्रबन्धक (निर्यात निगम)
फोनः 9450020659

42-सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ
गोमती नगर के दोनों ओर का क्षेत्र
आनन्द कुमार (वि.स.)
वरि. प्रबंधक, इंडियन ओवरसीज बैंक
फोनः 09236182770
e-mail : anandkumar2514@gmail.com

43-सचिव, वैकल्पिक चिकित्सा सदस्य, शिक्षा सहा. प्रकोष्ठ

डॉ. नरेन्द्र देव (वि.स.)
वरिष्ठ अधी.अभि. (से.नि.), सिंचाई विभाग, उ.प्र.
फोन : 0522-2356158/09451402349
e-mail : deonarendra740@gmail.com

44-सदस्य, वैकल्पिक चिकित्सा प्रकोष्ठ
सुरेश चन्द्र ब्रह्मचारी
संयुक्त निदेशक (से.नि.), भूतत्व एवं खनि.निदे., उ.प्र.
फोनः 0522-2710379/09415113453
e-mail : scbrahmachari@gmail.com

45-सदस्य, वैकल्पिक चिकित्सा प्रकोष्ठ
डॉ. सुशील कुमार मित्तल
आध्यात्मिक विकित्सक-रेकी ग्रैन्ड मास्टर
फोनः 08090664912
e-mail : er_sk_mittal@rediffmail.com

46-सचिव, पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ
पाल प्रवीण, अध्यक्ष (से.नि.), काशी ग्रामीण बैंक
फोनः 09919238189
e-mail : palpravin@rediffmail.com

47-सदस्य, पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ
राम बाबू गंगवार (वि.स.)
मुख्य अभि. (से.नि.), उ.प्र. पावर कार्पो. लि.
फोन : 0522-2355099/09415114707
e-mail : rbabugangwar@gmail.com

48-सदस्य, पर्यावरण संरक्षण एवं संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
अरुण कुमार (वि.स.)
महाप्रबन्धक (से.नि.), उ.प्र. जल विद्युत निगम लि.
फोन : 09839420999/09838203598
e-mail : arunksaxena1949@rediffmail.com

49-सदस्य, पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ
इन्द्र कुमार भारद्वाज (वि.स.)
उप महाप्रबंधक (से.नि.), उ.प्र. पावर कार्पो. लि.
फोनः 09415911702
e-mail : ikbhlkw@yahoo.co.in

50-सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
शिव नारायन अग्रवाल (वि.स.)
पूर्व सी.एम.डी., उ.प्र. जल विद्युत उत्पादन निगम लि.
फोन : 0522-2326000/09839022390/09415313364
e-mail : agarwalsn@rediffmail.com

51-सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
दीपक कुमार पंत
संयुक्त महाप्रबंधक (से.नि.), एच.एम.टी. लिमिटेड
फोनः 0522-2329819/09389325440/09335738317

52-सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
हरीश चन्दर
मुख्य अभियन्ता (से.नि.), उ.प्र.रा.वि. परिषद
फोनः 0522-4011541/09696670165

53-सदस्य संसाधन प्रबन्ध
इं. महेश चन्द्र निगम
सहा.अभि. वि./यॉं. (से.नि.) लो.नि.वि., उ.प्र.
फोन : 0522-2325716 /09335905126
e-mail : maheshnigam77@yahoo.com

54-सचिव, डे सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ
डॉ. श्रीराम सिंह
एसो. प्रोफेसर (से.नि.), जे.एन.पी.जी. कॉलेज
फोनः 0522-2745209/09415093606
e-mail : drsrs1946@yahoo.com

55-सदस्य, डे सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ
प्रदीप कुमार गोयल
व्यापारी (एक्मे इलेक्ट्रिकल एन्ड इन्डस्ट्रियल कं.)
फोन : 0522-4048090/09415025800
e-mail : pkgacme@gmail.com

56-सदस्य, डे सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ
ललित कुमार
जे.एम.टी., लेसा। फोनः 09455836176

57-सदस्य, डे सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ
डॉ. अमित कुमार सिंह
फिजियोथेरेपिस्ट (परास्नातक) फोनः 09565998001
e-mail : draksingh301280@yahoo.com

58-सचिव, प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें एवं सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ (निराला नगर क्षेत्र)
डॉ. छेदा लाल वर्मा
प्रोफेसर (से.नि.), बॉटनी विभाग, लखनऊ वि.वि.
फोनः 0522-2787872/09919960317
e-mail : dr.clverma@rediffmail.com

59-सदस्य, प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ
डॉ. यदुनाथ सिंह भदौरिया
निदेशक (से.नि.), नियोजन विभाग, उ.प्र.
फोनः 09450390052 e-mail : ysb40@yahoo.com

60-सदस्य, प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ
डॉ. भानु प्रकाश सिंह
प्रोफेसर (से.नि.), कृषि वि.वि., फैजाबाद
फोनः 09450766586 e-mail : bps2014@gmail.com

61-सदस्य, प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ

राजेन्द्र नाथ कालड़ा, कर्नल (से.नि.), भारतीय सेना
फोनः 0522-2440804/09335815898
e-mail : rnkalraconsultant@gmail.com

62-सदस्य, प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ
प्रो. काशी राम कनौजिया
निदेशक (से.नि.), कृषि एवं प्रौद्यो. वि.वि., पंतनगर
फोनः 09411159498
e-mail : kashiramkanaujia@yahoo.com

63-सदस्य, प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ
सुभाष मणि तिवारी
अग्निशमन अधिकारी (से.नि.), उ.प्र. पावर कॉर्पो. लि.
फोनः 09415086952/07054065111
e-mail : smt1946@yahoo.co.in

64-सदस्य, प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें प्रकोष्ठ
युगल किशोर गुप्त (वि.स.)
अधी.अभि. (से.नि.), उ.प्र. पावर कॉर्पो. लि.
फोन : 08756125555
e-mail : yugalbina@yahoo.co.in

65-सदस्य, भावना रसोई प्रबंधन प्रकोष्ठ
नरेन्द्र कुमार मित्तल
प्रमुख अभि. (से.नि.), लो.नि.वि., उ.प्र.
फोन : 0522-2746862/09415089151

प्रबंधकारिणी की महिला सदस्य

66-सचिव, महिला सशक्तिकरण एवं सदस्य, शिक्षा सहा. प्रकोष्ठ
श्रीमती अर्चना गोयल (वि.स.)
फोन : 0522-2329439/09389193715

67-सदस्य, महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ
श्रीमती श्याम बाला सिंह (वि.स.)
फोनः 0522-2739439/09565945179

68-सदस्य, महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ
श्रीमती वीना सक्सेना। फोनः 09415103378

69-सदस्य, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ
श्रीमती आशा गोयल
फोन : 0522-2338900/07753055111

70-सह-सम्पादक, भावना प्रकाशन
सदस्य, प्रशिक्षण गोष्ठियाँ एवं कार्यशालायें
डॉ. अवनीश अग्रवाल
प्रोफेसर, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
फोनः 09451244456
e-mail: dravneesh@yahoo.com

71-सदस्य प्रशिक्षण गोष्ठियां एवं कार्यशालायें
डॉ. अंजली गुप्ता, मनोचिकित्सक, नूर मंजिल, लखनऊ
फोनः 09935224997
e-mail: njl_omer@yahoo.co.in

72-सदस्य, महिला सशक्तिकरण, सांस्कृतिक कार्य प्रकोष्ठ
श्रीमती रेखा मित्तल, फोन : 0522-2746862/09415089151

73-सदस्य, महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ
श्रीमती रंजना मिश्रा
फोनः 0522-2738622/09415759280
e-mail : ranjanamisra50@gmail.com

74-सदस्य, अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ
श्रीमती सरोजिनी सिंह (वि.स.)
शिक्षिका (से.नि.), शिक्षा विभाग, म.प्र.
फोनः 09415058975
e-mail : s12soji@yahoo.co.in

भावना की शाखायें

75-अध्यक्ष, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र शाखा
सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
अनिल कुमार शर्मा (वि.स.)
महानिदेशक (उत्तर क्षेत्र) के.लो.नि.वि.
फोन : 09868525057/09794427788
e-mail : aksharmacpwd@yahoo.com

76-सचिव, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र शाखा
अमरेश चन्द्र माथुर
उप महाप्रबंधक (से.नि.), स्टील अथॉ. ऑफ़ इन्डिया लि.
फोन : 0120-2761874/09868342451
e-mail : amresh.mathur1@gmail.com

77-अध्यक्ष, सोनभद्र शाखा
देवी दयाल गुप्ता, (व्यापारी)
फोन : 05445-262392/09415323335-7

78-सचिव, सोनभद्र शाखा
डॉ. उदय नारायण सिंह, (होम्योपैथी चिकित्सक)
फोन : 05445-262043/09936181902

79-अध्यक्ष, उन्नाव शाखा
कमला शंकर अवस्थी (एडवोकेट)
फोन : 0515-2823124/09695639563;
e-mail : n.awasthi@nic.co.in

80-सचिव, उन्नाव शाखा
शिव शंकर प्रसाद शुक्ल
अधि.अभि., उ.प्र. पावर कार्पो.
फोन : 0515-2820614, 09415058113
e-mail : sspshukla123@gmail.com